# यशायाह 53 पर उपदेश

**SERMONS ON ISAIAH 53**

(Hindi)

**डॉ. आर. एल. हिमर्स, जूनियर द्वारा।**

**वेबसाइट:** www.sermonsfortheworld.com

**ईमेल:** rlhymersjr@sbcglobal.net

"यशायाह **53** पर डॉ. हिमर्स के उपदेश सबसे अच्छे उपदेशों में से हैं जिन्हें मैंने कभी पढ़ा है, या प्रचार करते हुए सुना है। धर्मत्याग के इस युग में, वे दृढ़ता से मसीह और सुसमाचार में केंद्रित हैं। ये उपदेश किसी भी व्यक्ति के लिए जो इन्हें पढ़ता है बहुत बड़ा आशीर्वाद होंगे, चाहे ईसाई हो या नहीं। उन्हें पढ़ा जाना चाहिए, प्रचारित किया जाना चाहिए और दुनिया भर में भेजा जाना चाहिए। परमेश्वर ऐसा करने में आपकी मदद करें।"

डॉ. क्रिस्टोफर एल. कैगन

ये उपदेश पांडुलिपियाँ कॉपीराइट नहीं हैं। आप डॉ. हिमर्स की अनुमति के बिना उन्हें प्रिंट कर सकते हैं, उनका प्रचार कर सकते हैं और इस फ़ाइल को दूसरों को ईमेल कर सकते हैं। हम आपको ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं!

यदि ये उपदेश आपको आशीर्वाद देते हैं, तो डॉ. हिमर्स को एक ई-मेल भेजें और उन्हें बताएं, लेकिन हमेशा यह शामिल करें कि आप किस देश से लिख रहे हैं। डॉ. हिमर्स का ई-मेल यहां है rlhymersjr@sbcglobal.net. आप डॉ. हिमर्स को किसी भी भाषा में लिख सकते हैं, लेकिन यदि संभव हो तो अंग्रेजी में लिखें। यदि आप डॉ. हिमर्स को डाक द्वारा लिखना चाहते हैं, तो उनका पता है P.O. Box 15308, Los Angeles, CA 90015.

आप डॉ. हिमर्स के सभी उपदेश इंटरनेट पर पढ़ सकते हैं www.sermonsfortheworld.com पर। “हिन्दी में उपदेश” पर क्लिक करें।

# विषयसूची


| उपदेश | पृष्ठ |
|---|---|
| प्रभु के सेवक की पीड़ा और प्रसन्नता! यशायाह, ५२:१३.१५ | एक |
| अस्वीकार किया हुआ समाचार, ५३:१ | दस |
| मसीह — समुदाय द्वारा अस्वीकार किया हुआ, ५३:१.२ | अठारह |
| मसीह — सर्वत्र अमूल्यांकन किया हुआ, ५३:३ | सत्ताईस |
| मसीह की पीड़ा — सही और गलत, ५३:४ | छत्तीस |
| यीशु जख्मी, घायल और पीटा गया?, ५३:५ | तैंतालीस |
| सार्वलौकिक पाप, विशेष पाप, और पाप के उपाय, ५३:६ | पचास |
| मेम्नें की चुप्पी ५३:७ | सत्तावन |
| प्रायश्चित का विवरण, ५३:८ | चौंसठ |
| मसीह के दफनाने का विरोधाभास, ५३:९ | बहत्तर |
| प्रायश्चित! ५३:१० | उनासी |
| उद्धारक की जीत! ५३:१० | अठासी |
| मसीह से मिली हुई — तृप्ति और धर्मी ठहराना, ५३:११ | छियानवे |
| मसीह की महिमा का स्तोत्र, ५३:१२ | एक सौ पांच |
| प्रभु यीशु में साधारण विश्वास रखना, ५३:३ | एक सौ बारह |

# प्रभु के सेवक की पीड़ा और प्रसन्नता!

(यशायाह ५३ पर धार्मिक प्रवचन क्रमांक १)

**THE SUFFERING AND TRIUMPH OF GODS SERVANT!**

**(SERMON NUMBER 1 ON ISAIAH 53)**

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

लोस एंजलिस के बप्तीस टबरनेकल में प्रभु के दिन की सुबह, २४ फरवरी, २०१३ को दिया हुआ धार्मिक प्रवचन
A sermon preached at the Baptist Tabernacle of Los Angeles
Lord's Day Morning, 24 February, 2013

> ''देखो, मेरा दास बुद्धि से काम करेगा, वह ऊँचा, महान् और अति महान् हो जाएगा। जैसे बहुत से लोग उसे देखकर चकित हुए क्योंकि उसका रूप यहाँ तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी, वैसे ही वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा और उसको देखकर राजा शान्त रहेंगे, क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनने में भी नहीं आया, और ऐसी बात उनकी समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न थी'' (यशायाह ५२:१३–१५)।

कृपया, आपकी बाइबल इस पद पर खुली रखें। डॉ. जॉन गिल और आधुनिक भाष्यकार के ''विशाल बहुमत'' अनुसार भी यह पद पाठ ५२ के बजाय, पाठ ५३ के साथ शामिल किया जाना चाहिए (फ्रैंक इ. गेबेलियन; डी.डी., ***दि एक्सपोजीटर बाइबल कमेन्ट्री, वर्णनात्मक टिप्पणी बाइबल*** रिजेंसी रेफरन्स लायब्रेरी, १९८६, भाग ६, पृष्ठ ३००)।

संपूर्ण वाक्यखण्ड, पद १३ से पाठ ५३ के पद १२ तक, प्रभु के ''पीड़ित सेवक'' का संदर्भ देता है । मेथ्यू हेन्री ने कहा,

> यह भविष्यवाणी, जो यहाँ शुरू होती है और अगले पाठ के अंत तक जारी रहती है, अत्यंत सरलता से जैसे यीशु मसीह के लिए हो, दर्शाता है; प्राचीन यहूदीयों ने इसे मसीह (Messiah) की तरह समझा, यद्यपि आधुनिक (रब्बी) इसे दूषित करने की बड़ी पीड़ा उठाते है ... परंतु फिल्लिप्पुस, जिसने इसीलिए (इस पद से) उस वन्ध्य को मसीह का प्रचार किया और इस वाद–विवाद को मिटाकर पुष्टि की कि ''यह भविष्यवक्ता मसीह के लिए बोलते है'' उनके बारे में ही और किसी दूसरे आदमी के बारे में नहीं, प्रेरितो ८:३४, ३५ (***मेथ्यू हेन्रीस कमेन्ट्री ओन द व्होल बाइबल, संपूर्ण बाइबल पर मेथ्यू हेन्री की टिप्पणी,*** हेन्ड्रीकसन प्रकाशक, १९९६ में पुर्नमुद्रित हुआ, भाग ४, पृष्ठ २३५)।

प्राचीन यहूदी तार्गम (Targum) कहते है कि यह मसीह को संदर्भ करता है, जैसे पुरातन समय के रब्बियों एबेन ऐजरा और एल्शेक ने किया, (Aben Ezra & Alshech) (जॉन गिल, डी.डी., ***एन एक्सपोझीशन टु द ओल्ड टेस्टामेन्ट,*** द बेपटिस्ट स्टैंडर्ड बेरर, १९८९ में पुर्नमुद्रित, भाग १, पृष्ठ ३०९)।

इसी प्रकार, पूरे इतिहास में मसीही भाष्यकारों ने इस वाक्यखण्ड को प्रभु यीशु मसीह की भविष्यवाणी के रूप में ही देखा है। स्पर्जन ने कहा,

> वे और किसी के लिए कैसे कह सकते थे? और किसे भविष्यवक्ताओ ने संदर्भ किया होता? अगर नासरत का व्यक्ति, प्रभु का पुत्र, इन तीन पदो में सही प्रकट नहीं होता, तो वे मध्यरात्रि के समान अंधेरे में रहते। हम इस पद के हर एक शब्द को एक भी पल के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के ऊपर लागू करने में नहीं हिचकिचाते, (सी. एच. स्पर्जन, ''द श्योर ट्रायम्फ ऑफ द क्रूसीफाइड वन, ''क्रूस पर चढ़ाए हुए की निश्चित विजय (प्रसन्नता)'' ***ध मेट्रोपोलीटन टबरनेकल पुलपिट,*** पिलग्रीम प्रकाशन, १९७१ में पुर्नमुद्रित, भाग XXI, पृष्ठ २४१)।

जैसे मेथ्यू हेन्री द्वारा पहले ही दर्शाया गया था, सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस ने कहा कि पवित्रशास्त्र का यह वाक्यखण्ड भविष्यवाणी में मसीह की पीड़ा बतलाता है।

> ''इस पर खोजे ने फिलिप्पुस से पूछा, मैं तुझ से विनती करता हूँ, यह बता कि भविष्यवक्ता यह किसके विषय में कहता है, अपने या किसी दूसरे के विषय में? तब फिलिप्पुस ने अपना मुँह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया'' (प्रेरितो ८:३४–३५)।

हम प्राचीन तार्गम (Targum) पुरातनकाल के रब्बी, सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस, और युगों के मसीही भाष्यकार से अधिक बेहतर नहीं कर सकते। हमारे पाठ का हर एक शब्द मसीह (Messiah) प्रभु यीशु मसीह की भविष्यवाणी है

## १. पहला, हम मसीह की प्रभु के लिये सेवा देखते है।

यह प्रभु पिता है जो पद १३ के वचन कहते है,

> ''देखो, मेरा दास बुद्धि से काम करेगा, वह ऊँचा, महान् और अति महान् हो जाएगा'' (यशायाह ५२:१३)।

परमेश्वर हमें उनके ''दास'' को देखने को कहते है। जब यीशु नीचे धरती पर आते है, वो

> ''वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और *दास* का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया'' (फिलिप्पियों २:७)।

धरती पर परमेश्वर के दास की तरह, मसीह ने विवेक सहित व्यवहार किया, और बुद्धिमता से काम किया। जो भी यीशु ने धरती पर उनकी सेवकाई के दौरान कहा और किया, वो सब बड़ी चतुराई से किया गया था। मंदिर में छोटे बालक के रूप में, रब्बी उनकी चतुराई पर विस्मित थे। बाद में, फरीसी और सदूकी उन्हें जवाब नहीं दे सके, और पीलातुस, रोमी प्रधान का मुँह बंद हो गया था जब वे बोले।

फिर हमारा पाठ परमेश्वर के सेवक के संदर्भ में कहता है,

> ''वह ऊँचा, महान् और अति महान् हो जाएगा''
> (यशायाह ५२:१३)।

आधुनिक अंग्रेजी में ''उठाया'' ''ऊँचा किया, और अति महान्'' शब्द में भेद किया जा सकता है। डॉ. एडवर्ड जे. योन्ग ने दिखाया कि, ''मसीह के आरोहण का स्मरण किए बिना इन शब्दों को पढ़ना नामुमकिन है फिलिप्पियों २:९–११ और प्रेरितो २:३३ '' (एडवर्ड जे. योन्ग, पीएच.डी., ***द बुक ऑफ यशायाह, यशायाह की किताब,*** एरडमान्स, १९७२, भाग ३, पृष्ठ ३३६)।

> ''इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है''
> (फिलिप्पियों २:९)।

> ''इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह है। इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से ... जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी'' (प्रेरितो २:३२–३३)।

> ''देखो, मेरा दास बुद्धि से काम करेगा, वह *ऊँचा, महान् और अति महान्* हो जाएगा'' (यशायाह ५२:१३)।

ऊँचा किया – ''उठाया''। Extolled – ''ऊँचा उठाया''। बहुत ऊँचा – ''सर्वोच्च पद में''। यहाँ वे शब्द है जो मसीह के आरोहित होने के पदो को प्रतिबिम्ब करते हैं। वे मृत्यु से उठते है! वे स्वर्ग में अधिरोहण में ऊपर उठाए गयें! वे अब प्रभु के दाहिने हाथ विराजमान हैं! ऊँचा किया – ''उठाया''। स्तुति करना ''ऊँचा उठाना''। बहुत ऊँचा – स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने हाथ पर भी! आमीन!

> ऊँचा उठाना था उनको मरने तक
> ''यह पूरा हुआ'', उनकी पुकार थी;
> अब स्वर्ग में सबसे ऊँचे किए;
> हल्लिलूय्याह! कैसे उद्धारक!
> (''हल्लिलूय्याह, कैसे उद्धारक!'' फिलिप पी. ब्लीस द्वारा,
> १८३८–१८७६)।

> ''देखो, मेरा दास बुद्धि से काम करेगा, वह ऊँचा, महान् और अति महान् हो जाएगा'' (यशायाह ५२:१३)।

यीशु है, और सदा रहेंगे, प्रभु पिता के दास – प्रभु पुत्र – मृत्यु से जिलाए, स्वर्ग में ऊँचा उठाए हुए – पिता के दाहिने हाथ पर बैठे हुए! हल्लिलूय्याह! कैसे उद्धारक!

## २. दूसरा, पाप के लिये हम मसीह का त्याग देखते है।

कृपया, पद १४ जोर से पढ़िए।

> ''जैसे बहुत से लोग उसे देखकर (चकित) हुए, क्योंकि उसका रूप यहाँ तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी'' (यशायाह ५२:१४)।

डो. योन्ग ने कहा कि वे जिन्होंने '' दास की भयानक कुरूपता देखी वे भय द्वारा ड़रे और त्रस्त (हुए होंगे) ... उनकी कुरूपता इतनी अधिक (होगी) की वे और ज्यादा मनुष्य की तरह नहीं दिखते थे ... उनका आकार इतना विचित्र (कुरूप) हो गया था कि वे और ज्यादा आदमी की तरह नहीं लगते थे। यह एकदम प्रबल तरीके से कहने का तरीका था कि उनकी पीड़ा कितनी भारी थी'' (ibid, पृपृष्ठ ३३७–३३८)।

यीशु उनकी पीड़ा के समय भयानकता से कुरूप हो गये थे। क्रूस पर चढ़ाने की अगली रात को वे ''पीड़ा में'' थे,

> ''उसका पसीना माना लहू की बड़ी बड़ी बूँदो के समान भूमि पर गिर रहा था'' (लूका २२:४४)।

यह उनको पकड़ने से *पहले* था। वहाँ गेतसमनी के अन्धेरे में, आपके पाप का न्याय मसीह पर आना शुरू हुआ। जब सिपाही उन्हें, पकड़ने आए वे पहले से ही खून भरे पसीने में भीगे हुए थे।

फिर वे उन्हें ले गए और उनको चेहरे पर मारा। दूसरे स्थल पर, भविष्यवक्ता यशायाह हमें प्रकट करते हैं कि पीड़ायुक्त दास ने क्या कहा,

> ''मैंने मारनेवालों को अपनी पीठ और गलमोछ नोचनेवालो की ओर अपने गाल किए; अपमानित होने और उनके थूकने से मैंने मुँह न छिपाया'' (यशायाह ५०:६)।

लूका ने कहा, ''उन्होंने उसे मुँह पर मारा'' (लूका २२:६४)। मरकुस ने कहा कि पिलातुस ने ''उसको कोड़े लगवाए'' (मरकुस १५:१५)। यूहन्ना ने कहा,

> ''इस पर पिलातुस ने यीशु को कोड़े लगवाए। सिपाहियों ने कांटो का मुकुट (गूँथकर) उसके सिर पर रखा, और उसके बैंजनी वस्त्र पहिनाया, और उसके पास आ–आकर कहने लगे, हे यहूदियों के राजा, प्रणाम। और उसे थप्पड़ भी मारे'' (यूहन्ना १९:१–३)।

फिर उन्होंने उनके हाथ और पैर कील से क्रूस पर ठोके। जैसे डो. योन्ग ने इसे बताया था, ''उनका आकार इतना कुरूप हो गया था कि वो अब और ज्यादा मनुष्य की तरह नहीं लगता था'' (ibid, पृष्ठ ३३८)।

> ''जैसे बहुत से लोग उसे देखकर (चकित) हुए, क्योंकि उसका रूप यहाँ तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी'' (यशायाह ५२:१४)।

ज्यादातर आधुनिक चित्र यथार्थ के इतने करीबी नहीं है जितना मेल गिब्सन का ''द पेशन ऑफ द क्राइस्ट'' ''मसीह का उत्साह'' की तरह, जिसमें उनके द्वारा कोड़े मारने, पीटने और उनको क्रूस पर चढ़ाने के बाद मसीह की अवस्था को चित्रित किया गया है।

***द स्कोफिल्ड स्टडी बाइबल*** कहती है इस पद के बारे में, ''अक्षरश: खण्डन करना भययुक्त है : 'मनुष्य के आकार से उनका आकार इतना बिगाड़ा हुआ था कि उनका रूप मनुष्य के पुत्र जैसा नहीं था' — यह कि — इंसान जैसा नहीं — मत्ती २६ में निर्दयता के असर का वर्णन किया गया था...''। जोसेफ हार्ट (१७१२—१७६८) द्वारा दिये भक्तिगीत को सुनिए,

मुकुट से उनकी कनपटी जख्मी और लहूलुहान हुई,
हर हिस्से से लहू की धारा बही;
उनकी पीठ़ भारी कोड़ो से चीर दी गई,
परन्तु धारदार भाले ने उनके ह्रदय को चीरा।

उठाए हुए काष्ठ पर वस्त्रहीन लटकाए कील से,
धरती और ऊपर स्वर्ग में खुले हुए,
जख्म और लहू का प्रदर्शन,
जख्मी प्रेम का दु:खद प्रदर्शन!
(''उनकी उत्तेजना'' जोसेफ हार्ट द्वारा १७१२—१७६८,
''यह मध्यरात्रि और जैतून पर्वत पर'' की तर्ज पर)।

और क्यों, प्यारे उद्धारक,
मुझे कहो क्यों आप क्यों लहू भरी पीड़ा में रहे?
कौन सा शक्तिशाली लक्ष्य आपको लेकर चला?
लक्ष्य सरल है — यह सब प्रेम वश किया!
(''गेतसमनी, ओ, जैतून — वृक्ष!'' जोसेफ हार्ट द्वारा १७१२—१७६८,
''यह मध्यरात्रि और जैतून पर्वत पर'' की तर्ज पर)।

क्यों, प्यारे उद्धारक, मुझे बताएं क्यों आपका रूप ''किसी आदमी से बढ़कर, और (आपकी) दिखावट मनुष्य के पुत्र की तुलना में इतनी बिगड़ी हुई थी''? पाठ ५३ के पद १२ के अन्त में जवाब दिया गया है, ''उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया'' (यशायाह ५३:१२)। यह है मसीह का बलिदान आपके पापों के लिये, निर्धारित बलिदान — यीशु आपके पापो के लिये, आपकी जगह — क्रूस पर तड़पते और मरते है! इस

प्रकार हम मसीह की प्रभु के प्रति सेवा को देखते है। इस प्रकार हम आपके पापो का दण्ड चुकाने के लिये मसीह का बलिदान देखते है।

### ३. तीसरा, हम देखते है मसीह की मुक्ति व्यवहार में लाई गयी।

कृपया खड़े रहिए और यशायाह ५२:१५ जोर से पढ़िए।

> ''वैसे ही वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा और उसको देखकर राजा शान्त रहेंगे, क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनने में भी नहीं आया, और ऐसी बात उनकी समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न थी''
> (यशायाह ५२:१५)।

आप बैठ सकते हैं। डो. योन्ग ने कहा कि यहाँ, इस पद में, पद १४ में वर्णित मसीह का बलिदान और पीड़ा भोगने को समझाया गया और व्यवहारिक रूप बताया गया है,

> भविष्यवक्ता स्पष्ट करते है क्यों वे (मसीह) कुरूप हुए थे। इसलिये ... कुरूपता की इस अवस्था में, ''वो बहुत से राष्ट्रो पर छिड़काव करेगा'' एक जो कुरूप है, वह दास जो दूसरों के लिये कुछ करता है, उसमें वह शुद्धता के संस्कार का प्रयोग करता है। उनकी कुरूपता (उनकी पीड़ा में) समाहित ... अवस्था थी जिसमें वे स्वयं राष्ट्रो को शुद्ध करेंगे। क्रियापद ''वह छिड़काव करेगा'' (कहा गया है) पानी, या लहू से छिड़ककर .. .. शुद्ध करने के लिए... यह काम है (मसीह का याजक के रूप में) जो तय किया गया है, और इस काम का मकसद है दूसरों को शुद्धता और पवित्रता में लाना ... वे स्वयं याजक की रीति पर पानी और लहू छिड़केंगे और इस प्रकार बहुत से राष्ट्रों को शुद्ध करेंगे। वे क्लेश उठाने वाले के रूप में यह करते है, जिसकी पीड़ा भोगने का लक्ष्य है ... उनकी इस अवस्था में वे जो उनको देखते है शुद्धता और गहरा बदलाव उत्पन्न हो सके (ibid, पृपृष्ठ ३३८–३३९)।

इस भविष्यवाणी की अक्षरश: परिपूर्णता में, मसीह के सुसमाचार के प्रचार ने यहूदियों के बन्धन तोड़ दिये और यह एक सर्व सामान्य धर्म बन गया। पहली सदी से, ''अनेक राष्ट्रों'' में धर्मप्रचार (सुसमाचार प्रचार) किया गया और, सारे विश्व से लोग यीशु के लहू द्वारा शुद्ध किए गए, उन्हें मसीह यीशु में मुक्ति देते हुए, उत्पन्न करते हुए, जैसे डो. योन्ग ने कहा, ''एक गहरा बदलाव उनकी ओर निहारने वालों के भीतर''। यद्यपि विश्व सारे राष्ट्रो के राजा उद्धार प्राप्त नहीं थे, फिर भी जैसे मसीहत पूरे विश्व में फैली, वे कम से कम ''अपना मुँह उनके सामने बंद रखते है'', और उनके विरूद्ध नहीं बोलनेवाले सामान्य मसीही बने रहते हैं। इन दिनों में भी, रानी एलीजाबेथ ।।, अपना मुँह ''उन पर'' बंद रखती है और वेस्टमीन्स्टर एबे में जब वहाँ मसीही सभा होती है चुपचाप से उनके सामने सत्कार में प्रणाम करती है। पश्चिमी विश्व में, और पूर्व में, बहुत से दूसरे सम्राट कम से कम बाहरी सत्कार देते है, और उनमें से बहुत, जैसे रानी विकटोरिया, ने

बाहरी सत्कार देने से बढ़कर बहुत कुछ किया। हकीकत में, महाराजा कोन्स्टेटाइन ने मसीहत के प्रारंभ के वर्षों में जैसा किया,ऐसा दूसरे बहुतों ने किया।

> ''क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनने में भी नहीं आया, और ऐसी बात उनकी समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न थी'' (यशायाह ५२:१५)।

जैसे भविष्यवक्ता द्वारा यहाँ पहले कहा गया था, मसीह का सुसमाचार विश्व के राष्ट्रों में फैल गया है,

> ''वैसे ही वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा''
> (यशायाह ५२:१५)।

यूनाइटेड स्टैट के राष्ट्रपति भी सिर्फ नाम से मसीही है, वह कलीसिया में कदाचित उनका मस्तक झुकाते हैं और ''(अपना) मुँह उनके सामने'' बंद रखते है।

परन्तु मुझे कहना ही चाहिए कि यह अद्‌भुत भविष्यवाणी क्या यूरोप, यूनाइटेड किंगडम और अमेरिका के बारे में कुछ ज्यादा नहीं कहती जैसा इसने एक बार किया था। पश्चिम की कलीसिया व्याकुलता और उपद्रव में है, कारण बाइबल पर ''उदारवादियों'' के आक्रमक हमले और फिनी द्वारा सुसमाचार को दोषयुक्त सुनाने के द्वारा और उसकी गुमराह करनेवाली ''निर्णायकता'' की अनेक पद्धति के चलते कलीसियाओं और आधुनिक अनुयायियों के कमजोर होने में छिपा है। फिर भी, विशाल तीसरे विश्व में, शक्तिशाली जागृतता और पुन:जीवन, जो कभी एक बार पश्चिम के स्वधर्म त्याग और कमजोर हुई कलीसियाओं में देखा गया, अभी भी फल फूल रहा है। जब हम चीन, दक्षिणीपूर्व एशिया, भारत, और विश्व के दूसरे भागों में, उनके सुसमाचार प्रचार करनेवाली कलीसियाओं की बढ़ती जाने वाली संख्या के लेख पढ़ते हैं, हमारे मन को प्रसन्नता होती है! हाँ, वे कई बार सताए जाते हैं, परन्तु जैसे टेरटुलीयन (Tertullian) ने दूसरी सदी में कहा, ''शहीद का लहू कलीसिया का बीज है''। और आज यह समस्त तीसरे विश्व के देशों के लिए सच है। जब अमेरिका, और सामान्य तौर पर पश्चिम में, उनके मसीही अपने स्तर से गिरते है, और मानवीय, बनावटी आध्यात्मिक संशय में पिघलते है, फिर भी स्पर्जन ने जैसा कि भविष्यवाणी की,

> यीशु को *करना चाहिए* ... छिड़काव सिर्फ यहूदियों पर नहीं, परन्तु हर कहीं विश्व की अन्य जातियों पर ... सारी भूमि को उसकी सुननी चाहिए, और जैसे वह घास के ढेर पर औंस की बूंदो की तरह आता हो ऐसा महसूस करना चाहिए। सुदूर की धुंधली जातियां और अस्त होते सूर्य की भूमि के रहनेवाले लोग आपकी वचन को सुनेंगे और इससे तृप्त होंगे... आपके अनुग्रहित वचन से बहुत राष्ट्रो में आप छिड़काव करेंगे (ibid, पृष्ठ २४८)।

स्पर्जन का ''भविष्यसंबंधी'' संदेश आज भी अधिक सच है जो उन्होंने सौ से भी ज्यादा वर्ष पहले कहे थे। और हम आनंद मनाते हैं कि ऐसा ही होता है! आमीन!

यह वचन पूरी तरह से परिपूर्ण नहीं हुआ। परन्तु यह होगा — क्योंकि परमेश्वर के मुख से निकला वचन है — भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा, जिन्होंने कहा,

''जाति जाति तेरे पास प्रकाश के लिये आएँगे''
(यशायाह ६०:३)।

''जाति जाति की धन – सम्पति तुझ को मिलेगी''
(यशायाह ६०:५)।

''देखो, ये दूर से आएँगे, और ये उत्तर और पश्चिम से और सीनियों के देश से आएंगे'' (यशायाह ४९:१२)।

जेम्स हडसन टेयलर, चीन के पहले के धर्म प्रचारक, ने कहा कि ''सीनीयों'' (Sinim) चीन की भूमि थी, जैसे ***द स्कोफिल्ड स्टडी बाइबल*** उसकी यशायाह ४९:१२ की टिप्पणी पर कहता है। हम टेयलर और स्कोफिल्ड की टिप्पणी के साथ असहमत कैसे हो सकते है जब हम यह आज हमारी आँखो के सामने चीन में होते हुए देखते है? अवश्य यह सच है, किंतु व्यवहार में यह बहुत कम है! पीपल्स रिपब्लीक चीन में हर घंटे में हजारों लोग मसीहत में परिवर्तित होते है, और अनेक सुदूर देशों में भी, और हम आनन्दित है कि ऐसा होता है!

जैसे अमेरिका तीन हजार असहाय बच्चों की हर दिन गर्भपात द्वारा हत्या करता है और यहां हजारो की संख्या में कलीसिया बन्द होती जाती है, फिर भी उन दूर के देशों में मसीह का काम बढ़ रहा है, और तौभी बढ़ेगा! प्रभु उनको और ज्यादा परिवर्तन दे! प्रभु उनको अनुग्रह दे कि जो लोग मसीह को जानते है, और उनके नाम के लिये दुख उठाते हैं, जल्द ही मसीह के दोबारा आने से राष्ट्रो में प्रसन्नता फैले!

परन्तु मैं *आपसे* इस सुबह पूछता हूँ, क्या *आप* मसीह को जानते हैं? क्या *आपने* उनको विश्वास द्वारा देखा है, जो *आपके* पापो का दण्ड चुकाने के लिए 'किसी भी आदमी की तुलना में इतने कुरूप किए गये, – हाँ *आपके* लिये! क्या उन्होंने अपना लहू *आपके* पाप पर छिड़का है, और क्या स्वर्ग में प्रभु की किताब में यह दर्ज है? क्या *आप* प्रभु के मेम्ने के लहू द्वारा शुद्ध हुए हैं, जो जगत के पाप उठा ले गया? और, अगर नहीं, तो क्या आप 'अपना मुंह बंद' उनकी मौजूदगी में रखेंगे, और यीशु को प्रणाम करेंगे, और उन्हें आपके *अपने* प्रभु और उद्धारक की तरह ग्रहण करेंगे? और क्या आप ऐसा अभी करेंगे?''

कृपया, करके खड़े हो जाइए और आपके गीत के पर्चे का गीत क्रमांक सात गाइए।

इंसानी अपराध का अति विशाल बोझ
उद्धारक पर लादा गया था;
दु:ख पहिनावे की तरह,
उनको पापियों के लिये सजाया,
पापियों के लिये सजाया!

और मृत्यु की अति भयंकर पीड़ा में
वे रोये, उन्होंने मेरे लिये प्रार्थना की;
मेरी अपराधी आत्मा को प्रेम और लज्जित किया
जब काठ (क्रूस) पर कील से ठोके गये
जब काठ (क्रूस) पर कील से ठोके गये।

ओह अद्‌भुत प्रेम! इंसानी जुबान
की पहुँच से आगे का प्रेम;
प्रेम जो विषय होना चाहिए
सदा रहनेवाले गीत का सदा रहनेवाले गीत का
सदा रहनेवाले गीत का सदा रहनेवाले गीत का।
(''पीड़ा में प्रेम'' विलीयम विलीयम्स द्वारा १७५९;
''मेजेस्टीक स्वीटनेस सीट्स एन्थ्रोन्ड'' की तर्ज पर)।

अगर आपको हमारे साथ यीशु का भरोसा करने और मसीही बनने के बारे में बात करनी है तो, कृपया, इसी समय सभागृह के पीछे जाइए। डॉ. कैगन आपको शान्त जगह ले जाएंगे जहाँ हम बात कर सकते है। कृपया करके अभी जाइए। आमीन।

## रूपरेखा

# प्रभु के सेवक की पीड़ा और प्रसन्नता!

(यशायाह ५३ पर धार्मिक प्रवचन क्रमांक १)

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा

''देखो, मेरा दास बुद्धि से काम करेगा, वह ऊँचा, महान् और अति महान् हो जाएगा। जैसे बहुत से लोग उसे देखकर चकित हुए क्योंकि उसके रूप यहाँ तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी, वैसे ही वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा और उसको देखकर राजा शान्त रहेंगे, क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनने में भी नहीं आया, और ऐसी बात उनकी समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न थी'' (यशायाह ५२:१३–१५)।

(प्रेरितो ८:३४–३५)

१. पहला, हम मसीह की प्रभु के लिये सेवा देखते है, यशायाह ५२:१३; फिलिप्पियों २:७; फिलिप्पियों २:९; प्रेरितो २:३२–३३।

२. दूसरा, हम पाप के लिए मसीह का त्याग देखते है, यशायाह ५२:१४; लूका २२:४४; यशायाह ५०:६; लूका २२:६४; मरकुस १५:१५; यूहन्ना १९:१–३; यशायाह ५३:१२।

३. तीसरा, हम देखते है मसीह की मुक्ति को व्यवहार में लाना यशायाह ५२:१५; ६०:३, ५; ४९:१२।

# अस्वीकार किया हुआ समाचार

(यशायाह ५३ पर धार्मिक प्रवचन क्रमांक २)

**THE REJECTED REPORT**

**(SERMON NUMBER 2 ON ISAIAH 53)**

डो. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

लोस एंजलिस के बप्तीस टबरनेकल में प्रभु के दिन की
सुबह, ३ मार्च, २०१३ को दिया हुआ धार्मिक प्रवचन
A sermon preached at the Baptist Tabernacle of Los Angeles
Lord's Day Morning, March 3, 2013

''जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट किया?'' (यशायाह ५३:१)।

यशायाह मसीह के सुसमाचार की बात करता है। पिछले रविवार मैंने पाठ ५२ के आखरी तीन पदों पर से प्रचार किया, जहाँ भविष्यवक्ता पहले से यीशु की पीड़ा के बारे में कहते है, जिसका बाहरी रूप, ''यहाँ तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी'' (यशायाह ५२:१४)। यह यीशु का चित्र है, मारा हुआ और हमारे पापो के लिये क्रूस पर चढ़ाया हुआ, फिर मृत्यु से जिलाया हुआ, ''ऊँचा, महान् और अति महान् ...'' (यशायाह ५२:१३)। परंतु अब, हमारे पाठ में, भविष्यवक्ता इस सच्चाई पर विलाप करता है, कि उस सुसमाचार के संदेश का थोड़े लोग विश्वास करेंगे।

डो. एडवर्ड जे योन्ग पुरानी नियमावली के विद्धान, सहपाठी और मेरे पहले के याजक डो. तिमोथी लिन के मित्र थे। हमारे पाठ पर संभाषण करते हुए,

> ''जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया?
> और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट किया?''

डो. योन्ग ने कहा कि यह ''प्रश्न से अधिक आर्तनाद है। यह नकारात्मक जवाब नहीं मांगता, परंतु यह विश्व में सच्चे विश्वासियों (संख्या में थोड़े) का ध्यान आकर्षित करने के लिए बनाया गया है ... भविष्यवक्ता उनके लोगो का प्रतिनिधि (है), बोलते और हताशा व्यक्त करते है कि इतने कम विश्वासी हैं'' (एडवर्ड जे. योन्ग, पीएच.डी., ***द बुक ऑफ यशायाह, यशायाह की किताब,*** विलियम बी. एरडमान्स प्रकाशक कम्पनी, १९७२, भाग ३, पृष्ठ २४०)।

> ''जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया?
> और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट किया?''

श''समाचार'' शब्द (report) का अर्थ है ''घोषित हुआ संदेश''। लूथर ने इसे ''हमारे प्रचार करने की'' तरह अनुवाद किया (योंग, ibid)। ''जो समाचार हमें *दिया गया,*

उसका किसने विश्वास किया? समांतर वर्णन पाठ में है, ''और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट किया?'' ''यहोवा का भुजबल'' वर्णन है जो प्रभु के सामर्थ्य को संदर्भ करता है। जो समाचार हमें दिया गया उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट किया? किसे मसीह का बचानेवाला सामर्थ्य प्रगट हुआ?

> ''जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया?
> और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट किया?''
> (यशायाह ५३:१)।

यह पद दिखाता है कि आपको पहले सुसमाचार के प्रचार का विश्वास करना ही चाहिए, और फिर मसीह में परमेश्वर के सामर्थ्य द्वारा परिवर्तित हो जाइए। और फिर भी भविष्यवक्ता का प्रश्न दिखाता है कि बहुत थोड़े विश्वास करेंगे और परिवर्तित होंगे।

> ''जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया?
> और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट किया?''
> (यशायाह ५३:१)।

## १. पहला, मसीह की सांसारिक सेवा के दौरान थोड़े लोगो ने विश्वास किया और परिवर्तित हुए थे।

यीशु लाज़र (Lazarus) की कब्र के पास आए। यह आदमी चार दिनों से मरा हुआ था। यीशु ने उनको कहा, ''पत्थर हटाओ'' (यूहन्ना ११:३९)। लाज़र की बहन उन्हें रोकना चाहती थी। उसने कहा, ''हे प्रभु, उसमें से अब तो दुर्गध आती है, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो चुके है'' (ibid)। परन्तु उन्होंने यीशु की आज्ञा मानी और कब्र के मुँह के पास जो पत्थर ढँका हुआ था उसे हटाया। फिर यीशु ने ''बड़े शब्द से पुकारा, हे लाज़र, निकल आ। और जो मर गया था वह कफन से हाथ पाँव बँधे हुए निकल आया, और उसका मुँह अँगोछे से लिपटा हुआ था। यीशु ने उनसे कहा, उसे खोल दो और जाने दो'' (यूहन्ना ११:४३—४४)।

> ''इस पर प्रधान याजकों और फरीसियों ने महासभा बुलाई और
> कहा, हम करते क्या है? (हमें क्या करना चाहिए?) यह मनुष्य
> तो बहुत चिन्ह दिखाता है'' (यूहन्ना ११:४७)।

उन्होंने देखा उसने कितने चमत्कार किए, और ड़रते थे कि सारे सामान्य लोग उनके बजाय उसका अनुकरण करेंगे।

> ''अत: उसी दिन से वे उसे मार डालने का षड़यंत्र रचने लगे''
> (यूहन्ना ११:५३)।

यीशु से छुटकारा पाने का श्रेष्ठ रास्ता जानने, उसे ''मार डालने के लिए'' महायाजक और फरीसियों ने मिलकर सभा करनी शुरू की। प्रेरित यूहन्ना ने कहा,

> ''उसने उनके सामने इतने चिन्ह दिखाए, तौभी उन्होंने उस पर विश्वास न किया; ताकि यशायाह (यशायाह) भविष्यवक्ता का वचन पूरा हो जो उसने कहा : हे प्रभु, *हमारे समाचार का किसने विश्वास किया है? और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट हुआ है? ''* (यूहन्ना १२:३७–३८)।

उन्होंने उनको पांच हजार को चमत्कारिक रूप से खिलाते देखा। उन्होंने उनको कोढ़ी को चंगा करते और अंधो की आंखे खोलते देखा था। उन्होंने उनको दुष्टत्माओं को बाहर निकालते और लकवा वाले को सशक्त बनाकर उठाते देखा। उन्होंने उनको विधवा के पुत्र को मृत्यु से जिलाते देखा। उन्होंने उनको ना सिर्फ पानी को दाखरस में बदलते देखा, परन्तु उन्हें सुना भी

> ''उनके आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा'' (मती ९:३५)।

और फिर भी, जब उन्होंने लाज़र को मृत्यु से जिलाया, ''उसे मार डालने का षड्यन्त्र रचने लगे'' (यूहन्ना ११:५३)।

> ''उसने उनके सामने इतने चिन्ह दिखाए, तौभी उन्होंने उस पर विश्वास न किया; ताकि यशायाह (यशायाह) भविष्यवक्ता का वचन पूरा हो जो उसने कहा : हे प्रभु, *हमारे समाचार का किसने विश्वास किया है? और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट हुआ है? ''* (यूहन्ना १२:३७–३८)।

हाँ, मसीह की सांसारिक सेवा के दौरान सिर्फ थोड़े ही लोगों ने विश्वास किया और परिवर्तित हुए।

## २. दूसरा, प्रेरितो के समय के दौरान थोड़े लोगों ने विश्वास किया और परिवर्तित हुए थे।

कृपया रोमियों १०:११–१६ पर आते हैं। चलिये खड़े होकर वह महान् वाक्यखण्ड पढ़ते हैं।

> ''क्योंकि पवित्रशास्त्र यह कहता है, जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह लज्जित न होगा। यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिये कि वह सब का प्रभु है और अपने सब नाम लेनेवालों के लिये उदार है। क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा। फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया वे उसका नाम कैसे लें? और जिसके विषय सुना नहीं उस पर कैसे विश्वास करें? और प्रचारक बिना कैसे सुनें? और यदि भेजे न जाएँ तो कैसे प्रचार करें? जैसे लिखा है, उनके पाँव क्या ही सुहावने है, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते है! परन्तु सब ने उस सुसमाचार पर कान न लगाया, *(यशायाह)*

*कहता है, हे प्रभु किसने हमारे सुसमाचार पर विश्वास किया है?''* (रोमियों १०:११–१६)।

अब आप बैठ सकते हैं।

ध्यान दिजीये कि पवित्रशास्त्र का यह वाक्यखण्ड पद १२ में कहता है,

''*यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं;* इसलिये कि वह सब का प्रभु है और अपने सब नाम लेनेवालों के लिये उदार है'' (रोमियों १०:१२)।

प्रेरित पौलुस द्वारा यीशु के फिर से स्वर्ग में आरोहण के तीस वर्षो से थोड़े कम समय में लिखा गया था। इस प्रकार, पौलुस ने रोमियों की किताब प्रेरितो के किताब के बाद के हिस्सों के दरम्यान लिखी। वो यहूदी और अन्यजाति (यूनानी) दोनों से बात करता था, जब कि यीशु ने लगभग विशेष करके यहूदियों से बातें की। पौलुस ने कहा, ''यहूदियों और यूनानियों मे कुछ भेद नहीं''। सारे मनुष्यों को मसीह की आवश्यकता है!

और फिर भी, विशेष करके यहूदियों प्रेक्षकों को, पौलुस ने वही समान बात कही जो यीशु ने कही थी, यशायाह ५३:१ से कथन करते हुए, इस हकीकत पर विलाप करते हैं कि सिर्फ तुलनात्मक थोड़े यूनानियों ने विश्वास किया – और यशायाह ५३:१ को कथन करते है कि भविष्यवक्ता ने कहा था, ज्यादातर यूनानी सुसमाचार के प्रति यहूदियों की तुलना में सिर्फ थोड़े ही ज्यादा उत्तरदायी होंगे। पौलुस ने यशायाह की फरियाद से यह दिखाने के लिए कथन किया।

''जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट किया?'' (यशायाह ५३:१)।

यूनानी (अन्य जाति) यहूदियों से अधिक ज्यादा सुसमाचार के लिए उदार है। फिर भी, तौभी, सिर्फ तुलनात्मक रूप से थोड़े ही यूनानियों ने पौलुस और दूसरे प्रेरितो के समय में यीशु में विश्वास किया। प्रेरितो के समय में महान् पुन:उद्धार देखा गया, जैसा कि हम प्रेरितो की किताब में देखते है। फिर भी वो शक्तिशाली पुन:उद्धार सिर्फ थोड़े ही अन्यजातियों को मसीह में मुक्ति के लिये लाये। सुसमाचार प्रचार रोमियों के बीच भी मुश्किल था!

मसीह और प्रेरितो दोनों ने सिर्फ थोड़े ही परिवर्तित देखे। इस प्रकार, पहली सदी के मसीही निश्चित लघुमत में थे, और उस पर से सताया हुआ लघुमत! और इसलिये, दोनों यूहन्ना और पौलुस ने हमारे पाठ को लोगों को समझाने के लिए उपयोग किया कि सुमाचार के लिए लोगों का प्रतिरोध क्यों था – कि ज्यादातर जो उन्हें प्रचार करते सुनते थे अपरिवर्तित रहे।

''जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट किया?'' (यशायाह ५३:१)।

और यह मसीही इतिहास के युगो तक सच रहा। हमेशा, हर समय में, सिर्फ थोड़े लोग सुसमाचार में विश्वास करते है और सच्ची तरह से परिवर्तित होते है। और वह आज भी विश्व में सच है। कुछ नहीं बदला। यह हमें हमारे आखरी मुद्दे पर लाता है।

## ३. तीसरा, थोड़े लोगों ने विश्वास किया और आज परिवर्तित है।

हमारे अपने समय में हम कई बार सामना करते है यशायाह के विलाप की सच्चाई से, उस शोकयुक्त प्रश्न में,

> ''जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया?
> और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट किया?''
> (यशायाह ५३:१)।

दु:खद रूप से, हमें कहना ही चाहिए कि थोड़े लोग आज सुसमाचार प्रचार में विश्वास करते है, और थोड़े मसीह के सामर्थ्य के द्वारा बचाए गये है। हमारे प्यारे रिश्तेदार भी कई बार मसीह को अस्वीकार करते है। और आप में से ज्यादातर जानते है कि सिर्फ थोड़े ही परिवर्तित होते है उन में से जिन्हें हम कलीसिया में प्रचार सुनने लाते है। मैं उस पर तीन टिप्पणी करूँगा:

> (१) पहला, बाइबल हमें कहाँ कहती है कि ज्यादातर लोग बचाए जाएँगे? यह नहीं कहती। हकीकत में, यीशु ने इसके विरूद्ध कहा। उन्होंने कहा,
>
> ''सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुँचाता है; और बहुत से है जो उस से प्रवेश करते है। क्योंकि सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है; और थोड़े है जो उसे पाते है'' (मत्ती ७:१३–१४)।
>
> वहाँ *थोड़े* हैं जो इसे पाते है! हमें सदा यह बात अपने मन में रखना चाहिए जब हमारे सुसमाचार प्रचार के प्रयत्न के परिणाम में हम अधिक की आशा करते है उसकी तुलना में थोड़े परिवर्तन होते हैं।

और, फिर दूसरी बात मैं कहूँगा वह यह है।

> (२) हमारा सुसमाचार प्रचार करने का लक्ष्य कितने परिवर्तित होंगे उस पर आधारित नहीं हैं, चाहे प्रतिक्रिया बड़ी हो या छोटी, हमारी आँखे कभी भी कितने परिवर्तित हुए उस पर स्थिर नहीं होनी चाहिए। हमारा लक्ष्य *परमेश्वर की आज्ञापालन* करने पर आधारित है। हमारी आँखे सदा *प्रभु* पर ही होनी चाहिए, और हमारा

आज्ञा–पालन *उनके* प्रति जब हम सुसमाचार प्रचार करने जाते है; और जब हम सुसमाचार प्रचार करते है हमारी आँखे सदा *प्रभु* पर ही रखनी चाहिए, और हमारा आज्ञा–पालन *उन* के प्रति! मसीह ने हमें कहा,

''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो'' (मरकुस १६:१५)।

हमसे मसीह ने *यही* करने को कहा और हमें यह करना ही चाहिए चाहे लोग सुने या नहीं; चाहे वे परिवर्तित है या नहीं। हमें सुसमाचार प्रचार करना ही चाहिए क्योंकि मसीह ने हमें यह करने को कहा है! *हमारी सफलता इंसानी प्रतिक्रिया पर निर्भर नहीं होती!* नहीं! *हमारी सफलता निर्भर है मसीह के आज्ञा पालन पर। इसी लिए हमें सुसमाचार प्रचार करने जाना चाहिए चाहे वे सुसमाचार पर विश्वास करे या नहीं!*

और, फिर, एक तीसरी बात है जो इसमें से बाहर आती है।

(३) क्या *आप* मसीह पर विश्वास करते हैं? क्या *आप* मसीह के पास विश्वास से आएंगे? चाहे अगर आपके परिवार से कोई भी और आपके मित्रों में से भी आप के पास परिवर्तित न हो, क्या *आप* मसीह को ढूँढेंगे? क्या *आप* उनके पास आएंगे? स्मरण करे कि मसीह ने कहा,

''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस १६:१६)।

आप यीशु के पास आएंगे, परिवर्तित होंगे और फिर बपतिस्मा लेंगे? या आप बड़े समुदाय के लोगों में से होंगे जो उद्धारक को अस्वीकार करते हैं, और सदा के लिये अधोलोक की ज्वाला में नष्ट होंगे?

''परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस १६:१६)।

यह मेरी प्रार्थना है कि आप उस समुदाय के बीच *नहीं* होंगे जो अधोलोक में नष्ट होते है, परन्तु आप हमारे साथ स्थानीय कलीसिया में जुड़ोंगे। इस संसार से बाहर निकलिए! यीशु के पास विश्वास से आएं! इस स्थानीय कलीसिया में आएं। और यीशु के लहू और धार्मिकता द्वारा सदा और समस्त अनन्तता के लिये बचाए जाइए।

''जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया?
और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट किया?''
(यशायाह ५३:१)।

*आप* शायद उन में से एक हो जो विश्वास करता है और परिवर्तित है! शायद आप उन थोड़े में से एक हो जो जब सुसमाचार प्रचार किया जाता है उस पर विश्वास करते है। शायद आप कहें, ''हाँ, यीशु मेरे पापों के लिये मरे। हाँ, वे मृत्यु से जी उठे। हाँ, मैं उनके पास विश्वास से आता हूँ।'' *आप* शायद उन थोड़े में से एक हों जिन पर प्रभु का भुजबल प्रगट हुआ हो, जैसे यीशु पर भरोसा करने के द्वारा आप मुक्ति का अनुभव करते हैं, ''परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (यूहन्ना १:२९)। *आप* शायद उन में से एक हो जो यीशु के पास आते है, और उनके बहुमूल्य लहू द्वारा आपके पापो से शुद्ध होते हो। हमारे समाचार पर विश्वास करने और प्रभु यीशु मसीह द्वारा पापो से मुक्ति का अनुभव करने के लिए, प्रभु आपको अनुग्रह दे! आमीन!

कृपया खड़े हो जाइए और आपके गीत के पर्चे का गीत क्रमांक सात ''मैं आ रहा हूँ, प्रभु'' गाइए।

मैं सुनता हूँ आपके स्वागत का स्वर
जो मुझे बुलाता है प्रभु, आपके पास
आपके बहुमूल्य लहू में शुद्ध होने
जो कल्वरी पर बहा।
मैं आ रहा हूँ, प्रभु!
आ रहा हूँ अभी आपके पास!
मुझे साफ करो, मुझे शुद्ध करो लहू में
जो कल्वरी पर बहा।

चूंकि कमजोर और दुष्ट के रूप में आता हूं,
आप देंगे मुझे सामर्थ्य निश्चित,
आप करेंगे मेरी दुष्टता पूरी तरह शुद्ध,
जब तक हो जाउं पूरी तरह दाग रहित और शुद्ध।
मैं आ रहा हूँ, प्रभु!
आ रहा हूँ अभी आपके पास!
मुझे साफ करो, मुझे शुद्ध करो लहू में
जो कल्वरी पर बहा।
(''मैं आ रहा हूँ, प्रभु'' लेवीस हार्टसफ द्वारा, १८२८–१९१९)।

अगर आपको हमारे साथ बात करना चाहते हैं यीशु द्वारा आपके पापो से शुद्ध होने के बारे में, कृपया करके अभी सभागृह के पीछे पहुंचिए। वहां डॉ. कैगन आपको शान्त जगह ले जाएंगे जहाँ हम बात कर सके। आमीन।

रूपरेखा

# अस्वीकार किया हुआ समाचार

(यशायाह ५३ पर धार्मिक प्रवचन क्रमांक २)

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा

''जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट किया?'' (यशायाह ५३:१)।

(यशायाह ५२:१४,१३)

१. पहला, मसीह की सांसारिक सेवा के दौरान थोडे लोगो ने विश्वास किया और परिवर्तित हुए थे, यूहन्ना ११:३९, ४३–४४, ४७, ५३; १२:३७–३८; मत्ती ९:३५।

२. दूसरा, प्रेरितो के समय के दौरान थोड़े लोगों ने विश्वास किया और परिवर्तित हुए थे, रोमियों १०:११–१६।

३. तीसरा, थोड़े लोगों ने विश्वास किया और आज परिवर्तित है, मत्ती ७:१३–१४; मरकुस १६:१५,१६; यूहन्ना १:२९।

# मसीह – समुदाय द्वारा अस्वीकार किया हुआ

(यशायाह ५३ पर धार्मिक प्रवचन क्रमांक ३)

**CHRIST – REJECTED BY THE MASSES**

**(SERMON NUMBER 3 ON ISAIAH 53)**

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

लॉस एंजलिस के बप्तीस टबरनेकल में प्रभु के दिन की
सुबह, १० मार्च, २०१३ को दिया हुआ धार्मिक प्रवचन
A sermon preached at the Baptist Tabernacle of Los Angeles
Lord's Day Morning, March 10, 2013

> ''जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ? क्योंकि वह उसके सामने अँकुर के समान, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले, उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते है'' (यशायाह ५३:१–२)।

यशायाह ने कहा कि थोड़े होंगे जो प्रभु के पीड़ा भोगते सेवक के बारे में उनके संदेश को मानेंगे, और थोड़े उनके अनुग्रह का अनुभव करेंगे। प्रेरित यूहन्ना ने यशायाह ५३:१ का कथन मसीह के समय ज्यादातर यहूदियों के अविश्वास का वर्णन करने के लिए किया।

> ''उसने उनके सामने इतने चिन्ह दिखाए तौभी उन्होंने उस पर विश्वास न किया; ताकि एशायाह (यशायाह) भविष्यवक्ता का वचन पूरा हो जो उसने कहा, हे प्रभु *हमारे समाचार का किसने विश्वास किया है? और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट हुआ है?*'' (यूहन्ना १२:३७–३८)।

मसीह के स्वर्ग में लौटने के ३० वर्ष बाद, इस पद का कथन प्रेरित पौलुस ने भी यह बतलाने के लिए किया था कियहूदियों की तुलना में ज्यादातर अन्यजाति प्रभु यीशु मसीह के प्रति सिर्फ थोड़ी ही ज्यादा उत्तरदायी होंगी। पौलुस ने कहा,

> ''यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिये कि वह सब का प्रभु है और अपने सब नाम लेनेवालो के लिये उदार है... परन्तु सबने उस सुसमाचार पर कान न लगाया *एशायाह (यशायाह) कहता है, हे प्रभु किसने हमारे समाचार पर विश्वास किया है?*'' (रोमियों १०:१२,१६)।

प्रभु यीशु मसीह स्वयं ने यही समान बातें हमें कही। उन्होंने कहा कि उन पर विश्वास करके उद्धार पाने वाले थोड़ें होगें,

> ''क्योंकि सकेत (छोट़ा) है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है; *और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं*''
> (मती ७:१४)।

मसीह ने यही बात उठायी जब उन्होंने कहा,

> ''सकेत (छोट़ा) द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि *मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे*'' (लूका १३:२४)।

आमतौर से विश्व में लोग मानते हैं कि लगभग हर एक जन स्वर्ग में जाएगा। परन्तु यीशु ने एकदम इसके विरूद्ध कहा,

> ''थोड़े हैं जो उसे पाते है'' (मती ७:१४)।

> ''मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे'' (लूका १३:२४)।

यशायाह के दु:खद विलाप में, यह व्याकुल करनेवाली सच्चाई प्रतिध्वनि हुई है,

> ''जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ?''
> (यशायाह ५३:१—२)।

हम शायद पूछेगें कि ऐसा क्यों है। यहूदियों ने उनके मसीह (Messiah), के रूप में एक महान और सामर्थ्यवान शासक, वैभव और संपत्ति का राजा, होने का सोचा था वहीं अन्य जातियों में मसीह का कोई विचार ही नहीं था! इस प्रकार, सामान्य तौर पर हम देखते है, कि इंसान को यह आशा नहीं थी कि मसीह एक नम्र और पीड़ा भोगने वाले सेवक के समान आएंगे कि उनके पापों का मूल्य चुकाने के लिए क्रूस पर प्राण देंवे।

प्रेरितो के आंठवे पाठ में, इथियोपीयान एनोक (Ethiopian Eunuch) यहूदी याजक और फरीसियों की तरह इन बातों के प्रति अन्धा (अनजान) था। जब सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस ने उनके चलते रथ को पकड़ा वे यशायाह का त्रेपनवाँ (५३) पाठ पढ़ रहे थे

> ''फिलिप्पुस उसकी ओर दौड़ा और उसे एशायाह (यशायाह) भविष्यवक्ता की पुस्तक पढ़ते हुआ सुना, और पूछा, तू जो पठ़ रहा है क्या उसे समझता भी है? उसने कहा...कैसे समझूँ...''
> (प्रेरितो ८:३०—३१)।

यह अफ्रीकन यहूदी धर्म में परिवर्तित हुआ था। वह प्रत्यक्ष रूप से पुरानी नियमावली के पवित्रशास्त्र से परिचित था, तौभी जब वह इस इस पद पर पहुंचा इसके अर्थ के लिए वह यहूदी शास्त्री की तरह अन्धा था।

मुझे ऐसा लगता है कि हर एक जन इस वाक्यखण्ड से यह अनुमान लगा सकता है कि मसीह, (Messiah) जब वे आये, तब *धनवान* और मशहूर नहीं होंगे, वैभव और इंसानी महिमा से घिरे हुए, परन्तु वे जैसे ''शोकित मनुष्य, और निराशा से परिचित,'' ''मनुष्य द्वारा तुच्छ और अस्वीकार किया हुआ'' के मानिंद प्रकट होंगे। फिर भी, यह सच्चाई बाइबल में सरलता से लिखी है,

> ''वह अपने घर आया (यहूदियो के) और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया'' (यूहन्ना १:११)।

इस्त्राएल के राष्ट्र ने, पूरी तरह से, यीशु को स्वीकार नहीं किया भले ही बाइबल में उनके लिए पूर्ण भविष्यवाणी थी। हमारे पाठ के दूसरे पद में, भविष्यवक्ता हमें मसीह (Messiah) को अस्वीकार करने का कारण देते है,

> ''क्योंकि वह उसके सामने अँकुर के समान, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले, उसकी न तो (रूप, ***स्ट्रोंग***) कुछ सुन्दरता (राजप्रतापी, ***स्ट्रोंग***) थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते है'' (यशायाह ५३:२)।

परन्तु हमें यहूदी लोगों का न्याय नहीं करना चाहिए जो अन्यजातियों की तुलना में ज्यादा अधिक निष्ठुरता से उनको अस्वीकार करते है, जबकि अधिकतर अन्यजातियों ने भी उन्हें अस्वीकार किया था। स्पर्जन ने कहा,

> स्मरण कीजिए कि जो यहूदियों के लिये सही था वह अन्यजातियों के लिये भी सही है। यीशु मसीह का सुसमाचार विश्व की सबसे सरल बात है, परन्तु फिर भी कोई भी आदमी इसे तब तक समझ नहीं पाता जब तक कि उसे परमेश्वर (द्वारा) नहीं सिखाते हैं ...पाप ने इंसानी जाति पर आध्यात्मिक विषयों को समझने के लिए मानसिक असमर्थता लाद दी...आप के साथ यह अनुभव कैसा है? क्या आप भी अंधें हैं? ओह, अगर आप हैं तब शायद (प्रभु) आपको यीशु पर विश्वास रखने में मार्गदर्शन देवे (सी. एच. स्पर्जन, ''ए रूट आउट ऑफ ड्राय ग्राउन्ड'', ''बंजर सूखी जमीन से जड फूटना'', ***द मेट्रोपोलीटन टबरनेकल पुलपिट,*** पिलग्रिम प्रकाशन, १९७१ में पुर्नमुद्रित, भाग XVIII पृष्ठ ५६५–५६६)।

अब, हमारे पाठ में पद दो पर आते हुए, हम तीन कारण देखेंगे कि क्यों यीशु अस्वीकार हुए हैं। पद दो को जोर से पढिए,

> ''क्योंकि वह उसके सामने अँकुर के समान, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले, उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते है'' (यशायाह ५३:२)।

I. पहला, **मसीह का अस्वीकार किया है क्योंकि वे मनुष्य को अंकुरित पौधे व** दूध मुंहे बालक **के जैसे दिखाई देते हैं।**

इस हकीकत के कारण थोड़े लोग यीशु में विश्वास करते है ।

> ''क्योंकि वह उसके सामने अँकुर के समान...''
> (यशायाह ५३:२)।

या, जैसे डॉ. गिल ने कहा, ''छोटे पौधे की तरह, जैसा कि शब्द से प्रगट है, जो वृक्ष की जड़ से बाहर बढ़ता है ...जिसके ऊपर ध्यान नहीं दिया जाता या उसकी परवाह की जाती है, न ही इससे किसी चीज की आशा की जाती थी; और (भाषा) का लहजा मसीह का (नम्र) प्रतिज्ञाविहीन रूप (जन्म) निर्दिष्ट करता है; जो कारण दिया गया है कि क्यों यहूदियों ने सामान्यरूप में उनका अविश्वास, अस्वीकार और तिरस्कार किया था'' (जॉन गिल, डी.डी., ***एन एक्सपोझीशन ऑफ द ओल्ड टेस्टामेन्ट, पुरानी नियमावली का स्पष्टीकरण,*** द बेपटीस्ट स्टैंडर्ड बेरर, १९८९ में पुर्नमुद्रित, भाग I, पृपृष्ठ. ३१०—३११)।

> ''क्योंकि वह उसके सामने अँकुर के समान...''
> (यशायाह ५३:२)।

इसका अर्थ है कि मसीह प्रभु पिता के ''सामने''जन्में और बड़े हुए जिन्होंने उन पर ध्यान लगाया और उन्हें सामर्थ्यवान बनाया। फिर भी डॉ. योन्ग ने कहा, '' सेवक (यीशु) मनुष्यों को, नाजुक अंकुरित पौधे (Suckling) दूध मुंहे बालक की तरह दिखें...और मनुष्य ऐसे अंकुरित पौधे को काट देते है, क्योंकि वे पौधे अपना पोषण वृक्ष से लेते है और मनुष्य की नज़र में बाहर फेंक देने योग्य होते हैं'' (एडवर्ड जे. योन्ग, पी. एच. दी. ***द बुक ऑफ आईशायाह, यशायाह की किताब,*** विलीयम बी. एरडमान्स प्रकाशन कम्पनी, १९७२, भाग ३, पृपृष्ठ. ३४१—३४२)।

क्या यही वास्तविक कारण नहीं है जिसके कारण प्रधान याजक और फरीसी यीशु से छुटकारा चाहते थे? उन्होंने कहा,

> ''यदि हम उसे यों ही छोड़ दें, तो सब उस पर विश्वास ले आएँगे, और रोमी आकर हमारी जगह और जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे'' (यूहन्ना ११:४८)।

''मनुष्य ऐसे अंकुरित पौधे को काट देते है, क्योंकि वे पौधे अपना पोषण वृक्ष से लेते है और मनुष्य की नज़र में बाहर फेंक देने योग्य होते हैं'' (योन्ग, ibid.)। उन्हें डर था अगर उन्होंने उनका विश्वास किया तो वे यहूदी राष्ट्र के रूप में अपनी पहिचान खो देंगे। उन्हें ''अंकुर'' की तरह, दूध मुंहे बालक, अर्थात मसीह से ड़र था कि वे अपना पोषण उनके राष्ट्र ''जीवन वृक्ष से लेंगे''।

और क्या यह *वो ही* कारण नहीं कि आपने उनका अस्वीकार किया? इसके बारे में गहराई से सोचिए! क्या यह आपके लिये भी सच नहीं है — कि आप कुछ *खोने* से ड़रते हैं जो आपको महत्वपूर्ण लगता है — अगर आप उनके पास आते हो और उनका

भरोसा करते हो? यह सच नहीं कि आप ड़रते हैं कि मसीह ''वृक्ष से जीवन लेंगे'' कि वह कुछ ऐसा पोषण पाएंगे जो आपको लिए बहुत महत्वपूर्ण है?

मैंने डॉ. कैगन से अक्टूंबर १९२९ के उस लेख की जो ***द सेटरडे इवनिंग पोस्ट*** में छपा था उसकी मांग की। यह महान् भौतिकशास्त्री डॉ. अलबर्ट एइनस्टीन के साथ साक्षात्कार (Interview) था। मुलाकात लेनेवाले ने उनसे पूछा, ''क्या आप यीशु के ऐतिहासिक अस्तित्व को स्वीकार करते हैं?'' एइनस्टेन ने जवाब दिया, ''निश्चित रूप से। यीशु की हकीकत में मौजूदगी को महसूस किए बिना कोई भी सुसमाचार नहीं पढ़ सकता। उनका व्यक्तित्व हर शब्द में काँपता हैं। ऐसे जीवन के साथ कोई भी कल्पित कथा नहीं भरी है'' (***द सेटरडे इवनिग पोस्ट,*** २६, अक्तुबर, १९२९, पृष्ठ ११७)। मसीह के लिये एइनस्टेन का बहुत ऊँचा मंतव्य था। परन्तु दु:खद रूप से वे कभी भी परिवर्तित नहीं हुए। उनको किस चीज ने रोका? यह अवश्य ही कोई बौद्धिक परेशानी नहीं होगी। एइनस्टेन व्यभिचारी थे, और वह उस पाप को छोड़ना नहीं चाहते थे। सरल सी बात है। आपको सच्चे मसीही बनने के लिये कुछ बातें छोड़नी पड़ती है।

अब, मैं झूठा शिक्षक होऊँगा अगर मैंने आपसे कहा कि यह सत्य नहीं है। अगर मैंने आपको कहा कि आप मसीह के पास बिना कुछ खोए आ सकते हैं तो मैं गलत शिक्षा प्रचार कर रहा होंगा। अवश्य यीशु के पास आने का कुछ तो मूल्य चुकाना होगा! वह कीमत आपका जीवन है! मसीह ने इसे सरल कैसे बनाया? उन्होंने कहा,

> ''जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आप से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछें हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसें क्या लाभ होगा? मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?'' (मरकुस ८:३४–३७)।

यह पर्याप्त सरल है, क्या यह नहीं है? मसीह के पास आने के लिये आपको अपने स्वयं का अस्वीकार करना ही चाहिए, आपको अपने स्वयं के विचार छोड़ देने चाहिए, आपको अपनी कल्पना, अपने स्वयं की महत्वकांक्षा छोड़ देनी चाहिए। आपको स्वयं को उन की ओर फिराना चाहिए। इसी का अर्थ है मसीह पर *भरोसा* करना। आप *उनका भरोसा* करो –न *अपने स्वयं का*। आप स्वयं को उन्हें दे दीजिए –न की आपके विचारों और लक्ष्य को। उनकी ओर मुड़ने से आप अपने जीवन को ''खोते'' हैं। आपका जीवन सारी अनंतता के लिये तभी बचाया जाता है जब आप अपना जीवन मसीह को समर्पण करने के द्वारा, खोते हैं।

इस प्रकार, ''अंकुरित पौधा'' शब्द सूचित करता है कि मसीह परमेश्वर की नज़र में जीवन देनेवाले हैं। परन्तु इंसान की नजर में वे जीवन लेने वाले है, और इसीलिये ज्यादातर लोग उनको अस्वीकार करते हैं। वे नहीं चाहते कि मसीह उनका जीवन ''ले''! उनका जीवन देने और उनको चलाए (नेतृत्व) किए जाने से वे भयभीत हैं।

**।।. दूसरा, मसीह का अस्वीकार हुआ है क्योंकि वे मनुष्य के सामने जैसे निर्जल भूमि से फूटी जड़ के समान लगते हैं।**

> ''क्योंकि वह उसके सामने अँकुर के समान, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट...'' (यशायाह ५३:२)।

मेरा समय काफी बीत गया क्योंकि पहले मुददे पर आने मैं मैंने बहुत लंबा समय लिया। परन्तु हम आसानी से देख सकते है कैसे मसीह ''निर्जल भूमि के जड़ के समान'' प्रकट हुए। डॉ. योन्ग ने कहा,

> *निर्जल भूमि* का संदर्भ है वह दीन और परिस्थितियां और सेवक (मसीह) की भूमिका जिस में वह प्रकट होने वाले थे। यह बताता है कि सेवक का जीवन किस प्रकार के अभागे हालात के बीच जिया गया... निर्जल भूमि में जड़ को जीवन बचाने के लिए परिश्रम करना पड़ता है (योन्ग, ibid., पृष्ठ. ३४२)।

यह भविष्यवाणी संदर्भ देती है गरीबी का जिस में मसीह जन्मे थे। उनको गोद लेने वाले पिता (Adoptive Father) सिर्फ एक बढ़ई थे। उनकी असली माता मरियम एक गरीब कुँवारी लड़की थी। वे अस्तबल में जन्मे थे और गरीब लोगो के बीच बड़े हुए थे, ''निर्जल भूमि की जड़ की तरह''। उन्होनें अपने जीवन का काम गरीब और नम्र के बीच किया। उनके चेले मच्छीमार के अलावा कुछ नहीं थे। वे राजा हेरोदेस द्वारा, रोमी प्रधान पिलातुस द्वारा, शिक्षित शास्त्री और फरीसियो द्वारा ''जैसे निर्जल भूमि की जड़ के समान''अस्वीकार किये गये थे। उन्होंने उनको बेंत से मारकर अधमरा किया, और फिर उनको हाथ और पाँव पर कील ठोककर क्रूस पर लटका दिया। *उन्होने उनकी टूटी मृत देह को उधार मांगी* हुई कब्र में रखा! 'धरती पर उनका पूरा जीवन, उनका दुख भोगना और उनकी मृत्यु तक ये सारी बातें ''निर्जल भूमि की जड़ के समान'' थी। परंतु, धन्यवाद परमेश्वर का, वे तीसरे दिन मृत्यु से जीवित हो उठे, *''निर्जल भूमि की जड़ के समान''!* जैसे नाजुक अंकुरित पौधा अचानक बारिश के बाद बढ़ता है, इसी तरह मसीह ''निर्जल भूमि की जड़ के समान'' मृत्यु से जीवित होकर आगे बढ़ें। हल्लिलूय्याह!

और फिर भी ज्यादातार लोग उनका विश्वास नहीं करते। वे उन्हें ''दूध मुंहे बच्चे'' और ''आत्मिक मृतक यहूदी'' के समान सोचते हैं।

> ''जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट किया? क्योंकि वह उसके सामने अँकुर के समान, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले...'' (यशायाह ५३:१–२)।

**।।।. तीसरा, मसीह का अस्वीकार हुआ है क्योंकि उनके पास न सुन्दरता, न रूप, न ऐसा कुछ था जिससे हम उनको चाहे।**

कृपया करके खड़े हो जाइए और पद दो को जोर से पढ़िए।

> ''क्योंकि वह उसके सामने अँकुर के समान, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूर निकले, *उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते हैं*'' (यशायाह ५३:२)।

आप बैठ सकते हैं।

यीशु के पास ''न सुन्दरता ना आकार है'', न बाहरी भव्य दिखावा और वैभव डॉ. योन्ग ने कहा, ''जब हम सेवक (मसीह) को देखते हैं हम जानते है उसमें कोई सुन्दरता नहीं जो हम उनसे इच्छा करे। दूसरे शब्दो में, हमारा न्याय, बाहरी रूप के अनुसार है और यह अच्छा और सच नहीं है। यह एक दु:खद चित्र है। सेवक (मसीह) उनके अपने लोगो के बीच ही रहे, और उनके शारीरिक रूप के पीछे विश्वास की आँखो ने उनकी सच्ची महिमा देखी होगी; परंतु उनके बाहरी रूप को देखकर, इस्त्राएल को उनकी आँखे प्रसन्न करने जैसा कुछ सुन्दर नहीं लगा ...सेवक (मसीह) का प्रकटीकरण ऐसा था कि कोई आदमी उन्हे बुरे दृष्टिकोण से परखे, तो पूरी तरह से उन्हे गलत परखेगा'' (योन्ग, ibid.)।

बाहरी रूप में यीशु के पास सुन्दरता या राजवैभव नहीं है जो दुनिया को आर्कषित करता। उन्होंने लोगो को ऐसी चीजें प्रस्तुत नहीं की थी जो ज्यादातर लोगो को आर्कषित कर सके। वे सफलता या प्रसिद्धि या पैसा या सांसारिक आनन्द उपस्थित नहीं करते। इससे एकदम विरूद्ध। इस सभा की शुरूआत में पवित्रशास्त्र का वह हिस्सा पढ़ा जो हमें कहता है मसीह क्या प्रस्ताव देते हैं।

> ''जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आप से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछें हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसें क्या लाभ होगा? मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?'' (मरकुस ८:३४–३७)।

मसीह स्वनिषेध का प्रस्ताव देते हैं। मसीह अपने जीवन और नियति पर से नियंत्रण खोने का प्रस्ताव देते हैं। मसीह आत्मा को मुक्ति, पापों को क्षमा, और अनन्त जीवन पाने का प्रस्ताव देते हैं। यह अस्पृश्य चीजें हैं, इंसानी भावना या दृष्टि द्वारा, चीजें जो छू नहीं सकते या देख नहीं सकते जो स्वभाव में आध्यात्मिक है। इसीलिये ऐसे लोगों के द्वारा मसीह का अस्वीकार हुआ है जिनकी अन्दरूनी आँखे परमेश्वर द्वारा नहीं खोली गयी है, क्योंकि

> ''शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें है, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है'' (१ कुरिन्थियों २:१४)।

परंतु मुझे आश्चर्य है, इस सुबह, अगर परमेश्वर आपके मन से बात करते हैं। मुझे आश्चर्य है अगर प्रभु शायद आपसे कहते हो, ''*यद्यपि न उसका रूप ही हमें ऐसा*

*दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते,* फिर भी मैं आपको मेरे पुत्र के पास ले चलता हूँ। क्या आपने कभी भी उसे अपने मन में महसूस किया है? क्या आपने कभी भी महसूस किया है कि संसार आनंद की गुजरते पलों या सफलता के पलों से अधिक कुछ भी नहीं दिया है? क्या आपने कभी भी अपनी आत्मा के बारे में सोचा है? क्या आपने कभी भी इस बारे में सोचा है कि अगर यीशु आपके पाप उनके लहू द्वारा शुध्द नहीं करे तो आप अनंतता कहा बिताएँगे? क्या आपने इन बातों के बारे में सोचा है? और, अगर आपने विचार किया है, तो क्या आप सरल विश्वास द्वारा उनके पास आओगे जो ''उसकी न तो कुछ सुन्दरता...न उसका रूप...कि हम उसको चाहते है''? (यशायाह ५३:२)। क्या आप नाासरत के यीशु के सामने घुटने टेकेंगे, और आपके पूरे मन से उन पर भरोसा करेंगे? मैं प्रार्थना करूँगा कि आप ऐसा करेंगे।

आइए, खड़े हो जाइए।

विश्व ले लो, पर मुझे यीशु दो, इसके सारे आनंद है नाम के;
परन्तु उनका प्रेम सदा दृढ है, समान अनन्त कालीन दरम्यान।

विश्व ले लो, पर मुझे यीशु दो, उनके क्रूस में मेरा भरोसा हो;
जब तक स्वच्छ, दिव्य दृश्य, चेहरे के सामने सामने मेरे प्रभु मैं देखु
ओह, दया की ऊँचाई और गहराई! ओह, लंबाई और चौडाई प्रेम की!
औह छुटकारे की परिपूर्णता,
ऊपर अन्तहीन जीवन के लिये प्रार्थना!
(''विश्व ले लो, पर मुझे यीशु दो'' फेन्नी. जे क्रोस्बी द्वारा, १८२०–१९१५)।

अगर प्रभु ने आपके मन से बात की है, और इस नश्वर जगत का आनन्द छोड़ने हेतु आप तैयार हैं, और अगर आप यीशु मसीह को समर्पण करने के लिए तैयार हैं और उनके पास विश्वास द्वारा आते हैं, और आपको आपके पाप उनके लहू द्वारा शुध्द कराने है, और अगर आपको हमारे साथ उनके बारे में बात करनी हो, तो क्या आप मेहरबानी करके अभी पीछे के कक्ष में प्रस्थान करेंगे? डॉ. कैगन आपको शान्त जगह ले जाएँगे जहाँ हम इस पर बात कर सकते है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप आऐंगे और यीशु में सरल विश्वास द्वारा बचाए जाएंगे। आमीन।

रूपरेखा

# मसीह – समुदाय द्वारा अस्वीकार किया हुआ

(यशायाह ५३ पर धार्मिक प्रवचन क्रमांक ३)

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा

''जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ? क्योंकि वह उसके सामने अँकुर के समान, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले, उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते है'' (यशायाह ५३:१–२)।

(यशायाह १२:३७–३८; रोमियों १०:१२,१६; मती ७:१४; लूका १३:२४; प्रेरितो ८:३०–३१; यूहन्ना १:११)

I. पहला, मसीह का अस्वीकार हुआ है क्योंकि वे मनुष्य के सामने अंकुरित पौधे और दूध मुंहे बालक के जैसे दिखाई देते हैं, यशायाह ५३:२ अ; यूहन्ना ११:४८; मरकुस ८:३४–३७।

II. दूसरा, मसीह का अस्वीकार हुआ है क्योंकि वे मनुष्य के सामने निर्जल भूमि से फूटी जड़ के समान लगते है, यशायाह ५३:२ ब।

III. तीसरा, मसीह का अस्वीकार हुआ है क्योंकि उनके पास न सुन्दरता, न रूप था, न ऐसा कुछ था जिससे हम उनको चाहे, यशायाह ५३:२ क; मरकुस ८:३४–३७; १ कुरिन्थियों २:१४।

# मसीह – सर्वत्र अमूल्यांकन किया हुआ

(यशायाह ५३ पर धार्मिक प्रवचन क्रमांक ४)

**CHRIST – UNIVERSALLY DEVALUED**

**(SERMON NUMBER 4 ON ISAIAH 53)**

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

लोस एंजलिस के बप्तीस टबरनेकल में शनिवार शाम,
१६ मार्च, २०१३ को दिया हुआ धार्मिक प्रवचन
A sermon preached at the Baptist Tabernacle of Los Angeles
Lord's Day Evening, March 16, 2013

''वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दु:खी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उससे मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया और हम ने उसका मूल्य न जाना'' (यशायाह ५३:३)।

डॉ. एडवर्ड जे. योंग ने कहा,

> नास्तिकता जिसका यशायाह यहां वर्णन करते है वह समान नास्तिकता है जो आज हमारे सबके बारे में मिलती है। आदमी (मसीह) के बारे में अच्छी और प्रशंसनीय बाते कहते है। वे उनके विषयक मूल्यों की सराहना करेंगे, उनकी शिक्षा; जो घोषित करता है कि वह अच्छा आदमी था और महान् भविष्यवक्ता सिर्फ एक ही जिसके पास आज संसार के समक्ष खड़ी सामाजिक परेशानियों पर जवाब थे। जो वे नहीं करेंगे, कि यह स्वीकार कर लें कि वे पापी है, सदा काल के दण्ड के योग्य और, और प्रभु के न्याय को संतुष्ट करने और असंतुष्ट परमेश्वर को पापी से फिर से मिलाने के लिए यह मसीह का निर्धारित मृत्यु बलिदान था। जो प्रभु अपने पुत्र के बारे में कहते है मनुष्य वह ग्रहण नहीं करेंगे। आज भी, सेवक (मसीह) हैं मनुष्य के सामने तुच्छ और अस्वीकारा हुआ, और मनुष्य उनकी प्रशंसा नहीं करते (एडवर्ड जे. यन्ग, पीएच. डी., ***द बुक औफ ऐशायाह, यशायाह की किताब,*** विलीयम बी. एरडमान्स प्रकाशन कम्पनी, १९७२, भाग ३, पृष्ठ. ३४४)।

लूथर ने कहा कि यशायाह का त्रेप्पनवाँ पाठ बाइबल का ह्रदय था। मैं सोचता हूँ वह सही थे। अगर आप वह स्वीकार करते हैं, फिर हमारा पाठ आपको बहुत बडे महत्व की ओर ले जाता है। मैं मानता हूँ यह पद मनुष्य की जाति की पूरी दुष्टता के बारे में एक स्पष्ट और स्वच्छ कथन है जो बाइबल में दिया गया है। ''दृष्टता'' से हमारा अर्थ है ''भ्रष्ट्राचार''। ''टोटल'' (पूरे) से हमारा मतलब है ''पूरी तरह''। जैसे हेईडलबर्ग कैटेकिज्म (Heidelberg Catechism) इसे बताता है, इंसानी स्वभाव की दृष्टता आती है ''स्वर्ग में हमारे पहले माता पिता आदम और हव्वा के पतन और आज्ञा न मानने के कारण। *इस*

*पतन ने हमारे स्वभाव को इतना जहरीला बना दिया है कि हम पापी जन्मे हैं* – विचारों से भ्रष्ट'' (***द हेईडलबर्ग*** कैटेकिज्म प्रश्न सांतवा)। प्रभु के प्रति शत्रुता में आदमी की पूरी दृष्टता दिखाई गई है,

> ''क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर (शत्रुता) रखना है'' (रोमियों ८:७)।

मसीह जो प्रभु के पुत्र है, शत्रुता का विस्तार उन तक किया गया। संपूर्ण भ्रष्टता स्पष्ट करती है कि क्यों रोमी सैनिको ने, जिन्होंने उनको पकड़ा

> ''उस पर थूका; और वही सरकण्डा लेकर उसके सिर पर मारने लगे'' (मती २७:३०)।

संपूर्ण भ्रष्टता स्पष्ट करती है कि क्यों रोमी प्रधान पिलातुस ने

> ''यीशु को कोड़े लगवाकर (और) सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए'' (मती २७:२६)।

संपूर्ण भ्रष्टता स्पष्ट करती है कि क्यों लोग उनकी ओर चिल्लाए और जब वह क्रूस पर मर रहे थे तक उनका अपमान किया

संपूर्ण भ्रष्टता स्पष्ट करती है क्यों, आज भी,

> ''वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्याग हुआ था; वह दु:खी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उससे मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया और हम ने उसका मूल्य न जाना'' (यशायाह ५३:३)।

**I. पहला, मसीह को तुच्छ और अस्वीकार करने में इंसानी जाति की** संपूर्ण भ्रष्टता स्पष्ट करती है।

> ''वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्याग..'' (यशायाह ५३:३)।

यह वर्णन करता है मसीह के सामान्य अस्वीकार का जो हम इसे आज संसार में देखते है। हम क्रिसमस और ईस्टर पर इसे अमेरिका के सामायिक जैसे ***टाइम*** और ***न्युजवीक*** के पृष्ठ पर देखते हैं। यह स्थायी रूप से नियमित समय पर निकलने वाली पत्रिका (Periodicals) है और मसीह पर हर दिसंबर और हर अप्रैल में मुख्य कहानी छापी जाती है। परंतु मैं आपको निश्चित कर सकता हूँ वह कभी भी प्रशंसा वाली कहानियाँ नहीं होती है। वे पत्रिका के मुख्य पृष्ठ के लिए सदा पुरानी अपरिचित दिखने वाली यीशु की तस्वीर चुनते है जिसमें एक आधुनिक ह्रदय को मसीह की छवि अजीब और अमान्य लगती है। बेशक ऐसा वे किसी कारण से करते हैं। उनके पास स्थायी रूप से मुख्य

कहानी अतिशय धर्मवैज्ञानिक उदारवादिता की सनक में लिखी हुई है जो मसीह को प्रभु के एकलौते पुत्र के समान, और मुक्ति के एकमात्र साधन के रूप में अस्वीकार करते हैं। मैं निश्चित हूँ इस प्रकार की चीजें ब्रिटीश टेबेलोईडस में, और सारे विश्व की पत्रिकाओं में छपती हैं। मसीह पर दूरदर्शन और चलचित्रों में भी कई बार खुले आम आक्रमण किए गए है।

आपके धर्मनिरपेक्ष हाई स्कूल या महाविद्यालय में, जहां आप विद्यार्थी हैं तो आप बेहतर जानते हैं कि आपके प्राध्यापक के पास कभी भी यीशु या मसीहत के बारे में कहने को अच्छे शब्द नहीं होते हैं। आपके प्राध्यापको द्वारा मसीह और उनकी शिक्षा पर निरन्तर हमला किया जाता है और नीचा दिखाया जाता है।

> ''वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था''
> (यशायाह ५३:३)।

श्स्कूल में आपके सहपाठी, कार्य स्थल पर आपके साथ काम करनेवाले, मसीह का नाम लगभग हर दिन शापित शब्द के समान इस्तेमाल करते है, और उनके बारे में बुरा बोलते है।

अगर आप गैर मसीही घर से आते हैं, तो वहाँ भी आपको शरण नहीं मिल सकती! आप अच्छी तरह से जानते हैं कि आपके गैर मसीही माता पिता उद्दारक को तुच्छ समझते हैं और अस्वीकार करते हैं। आप में से बहुत से जानते है कि कितना कठिन है मसीह पर कलंक और उपहास का ढेर लगाने को सहन करना – और *आप* के लिए बेपटिस्ट कलीसिया में गंभीर मसीही बनना। यह सब मनुष्यता के भ्रष्ट और विरोधी ह्रदय से बहता है।

> ''वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था''
> (यशायाह ५३:३)।

## ।।. दूसरा, संपूर्ण भ्रष्टता मसीह के शोक और दु:ख का कारण है।

> ''वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था : *वह दु:खी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहिचान...*''
> (यशायाह ५३:३)।

मसीह के दु:ख और क्लेश का कारण क्या है? इस भटके संसार के पास उसके प्रति बैर रखने और अस्वीकार करने के अतिरिक्त और क्या है!

जब वे इस पृथ्वी पर थे, तब शास्त्री, फरीसी और प्रधान याजक उसकी ओर इतनी शत्रुता से भरे (विपरित) थे, और इतनी मजबूती से उनको अस्वीकार किया, कि वे आत्मा की बड़ी पीड़ा में चिल्ला उठें;

> ''हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, तू जो भविष्यवक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए उन पर पथराव करता है। कितनी ही बार में ने यह चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को

अपने पंखो के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों
को इकट्ठा करूँ, *पर तुमने यह न चाहा*'' (लूका १३:३४)।

म्सीह शोक और विलाप में इतने टूट चुके थे, इंसान के पापों के बोझ तले, कि वहाँ गतसमनी की वाटिका में, वे उनको क्रूस पर चढ़ाते उसकी एक रात पहले,

''उसका पसीना मानो लहू की बड़ी बूँदो के समान भूमि पर गिर
रहा था'' (लूका २२:४४)।

वहाँ मेरे प्रभु ने सहे मेरे सारे दोष;
यह अनुग्रह द्वारा मान सकते है;
परंतु भयानक जो उन्होंने महसूस किया
वह मानने के लिये बहुत ज्यादा है
कोई भी आप में से प्रवेश नहीं कर सकता
वह अप्रसन्न, अंधेरी गेतसमनी!
कोई भी आप में से प्रवेश नहीं कर सकता
वह अप्रसन्न, अंधेरी गेतसमनी!
(''गेतसमनी'' जोसेफ हार्ट द्वारा १७१२—१७६८;
याजक द्वारा धुन बदली गयी ''कम, ई सिनर्स'')।

अगर आपके पाप नहीं तो फिर मसीह को इस पीड़ा का अनुभव उनके देह और आत्मा में होने का कारण क्या हुआ? उनके शोक और विलाप का कारण क्या हुआ, *अगर आपके दुष्ट स्वभाव की शत्रुता और दुश्मनी वजह है जिसने उन पर प्रभु के न्याय को आमंत्रित किया* और जिसने आपके पापों को गेतसमनी से क्रूस तक उठाना आवश्यक कर दिया?

शोकित आदमी, कैसा नाम
प्रभु के पुत्र के लिये जो आए
नष्ट पापियों का पुन:उध्दार करने!
हल्लिलूय्याह! कैसे उध्दारक!

लज्जा और उपहासी कठोरता उठाते हुए
मेरी जगह अपराधी बन वे खड़े रहे
उनके लहू के साथ मेरी माफी मुहर की
हल्लिलूय्याह! कैसे उध्दारक!
(''हल्लिलूय्याह! कैसे उध्दारक!'' फिलिप पी. ब्लिस द्वारा, १८३८—१८७६)।

और आज आपके आंतरिक स्वभाव में ऐसा क्या है जो स्वर्ग से देखने पर यीशु के शोक और विलाप का कारण है? वे शोकयुक्त और दु:खी है कि आप स्वयं, उनको तुच्छ समझते और अस्वीकार करते हैं। आप शायद कहें कि आप उनसे प्रेम करते हैं। परन्तु हकीकत है कि आप उनका भरोसा करने का इनकार करके दिखाते हैं कि आप हकीकत में उनको तुच्छ और अस्वीकार करते हो; अन्यथा और क्या संभव कारण है जो आपको उन पर भरोसा करने से दूर रखता है? इस शाम आपका उन पर भरोसा करने से इन्कार करना उनके लिये बड़ी पीड़ा और शोक का कारण होता है।

> ''वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था : *वह दु:खी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहिचान...*''
> (यशायाह ५३:३)।

## ।।।. तीसरा, संपूर्ण भ्रष्टता कारण बनती है कि मानव जाति अपना चेहरा मसीह से छिपाती है।

पाठ के तीसरे उपवाक्य को देखो,

> ''वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्याग हुआ था : वह दु:खी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी, *और लोग उससे मुख फेर लेते...*'' (यशायाह ५३:३)।

डॉ. गिल ने कहा, *''और लोग उससे मुख फेर लेते है'';* ऐसा घृणाजनक और घिनौना, जैसे उनकी ओर अति द्वेष हो, और उनके प्रति नफरत हो, बड़ा द्वेष, उनकी ओर अपमान जनक नजर जैसे (स्कोनिन्ग), ध्यान देने योग्य भी नहीं (टिप्पणी) (जॉन गिल ''एन एक्सपोज़ीशन ओफ द ओल्ड टेस्टमेन्ट, द बेप्टीस्ट स्टैंनडार्ड बेरर, १९८९ में पुर्नमुद्रित भाग I, पृपृष्ठ. ३११—३१२)।

उनकी दृष्टता की स्वाभाविक अवस्था में, आदमी अपना मुख मसीह से छिपाते है। वे शायद, जैसे डॉ. यन्ग ने कहा, ''उनके बारे में आनन्दित और प्रशंसनीय बातें कहो. ..(परंतु) वे नहीं मानेंगे कि वे पापी है, अनंतकालीन दण्ड के योग्य हैं, और वह कि मसीह की मृत्यु का निर्द्यारित बलिदान परमेश्वर के न्याय और छूटे हुए प्रभु को पापीयों के मिलाने का विचार है। उन्हे वह नहीं मिलेगा। प्रभु जो नेअपने पुत्र के संदर्भ में कहते हैं उसे वे ग्रहण नहीं करेंगे'' (यन्ग, ibid.)।

गैर मसीही धर्म या तो यीशु का पूरी तरह अस्वीकार करते है, या फिर उनका उनका पद सिर्फ ''भविष्यवक्ता'' या ''शिक्षक'' तक घटा देते हैं। इस प्रकार, वे *सच्चे* मसीह का अस्वीकार करते है, जैसे वे बाइबल में प्रगट किए गए है। धार्मिक विश्वासी भी सच्चे मसीह का अस्वीकार करते है। वे पुराने विचारों वाली मसीहत को अस्वीकार करते है और उसे सच्चे मसीह के स्थान पर रखते है, ''दूसरे यीशु, जिसका प्रचार हमने नहीं किया'' (२ कुरिन्थियों ११:४)। यीशु ने यह भविष्यवाणी की जब उन्होने कहा, ''झूठे मसीह उठ खड़े होंगे'' (मत्ती २४:२४)। सिर्फ सच्चे मसीह वह हैं जो पुरानी और नयी नियमावली में प्रकट किए गए है। बाकी सारे मसीह के विचार ''झूठे मसीह'' हैं या जैसे प्रेरितो पौलुस इसे लिखते है, ''दूसरे यीशु, जिसका प्रचार हमने नहीं किया''। मोर्मन्स के (Mormons) पास झूठे मसीह हैं। यहोवा विटनेस के पास झूठे मसीह हैं। आज बहुत से सुसमाचार प्रचारकों के पास भी झूठे ''आत्मिक—मसीह'' हैं, ज्ञान संबंधी मसीह, जैसे डॉ. मिशेल हार्टन उनकी किताब ***क्राइस्टलेस क्रिस्टीयानिटी*** में स्पष्ट करती हैं (बेकर बुक्स, २००८)। झूठे मसीह में विश्वास करने के द्वारा वे सच्चे मसीह से जो पवित्रशास्त्र में प्रगट किए गए है, उनके चेहरे छिपाते है।

दु:खद रूप से यह सुसमाचार प्रचारक मसीहियों में कई बार सत्य हैं। डॉ. ए. डबल्यू टोज़र, बड़े आदरणीय सुसमाचार प्रचारक लेखक, ने वह मुद्दा बहुत सरल किया जब उन्होने कहा,

> इन दिनों हमारे बीच बहुत सारे बनावटी (कृत्रिम) मसीह (सुसमाचार प्रचारक) हैं। जोन ओवेन, प्राचीन पुरीटीयन ने उनके दिनों के लोगों को चेतावनी दी : ''आपके पास काल्पनिक मसीह है और अगर आपको काल्पनिक मुक्ति से संतुष्टि होगी''...परंतु वहाँ सिर्फ एक ही सच्चे मसीह है, और प्रभु ने कहा है कि वे उनके पुत्र है... मसीह की ईश्वरीयता को जो स्वीकार करते हैं वे उनकी मनुष्यता को पहचानने में निष्फल रहते हैं। हम स्वीकार करने में त्वरित है कि जब वे धरती पर चले थे वे *मनुष्यों के साथ प्रभु थे* परन्तु हम अनदेखा करते है सच्चाई को भी समान महत्वपूर्णता से, कि जहाँ वे अभी बैठते है उनके मध्यस्थ सिहांसन पर (ऊपर स्वर्ग में) *वे परमेश्वर के साथ इंसान* है। नयी नियमावली की पढ़ाई अब यह है कि, इस खास पल में; वहाँ स्वर्ग में परमेश्वर की मौजूदगी में हमारे जैसा आदमी है। निश्चित रूप से वह आदम की तरह या मूसा या पौलुस जैसे आदमी था। वह महिमायुक्त मनुष्य है, परन्तु महिमापूर्ण होना उन्हें मनुष्यत्वहीन नहीं बना सका। मानवजाति की स्पर्धा में आज वह सच्चा आदमी है।
>
> मुक्ति ''पूर्ण किए गए काम को स्वीकार करने द्वारा'' या ''मसीह के लिये निर्णय करने'' द्वारा नहीं आती। (मुक्ति) आती है प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा, पूरे जीवित, जीतनेवाला परमेश्वर जिन्होने, प्रभु और इंसान, की तरह हमारी लड़ाई लड़ी और इसे जीता, हमारा कर्जा (पाप का) स्वीकार किया और उसे चुकाया, हमारे पाप लिये और उसके अधीन हुए और हमें मुक्त कराने के लिए मरे। यह है सच्चे मसीह, और इससे कम कोई बात नहीं है (ए. डबल्यु टोझर, डी.डी. ''यीशु मसीह हमारे परमेश्वर है'' **जेम्स फ्रॉम टोझर,** मसीही प्रकाशन, १९६९, लाइट ट्रस्ट की समंति द्वारा, १९७९, पृपृष्ठ २४,२५)।

इंसानी मन की स्वाभाविक दुष्टता उद्धारहीन लोगो को उनका चेहरा सच्चे मसीह से छिपाने का कारण बनती है

> ''वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था''
> (यशायाह ५३:३)।

## IV. चौथा, संपूर्ण भ्रष्टता मानवजाति को मसीह का महात्मय कम करने का कारण बनती है

हमारे पाठ के अंत में पद तीन में देखते हैं। चलिये खड़े रहकर आखरी उपवाक्य जोर से पढ़ते है, ''वह तुच्छ जाना...'' शब्दो से शुरूआत करते है

> ''वह तुच्छ जाना गया, और *हम ने उसका मूल्य न जाना*''
> (यशायाह ५३:३)।

आप बैठ सकते हैं। ''हमने उसका मूल्य न जाना'', पर बोलते हुए, स्पर्जन ''प्रचारकों के राजकुमार'', ने कहा,

> यह मानवजाति का विश्व–व्यापी स्वीकार्य होना ही चाहिए। सबसे ऊँचे सम्राट से लेकर सबसे छोटे (सबसे लघुतम) किसान तक, गर्वपूर्ण बुद्धिमता से सबसे बुरे मन तक, सबसे सराहे हुए आदमियों से अनजान और महत्वहीन तक, यह एक स्वीकार्य आना ही चाहिए : ''हमने उसका मूल्य न जाना''...पवित्र से पवित्र संत भी...वे भी एक बार ''उनका मूल्य न जान सके''... एक समय पर ''उसका मूल्य न जाना (वे परिवर्तित हुए उससे पहले)'' (सी. एच. स्पर्जन, ''व्हाय क्राइस्ट इज नॉट एस्टीम्मड,'' ''क्यो मसीह का मूल्य न जाना गया'', ***द मेट्रोपोलीटन टबरेनेकल पुलपिट,*** पिलग्रिम प्रकाशन, १९७८ में पुर्नमुद्रित, भाग LIII, पृष्ठ. १५७)।

उसी धार्मिक प्रवचन में; जिसका शीर्षक है, ''व्हाय क्राइस्ट इज नॉट एस्टीम्मड'', स्पर्जन ने चार कारण दिये क्यो यह खोया हुआ संसार मसीह की सराहना करने में निष्फल होता है, क्यों अपरिवर्तित लोग मसीह का मूल्य नहीं देखते, उनके बारे में ऊँचा नहीं सोचते, क्यों उनका मूल्य नहीं जानते और उनकी आराधना नहीं करते। स्पर्जन ने कहा कि उद्धाररहित लोग उनका मूल्य इन चार कारणों से नहीं करते :

१) व्यक्ति मसीह का मूल्य नहीं करता क्योंकि वे अपने स्वयं का मूल्य इतना ऊँचा करते है। ''स्व–मूल्य'' उन्होने कहा, ''यीशु को बाहर रखते'' है... और जितना हमारा ज्याद स्व–मूल्य बढता है, उतनी दृढ़ता से हम मसीह के विरूद्ध द्वार (बंद) करते है । स्व का प्रेम उध्दारक के प्रेम को बचाता है।

२) व्यक्ति मसीह का मूल्य नहीं करता क्योंकि वे विश्व का मूल्य बहुत ऊँचा करते है। स्पर्जन ने कहा, ''हम उनका मूल्य नहीं करते क्योंकि हम जगत और उसकी सारी अज्ञानता से प्रेम करते है''।

३) व्यक्ति मसीह का मूल्य नहीं करता क्योंकि वे उनको जानते नहीं। स्पर्जन ने कहा, ''इसमें बड़ा फर्क है मसीह के बारे में जानना और मसीह स्वयं को जानने में...वे जो गलत तरीके से मसीह के बारे में सोचते है उन्होने उनको कभी भी नहीं जाना...'हमने उनका मूल्य नहीं जाना'...क्योंकि हम उनको नहीं जानते''।

४) व्यक्ति मसीह का मूल्य नहीं करता क्योंकि वे आध्यात्मिक रूप में मरे हुए है। स्पर्जन ने कहा, ''इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हमने उनका मूल्य न जाना, क्योंकि हम आध्यात्मिक रूप से मरे हुए थे...हम मरे हुए थे 'अपराधों में और पापों में, जैसे लाजर उसकी कब्र में, हम हर गुजरते क्षण के साथ ज्यादा और ज्यादा भ्रष्ट बन रहे थे ''।

यह कारण स्पर्जन ने मानव जाति के उध्दारक को अस्वीकार किए जाने के दिये, क्योंकि हकीकत यह है कि वे उनमे मूल्य नहीं देखते। मुझे ताज्जुब है, क्या यह पाठ आप पर भी लागू होता है?

> ''वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दु:खी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उससे मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया और *हम ने उसका मूल्य न जाना*'' (यशायाह ५३:३)।

क्या इस धार्मिक प्रवचन के शब्दो ने आपको अपनी दुष्टता के बारे में सोचने को प्रेरित किया, आपके मन में यीशु के लिये हठी कठोर अस्वीकार को? क्या खुद में थोड़ा भ्रष्ट महसूस किया जो भ्रष्टता मसीह का अस्वीकार करती और उनका मूल्य नहीं करती? अगर आप किसी भी प्रकार का भयानक भ्रष्टचार आपके स्वयं के अन्दर, महसूस करते हैं मैं आपको निश्चित कर सकता हूँ यह सिर्फ परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा है जो आप अहसास कर पा रहे हैं। जैसे जॉन न्यूटन ने लिखा

> अद्‌भुत अनुग्रह! कितना मधुर स्वर है
> जिसने मुझ जैसे दुष्ट को बचाया!
> मैं एक बार खोया हुआ था, परन्तु अब मिल गया हूँ,
> पहले अन्धा था परन्तु अब मैं देख सकता हूँ
>
> वह अनुग्रह था जिसने मेरे मन को डरना सिखाया
> और अनुग्रह ने मेरे डर को छुड़या;
> कैसा बहुमूल्य वह अनुग्रह दिखाता है
> वह समय मैंने पहले विश्वास किया!
> (''अद्‌भुत अनुग्रह'' जॉन न्यूटन द्वारा, १७२५–१८०७)।

अगर आप महसूस करते हैं कि आपका कठोर मन मसीह के सामने खुला है, और अगर आप महसूस करते हैं किसी भी स्तर पर आपके भीतर बसने वाली नीच दुष्टता मसीह का अस्वीकार करती है तो क्या स्वयं को अभी समर्पित करेंगे? आप मसीह का भरोसा करेंगे; जिसे विश्व तुच्छ और अस्वीकार करता है? जब आप यीशु पर भरोसा करेंगे उनके बहुमूल्य लहू और धार्मिकता द्वारा आप तुरंत ही पाप और अधोलोक से बचाए जाएंगे। आमीन।

रूपरेखा

# मसीह – सर्वत्र अमूल्यांकन किया हुआ

(यशायाह ५३ पर धार्मिक प्रवचन क्रमांक ४)

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा

''वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दु:खी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उससे मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया और हम ने उसका मूल्य न जाना'' (यशायाह ५३:३)।

(रोमियो ८:७; मती २७:३०,२६)

I. पहला, मसीह को तुच्छ और अस्वीकार करने में इंसानी जाति की संपूर्ण भ्रष्टता स्पष्ट करती है, यशायाह ५३:३ अ।

II. दूसरा, संपूर्ण भ्रष्टता मसीह के शोक और दु:ख का कारण होती है, यशायाह ५३:३ ब; लूका १३:३४; २२:४४।

III. तीसरा, संपूर्ण भ्रष्टता कारण बनती है कि मानव जाति मसीह से अपना चेहरा छिपाती है, यशायाह ५३:३ क; २ कुरिन्थियों ११:४; मती २४:२४।

IV. चौथा, संपूर्ण भ्रष्टता मानवजाति को मसीह की महात्मय कम करने का कारण बनती है, यशायाह ५३:३ ड।

# मसीह की पीड़ा – सही और गलत

(यशायाह ५३ से पाँचवा धर्मोपदेश)

**CHRIST'S SUFFERING - THE TRUE AND THE FALSE**

**(SERMON NUMBER 5 ON ISAIAH 53)**

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

यह धर्मोपदेश, मार्च १७, २०१३ को लोस एंजलिस में
प्रभु के दिन सुबह प्रचार किया गया था
A sermon preached at the Baptist Tabernacle of Los Angeles
Lord's Day Morning, March 17, 2013

> ''निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया; तो भी हमने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा'' (यशायाह ५३:४)।

हमारे संदेश का पहला भाग कहता है कि यीशु ने ''हमारे दर्द उठाए और दु:ख ढोये।'' वचन का यह भाग, नये नियम में मत्ती ८:१७ में बताया गया है,

> ''ताकि जो वचन यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो : *उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया*'' (मती ८:१७)।

यशायाह ५३:४ के वचन से मत्ती ८:१७ का वचन सीधा व्यवहार में लाया गया है। डॉ. एडवर्ड जे. यंग ने कहा है, ''मत्ती ८:१७ के संदर्भ में कई बातें बिल्कुल उचित है, हालांकि यहाँ बीमारी को पाप के संदर्भ में बताया गया है, इस वचन में पाप के परिणाम को दूर करने की सोच भी दी गई है। बीमारी कभी न अलग होनेवाला, पाप का साथी है। (एडवर्ड जे. यंग, पी. अेचडी ***द बुक ऑफ आईजाया***, विलियम बी. अेर्डमन्स पब्लिशिग कंपनी, वॉल्यूम ३, पेज. ३४५)।

मत्ती ८:१७ में बीमारी की चंगाई के बारे में प्रायश्चित *दिया गया* है, किंतु हमें याद रखना है कि यह *निवेदन* मत्ती द्वारा किया गया है। यह हमारे पाठ का *मुख्य अर्थ* नहीं निकालता। प्रो. ''हेंगस्टनबर्ग ने सही बयान दिया है कि सेवक (मसीह) ने परिणाम के रूप में पाप को ढोया है; और उसमें बीमारियों और पीड़ा मुख्य स्थान लेती है। इस बात का ध्यान रखा जाय कि मत्ती ने जानबूझ कर (यशायाह ५३:४) से ध्यान हटाया है...इस बात पर बल देने के लिए कि मसीह ने हमारी बीमारियों को ढोया है '' (यंग, आईबीआईडी., पेज ३४५, फुटनोट १३ के अनुसार)।

चारों सुसमाचार किताबों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से पता चलता है कि मसीह ने बीमारी से चंगाई की यह इस बात से साबित होता है कि वह हम में परिवर्तन लाकर प्राण को चंगा कर सकता है। इस के उदाहरण रूप में दस कोढ़ियों ने यीशु को पुकारा और कहा, ''हे स्वामी, हम पर दया कर'' (लूका १७:१३)। यीशु ने उन्हें याजकों को दिखाने के लिए कहा, ''और जाते ही जाते वे शुद्ध हो गए'' (लूका १७:१४)। *मसीह*

*के सामर्थ्य से वे शारिरीक तौर से शुद्ध हो गए, किंतु उनका उद्धार नहीं हुआ।* उनमें से केवल एक ही व्यक्ति लौट आया। उस ने उद्धार के रूप में आपने पापों से आध्यात्मिक चंगाई पाई, जब वह यीशु के पास लौटा ''और यीशु के पाँव पर मुँह के बल गिरकर उसका धन्यवाद करने लगा'' (लूका १७:१६)। इस पर यीशु ने कहा, ''उठकर चला जा; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है'' (लूका १७:१९)। तभी जाकर उसे *आध्यात्मिक* और श्शारीरिक चंगाई प्राप्त हुई। यह बातें हमें यीशु के द्वारा की गयी कई चमत्कारिक चंगाई बताती है। जैसे कि यूहन्ना ९ में अंधे व्यक्ति का दिखाई देना। यह सबसे पहला व्यक्ति है जिसको अंधेपन से चंगाई मिली, किंतु उसने सोचा कि यीशु केवल एक नबी था, बाद में उसने कहा,

> ''हे प्रभु, मैं *विश्वास* करता हूँ और उसे दण्डवत किया''
> (यूहन्ना ९:३८)।

तभी जाकर उस व्यक्ति का उद्धार हुआ।

इसलिए हम इस बात का निष्कर्ष निकाल सकते है कि शारीरिक चंगाई *दूसरी* बात है, और यशायाह ५३:४ में आध्यात्मिक चंगाई पर *जोर* दिया गया है। डॉ. जे. वरनॉन मेकजी ने कहा है,

> यशायाह के इस वचन से यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि उसके कोडे खाने से हम लोग अपने अपराधों से और अन्यायों से चंगे हो जाएँ (यशायाह ५३:५)। आप मुझ से कहेंगे, ''क्या आप इस बात के लिए बिल्कुल निश्चित हैं?'' मुझे पता है कि इन वचनों में इस विषय में कहा है क्योंकि पतरस कहता है, ''वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए मरा कि हम धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ; उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए'' (१ पतरस २:२४)। चंगाई किससे? ''पापों से'' यहाँ पर पतरस ने पाप के बारे में स्पष्टीकरण किया है (मेकजी, आईबीआईडी., पेज ४९)।

यह स्पष्टीकरण हमें अपने संदेश की ओर ले जा रहा है,

> ''निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया; तो भी हमने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दश में पड़ा हुआ समझा'' (यशायाह ५३:४)।

यह वचन प्राकृतिक रूप से दो हिस्सों में बँट गया है; (१) पवित्रशास्त्र में दिए हुए मसीह की दुर्दशा का सही कारण (२) अंधकार में जीने वालों की गलत मान्यता।

## I. प्रथम, पवित्र वचन में दिए गए मसीह की पीड़ा (दुर्दशा) के सही कारण।

> ''निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया...'' (यशायाह ५३:४)।

''निश्चय'' शब्द मसीह की दुर्दशा का सही कारण और अंधविश्वास की गलत वजह की पहचान कराता है। ''निश्चिय'' तब सही बयान; और ''अभी तक'', फिर से गलत बयान;

> ''निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया; तो भी हमने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दश में पड़ा हुआ समझा'' (यशायाह ५३:४)।

साथ ही ''दर्द'' और ''दु:ख'' इन शब्दों को भी समझना आवश्यक है। हिब्रू भाषा में 'दर्द' का मतलब है ''रोग''। यशायाह १:५–६ में इसका समानार्थी शब्द ''पाप'' के लिए प्रयोग किया है। यहॉ यह 'पाप' का सामानार्थी शब्द है। यहाँ दर्द के संदेश में रोग और पाप के रोग का उल्लेख किया है। इसलिए ''रोग'' पाप का और ''दु:ख, दर्द और पीड़ा'', पाप से उद्‌भव होते है, इस का मतलब है–पाप के रोग और उसके दर्द।

अब ''वहन किया'' शब्द की ओर ध्यान दें। इस का मतलब है ''ढोना''। किंतु ''इस का मतलब ढोने (उठा लेने) से भी अधिक है। उठा लेना और ढोना अधिक विचारणीय है। (यंग, आईबीआईडी., पेज ३४५) मसीह मनुष्य के पापों को उठाता है, अपने आप पर ले लेता है, और उन पापों को दूर करता है। जैसे मसीह अपना क्रूस उठाकर कलवरी तक ले गया, उसी तरह परिवर्तक के पापों को उठाकर, ढो लेता है। प्रेरित पतरस ने मसीह के बारे में यही कहा है,

> ''वह आप हो हमारें पापों को अपनी देह पर लिए हुये क्रूस पर चढ़ गया'' (१ पतरस २:२४)।

जैसे केईल और डेलीटश ने कहा है,

> मसीह का संबंध मात्र हमारी पीड़ा के साथ नहीं था, किंतु हमारे पीड़ा (दर्द) अपने आप पर ले ली और उसे उठाने लायक बना, उसने दर्द केवल हराया ही नही...किंतु अपने आप पर (शारीरिक तौर) उठा लिया, ताकि उससे हमें छुटकारा दिला सके। किंतु एक व्यक्ति दूसरों का दर्द अपने आप पर ढोता है, जब की उसे दूसरों ने उठाना है। और केवल उसके साथ ही नहीं रहता है लेकिन उनकी जगह लेता है इसे प्रतिस्थापन कहते है (फ्रांज डेलीटस, Th.D., ***Commentary on the Old Testament in Ten Volumes,*** विलियम बी. एर्डमनस पब्लिशिंग कंपनी, १९७३ reprint, Volume VII पेज. ३१६)।

मसीह ने हमारे पापों को अपनी देह पर लिया, और कलवरी पर्वत पर ले गया, फिर क्रूस पर और वहाँ उसने हमारे पापों की कीमत चुकाई। ''इसे कहते है प्रतिस्थापन''!!!
''बेरींग शेम अेंड स्कोफींग रूड''। गाईए!

बेरींग शेम अेंड स्कोफींग रूड,
इन माय प्लेस कंडेमन्ड ही स्टूड;
सील्ड माय पारडन वीथ हीज ब्लड;
हल्लेलूयाह! वॉट ए सेवियर!
(''हल्लेलूयाह! वॉट ए सेवियर!'' फिलिप बी. ब्लीस द्वारा १८३८–१८७६)

''परंतु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म कामों के कारण कुचला गया'' (यशायाह ५३:५)।

''पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया'' (१ कुरिन्थियों १५:३)।

''निश्चित उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया...'' (यशायाह ५३:४)।

डॉ. डबल्यू अे. क्रिसवेल ने कहा है,

क्रूस पर मसीह की मृत्यु हमारे पापों के फलों का परिणाम है। प्रभु यीशु को किसने मारा? महिमा के राजकुमार को किसे मारा? किन लोगों ने उसे क्रूस पर कीलों से पीड़ित करके मार डाला? किसका अपराध था?...अवश्य कहते है कि इसमें हम सब का हिस्सा है। मेरे पाप उसके काँटो के ताज़ के नीचे दबाए गए, मेरे पाप उसके हाथों में दाँतेदार कीलों से ठोके गए। मेरे पापों के कारण उसके हृदय में भाले भोंके गए। मेरे पापों के कारण प्रभु यीशु को क्रूस पर चढाया गया। हमारे प्रभु की मृत्यु का ... यही कारण है (डबल्यू. ए. क्रिसवेल, पी.एचडी., "The Blood of the Cross," ***Messages From My Heart,*** REL पब्लीकेशन १९९४, पेजीस. ५९०–५११)।

''पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया'' (१ कुरिन्थियों १५:३)।

''निश्चित उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया...'' (यशायाह ५३:४)।

''बेरींग शेम एंड स्कोफींग रूड''। फिर से गाओ!

बेरींग शेम ऐंड स्कोफींग रूड,
इन माय प्लेस कंडेमन्ड ही स्टूड;
सील्ड माय पारडन वीथ हीज ब्लड;
हल्लेलूयाह! वॉट ए सेवियर!

*यही* मसीह की दुर्दशा का *सही* कारण है – *तुम्हारें* पापों के भुगतान के लिए! किंतु मानव जाति ने अपने अंधकार और विद्रोह के कारण, सुंदर से उद्धार के सत्य को,

मसीह की प्रतिस्थापन मृत्यु को झूठ में बदल दिया! यह हमें दूसरे हिस्से की ओर ले जाता है।

## ।।. दूसरा, मसीह की दुर्दशा के गलत कारण, अंध विश्वासियों के द्वारा दिये गए।

हमारे पद की ओर ध्यान दें। चलो खडे हो जाएँ और जोर से पढ़े।

> ''निश्चित उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया; *तो भी हमने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दश में पड़ा हुआ समझा*'' (यशायाह ५३:४)।

आप बैठ सकते है।

''तो भी *हमने* उसे परमेश्वर का मारा–काटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा''। ''हम'' मनुष्य जो आदम के वंशज है। खुद शैतान ने हमें अंधा कर दिया है, *हम* मसीह की पीड़ा प्रत्यद्यिकृत करने में नाकामयाब रहे, यह कि वह हमारी जगह मरा, हमारा स्थानापन्न बनकर। *हमने* सोचा वह तो मात्र गरीब मूर्ख था, कदाचित पागल या भ्रांतिमय, या जैसे फरीसियों ने कहा, ''दुष्टता से भरा,'' जिसने स्थापित आदेश के खिलाफ मूर्खो की तरह अपने आप पर पीड़ा मोल ली। अय्यूब के मित्रों की तरह *हमने* सोचा कि उसके अपने पाप और मूर्खता, मनुष्य के खिलाफ क्रोध अपने आप पर ले कर नीचे गिराया है। हमने सोचा ज्यादा से ज्यादा बिना कारण के वह शहीद हो गया। हममें से कई लोगों ने सोचा होगा यीशु कट्टरपंथी था। हममें से अधिकांश को यह सोचना भाता है कि उसने धार्मिक अगुवों को उत्तेजित करके अपने आप पर मृत्यु को बुला लिया।

घायल? हाँ हम जानते है कि वो घायल हुआ था। पीटा गया! हाँ, हम जानते है कि वो पीटा गया था। पीड़ित? हाँ, हम उसे भी जानते है! हम यह भी जानते है कि उन्होंने उसके मुँह पर मुक्कों से मारा था। हम जानते है कि उन्हों ने उसे चाबुक से फटकारा था। हम जानते है कि उसे क्रूस पर कीलों से ठोका गया था! ज्यादातर सभी लोगों को इन बातों का पता है। किंतु हमने इसे गलत तरीके से पेश किया। हमने उसे गलत समझा। हमें इस बात का एहसास नहीं हुआ कि उस ने हमारे दर्द ढोए और हमारें दु:ख को उठाए! जब हमने उसे क्रूस पर ह्रदय में दर्शन किए तो सोचा कि उसे अपने विद्रोह और गलतियों की सजा मिली।

''किंतु नहीं! वे तो हमारे अपराधों के कारण, अपने अधर्म कार्यो के कारण और इसके लिए ताकि हमें परमेश्वर से शांति मिले, ताकि हमें चंगाई मिले (पापों से)। सच्चाई यह है कि पहले हम भटक गए थे, जो अपनी मरजी से चल रहे थे और परमेश्वर ने हमारी अधर्मता को निष्पापी पर डाल दी'' (विलियम मेकडॉनल्ड, ***Believer's Bible Commentary,*** थॉमस नेलसन प्रकाशन, १९९५, पेज. ९७९)।

> फोर अवर गील्ट ही गेव अस पीस,
> फ्रोम अवर बोन्डेज गेव अस रीलीझ,
> अेंड वीथ हीस स्ट्राईपस, एँड वीथ हीज स्ट्राईप्स,
> अेंड वीथ हीस स्ट्राईपस अवर सॉलस आर हील्ड।
> (''ही वॉज वुंडेड'' थॉमस ओ. चिशोल्म, १८६६–१९६०)।

> ''निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया; *तो भी हमने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दश में पड़ा हुआ समझा*'' (यशायाह ५३:४)।

क्या आपको सही लगता है? क्या आप सोचते हैं कि यीशु कोई दूसरे कारण के लिए या फिर हमारे पापों को ढोने के लिए मरा? फिर तो अब जैसे आप जानते हैं कि मसीह आपके गुनाहों की सजा भुगतने मरा, तब क्या आप विश्वास से उन्हे मानेंगे? क्या आप परमेश्वर के पुत्र में विश्वास रखेंगे और उसके कीमती लहू से जायज और शुद्ध बनोगे?

मैं आप से कहता हूँ कि आप उसकी दुर्दशा और पीड़ा के विषय के हर गलत सोच को अपने दिमाग से हटा दे। उसने हमारे पापों की सजा भुगती है। वह मृत्यु के बाद जी उठा है। और अब वह स्वर्ग में परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर बैठा है। मैं आपसे कहता हूँ कि उस पर विश्वास करिए और पापों से उद्धार पाइए।

किंतु यीशु के बारे में इतना जानना काफी नहीं है। आप इन सब बातों को जान कर भी मसीह में नहीं हो सकते। आप यीशु के क्रूस के दर्दनाक मृत्यु के बारे में जानते होंगे; आप यह भी जानते होगे कि वह हम पापियों के स्थान पर मरा, फिर भी हम अपरिवर्तित रहे। पुर्नजीवित प्रभु मानकर यीशु मसीह में विश्वास आवश्यक है। आप उस पर विश्वास करे और उसकी शरण में आ जाएँ। वही उद्धार का मार्ग है। वही अनंत जीवन का दरवाजा है। अभी उस पर विश्वास करें, तुरंत ही आपको क्षमा मिलेगी और पापों से उद्धार मिलेगा।

> फोर अवर गील्ट ही गेव अस पीस,
> फ्रोम अवर बोन्डेज गेव अस रीलीझ,
> अेंड वीथ हीस स्ट्राईपस, एँड वीथ हीस स्ट्राईपस,
> अेंड वीथ हीस स्ट्राईपस अवर सॉल्स आर हील्ड।

आमीन।

रूपरेखा

# मसीह की पीड़ा – सही और गलत

(यशायाह ५३ से पाँचवा धर्मोपदेश)

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा

''निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया; तो भी हमने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दश में पड़ा हुआ समझा'' (यशायाह ५३:४)।

(मती ८:१७; लूका १७:१३,१४,१६,१९; यूहन्ना ९:१७,३८; १ पतरस २:२४)

I. प्रथम, मसीह की पीड़ा के सही कारण, यशायाह ५३:४अ, ५; १ कुरिन्थियों १५:३ के पवित्र वचन में दिए है।

II. दूसरा, मसीह की पीड़ा के गलत कारण जो अंध विश्वासियों ने दिए है यशायाह ५३:४ब में।

# यीशु जख्मी, घायल और पीटा गया

(यशायाह ५३ से छठवां संदेश)

**JESUS WOUNDED, BRUISED AND BEATEN**

**(SERMON NUMBER 6 ON ISAIAH 53)**

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

इस संदेश का प्रचार लोस एंजलिस में बप्तीस टबरनेकल में
मार्च २३, २०१२ को शनिवार की शाम हुआ था।
A sermon preached at the Baptist Tabernacle of Los Angeles
Saturday Evening, March 23, 2013

''परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया : हमारी ही श्शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी; कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चँगे हो जाएँ'' (यशायाह ५३:५)।

रोमियो की किताब के दो ग्रीक शब्दों का प्रयोग कर कुछ बातें जानना और उन बातों का पूरा ज्ञान प्राप्त करने में अंतर है। रोमिया १:२१ में कहा गया है कि पूर्वज ''परमेश्वर को जानते थे''। ''पहचान'' के लिए ग्रीक शब्द है ''ग्नोसीस''। इसका मतलब है उन्हे परमेश्वर के *बारे में* जानकारी थी। किंतु रोमियो १:२८ में कहा है कि उनको ''परमेश्वर की पहचान'' नहीं थी यहाँ ''पहचान'' शब्द के लिए ''एपीग्नोसिस'' का प्रयोग किया गया है। यह बताता है कि (जानने) ग्नोसीस शब्द को मजबूत रीति से दर्शाया गया है। (see W. E. Vine, ***An Expository Dictionary of New Testament Words,*** Revell, 1966, volume II, p. 301) हॉलाकि पूर्वज परमेश्वर के बारे में जानते थे (एपीग्नोसीस), उन्हे व्यक्तिगत रूप से मसीह की पहचान नहीं थी।

जब हम प्रभु भोज अध्यादेश की ओर ध्यान देते है, मैं सोचता हूँ कि दो ग्रीक श्शब्द का प्रयोग जो रोमियो के पहले अध्याय में किया है बताता है कि कई लोग हमें रोटी और प्याला लेते हुए देखते है, किंतु उसमें हिस्सा नहीं ले पाते क्योंकि उनका उद्धार नहीं हुआ है। उन्हे बाहरी और मानसिक रूप से प्रभु भोज क्या है इसका पता है किंतु वे मसीह का अनुभव नहीं कर पाते। उन्हे इसके बारे में जानकारी (''१ ग्नोसीस'') है किंतु मसीह की पहचान (एपीग्नोसीस) का ज्ञान नहीं है। उन्हे यीशु मसीह की यथार्थ में पहचान नहीं है।

हमारे संदेश का अर्थ ऐसा ही कुछ है। आपको शायद इसके शब्दो का बाहरी रूप से प्रयोग और मतलब मालूम होगा किंतु इसका गहरा अर्थ पता नहीं होगा, जो पूरी रीति से ''असरकारक प्रभाव'' पहुंचाता है (ibid.)। इसलिए मेरे संदेश का यही अर्थ है कि इसका गहरा मतलब आप तक पहुँचा सकूँ, इसी आशा के साथ कि इन शब्दों का ज्ञान आपको यीशु मसीह की ओर मानसिक रूप से, व्यक्तिगत रूप की और ले जाए।

''परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया : हमारी ही शान्ति

के लिये उस पर ताड़ना पड़ी; कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चँगे हो जाएँ'' (यशायाह ५३:५)।

यही वह वचन है जिसकी पकड़ से अगर आप आशा रखेंगे तो आप में परिवर्तन होगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि इससे आप दिमागी तौर से यीशु मसीह पर सच में भरोसा कर सकें – जो आपके पापों का जुर्माना भरने के लिए क्रूस पर मरा। यहाँ पर संदेश को तीन मुख्य हिस्सों में बाँटा गया है।

## I. पहला, मसीह हमारे गुनाहों के लिए जख्मी हुआ, हमारे अपराधों के लिए घायल हुआ।

''परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया...''
(यशायाह ५३:५)।

प्रथम शब्द ''परंतु'' चौथे वचन के अंत में दिए हुए *गलत सोच* के विरूद्ध में दर्शाया गया है, यह कि मसीह अपने ही पापों और मूर्खता के लिए मरा, और जबकि *हकीकत* में वह *हमारे* पापों के लिए मरा। डॉ. एडवर्ड जे. यंग पुराने नियम का विद्वान था। वह चीनी पासबान का निजी मित्र था। डॉ. तिमोथी लिन, भी पुराने नियम के प्रसिद्ध विद्वान थे। डॉ. यंग ने कहा है ''दूसरी बात पर जोर दिया जाता है कि सर्वनाम *वह* पहले बताया गया है, इसके विपरीत यह बताने लिए कि कि जो सही में सज़ा के योग्य थे, उसने अपराधी के पाप ढोए'' (एडवर्ड जे. यंग, पी.अेचडी., ***The Book of Isaiah,*** William B. Eerdmans Publishing Company, 1972, volume 3, p. 347)।

''*परन्तु वह* हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया...''
(यशायाह ५३:५)।

*''घायल'' शब्द अति महत्वपूर्ण है। डॉ. यंग ने कहा कि इसका हिब्रू शब्द है ''बेधना,* अक्सर इसका संबंध मृत्यु होने तक बेधते जाना'' है (यंग, ibid.)। हिब्रू शब्द का अर्थ है ''पीअर्ज़ थू'', ''बेधा गया'' (ibid.)। यह शब्द जकर्याह १२:१० में दिया गया है,

''तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात जिसे उन्होने बेधा है''
(जकर्याह १२:१०)।

यह मसीह के लिए स्पष्ट भविष्यद्वाणी है, जिसका सिर काँटो के ताज़ से बेधा गया, जिस के हाथ और पैरो को कीलो से ठोका गया था, जिस देह की पंजर को रोमी सिपाही ने भाले से बेधा था। जैसे प्रेरित यूहन्ना ने कहा है,

''परंतु सैनिकों में ये एक ने बरछे से पंजर बेधा, और उसमें से लहू और पानी निकला...ये बातें असलिए हुई कि पवित्रशास्त्र में

जो कहा गया वह पूरा हो...(यह) कहा है जिसे उन्हों ने बेधा है,
उस पर वे दृष्टि करेंगे'' (यूहन्ना १९:३४,३६,३७)।

और फिर संदेश कहता है, ''हमारे अपराधों के लिए घायल हुआ था'' (यशायाह ५३:५) ''घायल'' का हिब्रू शब्द है ''कुचला गया'' (यंग, ibid.) मसीह के कुचलने और घायल होने का प्रारंभ गेथसेमनी के बाग से हुआ, क्रूस पर चढ़ने की अगले दिन रात को जब यीशु,

''हार्दिक वेदना से...और उसका पसीना मानो लहू की बड़ी बड़ी
बूँदो के समान भूमि पर गिर रहा था'' (लूका २२:४४)।

गेथसेमनी के बाग में वह हमारे पापो के भार से जो उसे पर लादा था, कुचला गया।

कुछ ही घंटो में मसीह को मार–पीटकर घायल किया गया था, यह उसके क्रूस पर चढ़ने के पहले किया गया था फिर उसे भाले से भौंका गया था, किंतु कुचलने का गहरा अर्थ है पापों के नीचे दब जाना, प्रेरित पतरस ने कहा है,

''वह आप ही हमारें पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर
चढ़ गया...'' (१ पतरस २:२४)।

''परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह
हमारे *अधर्म के कामों* के कारण कुचला गया...''
(यशायाह ५३:५)।

डॉ. आईसेक ने अपने प्रसिद्ध स्तोत्र मे स्पष्टीकरण किया है,

वॉज़ इट फोर क्राईम देट आय हेड डन
ही ग्रोनड अपोन द ट्री?
अमेझींग पिटी? ग्रेस अननोन!
एंड लव बीयोंड डिग्री!
वेल माईट द सन इन डार्कनेस हाईड,
एंड व्हाट हिज ग्लोरीज़ इन,
*व्हेन क्राइस्ट, द माईटी मेकर, डाईड*
*फॉर मेन द क्रिचरस् सिन।*
("Alas! And Did My Saviour Bleed?"
by Isaac Watts, D.D. 1674-1748).

## ।।. दूसरा, मसीह हमारी जगह दंडित हुआ।

हमारे संदेश के तीसरे हिस्से की ओर ध्यान दे,

''परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह
हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया : *हमारी ही शान्ति
के लिये उस पर ताड़ना पड़ी...*'' (यशायाह ५३:५)।

मैं कई सालों तक बिना समझे इसे पढ़ता रहा। डॉ. डेलीट्ज़्झ ने भाषांतर किया, ''ताड़ना हमे शांति की ओर ले जाती है'' (C. F. Keil and F. Delitzsch, ***Commentary on the Old Testament,*** Eerdmans Publishing Company, 1973 reprint, volume VII, p. 319). ''यह हमारी शांति के लिए...हमारी भलाई के लिए, हमारी आशिषों के लिए, इनकी पीडाओं... ने हमें सुरक्षित रखा है'' (ibid). ''ताड़ना'' का अर्थ है ''सजा''। डॉ. यंग ने कहा है, ''कोई इस संदेश को नहीं समझ पा रहा है अगर उसका दावा है कि (मसीह) पर पड़ी ताड़ना प्रायश्चित का उदेश्य है'' (यंग, ibid., p. ३४९)। ''परमेश्वर का न्याय मसीह पर पड़ा—प्रायश्चित और पाप के विरूद्ध परमेश्वर का कोप। डॉ. जॉन गिल उन पदो के अर्थ पर गये जहाँ आधुनिक टिप्पणीकर्ता जाने से डरते है, जब उन्होनें ऐसा कहा, तो वह सही थे,

> हमारी शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पडी; कि उसके कोडे खाने से हमें शांति और हमारी सुलह परमेश्वर के साथ उससे हुई...जहाँ ईश्वरीय प्रकोप संतुष्ट है, न्याय से प्रभु संतुष्ट हुए, और शांति बनी रही (John Gill, D.D., ***An Exposition of the Old Testament,*** The Baptist Standard Bearer, 1989 reprint, vol. I, p. 312).

प्रेरित पौलुस ने मसीह की "propitiating" परमेश्वर के प्रकोप के बारे में कहा,

> ''यीशु मसीह—जिन पर परमेश्वर का प्रकोप उसके लहू के विश्वास द्वारा भुगतान किया गया'' (रोमियो ३:२४—२५)।

अलर्बट मिडलॅन ने ''भुगतान'' का अर्थ जो प्रेरित ने बताया है उसे गीत में समझाया,

> नो टंग केन टेल द रॉध ही बोर,
> द रॉध सो डयू टु मी;
> सीनस् जस्ट डेसर्ट; ही बोर इट ऑल,
> टु सेट द सिर्नस् फ्री।
>
> नाऊ नॉट अ सिंगल ड्रॉप रीमेंन्स;
> ''इटइज फीनीशड'', वॉज़् हीज क्राय;
> बाय वन इफेक्युएल ड्राट, ही ड्रेंक
> द कप ऑफ रॉध क्वाइट ड्राय।
> ("The Cup of Wrath" by Albert Midlane, 1825-1909).

मसीह को ताड़ना दी गयी, आपकी जगह सजा पायी, आपके पाप के लिए परमेश्वर के क्रोध का न्याय का तुष्टीकरण बना।

> ''हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी''
> (यशायाह ५३:५)।

## ।।।. तीसरा, मसीह ने उसके कोडों द्वारा हमारे पापों को चंगाई दी।

कृपया खडे होकर संदेश को जोर से पढिए, और अंतिम हिस्से पर खास ध्यान दे, ''और उसके कोडे खाने से हम चँगे हो गए''।

> ''परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया : हमारी ही श शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी; कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चँगे हो जाएँ'' (यशायाह ५३:५)।

आप बैठ सकते हैं।

''और उसके कोडे खाने से हम लोग चँगे हो गए।'' 'कोडे' शब्द का हिब्रू मतलब है ''ज़ख्मी'' (***Strong***). प्रेरित पतरस ने १ पतरस २:२४ में कहा है, पतरस ने 'कोडे' शब्द का भाषांतर किया है। मतलब है ''वार के निशान''(***Strong***) मैं मानता हूँ कि ''उसके कोडे खाने से हमें चंगाई मिली'' जो यशायाह ५३:५ है और १ पतरस २:२४ में यीशु के कोडे के बारे में बताया है। मैं निश्चित रूप से मानता हूँ कि खास करके मसीह के कोड़े मारे जाने के बारे में यह शब्द लिए है जिसे पीलातुस, जो रोम के राज्यपाल थे, के आदेश के अनुसार सैनिको ने किया था। मसीह को क्रूस पर चढ़ाने के कुछ ही देर पहले पवित्रशास्त्र कहता है,

> ''इस पर पिलातुस ने यीशु को कोड़े लगवाएँ'' (यूहन्ना १९:१)।

> ''इस पर उसने बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए'' (मती २७:२६)।

डबल्यू. ई. वाईन ने ग्रीक शब्द ''कोड़े लगवाकर'' के अनुवाद पर टिप्पणी करते कहा कि यह, ''मसीह द्वारा कोड़े की मार को सहन किया गया जो पीलातुस के आदेश से लगवाये गये थे'' बताता है। रोम की रीति से कोड़े लगवाना का अर्थ है मनुष्य को नंगी दशा में झुकी हुई स्थिति में स्तंभ के साथ बांधना...कोडे (फटकार) जो चमड़े की टुकड़े से बने हो जिसमें हड्डियों के तेज़ टुकड़े या लेड जोडा हो, जिससे दोनों आगे छाती के मांस और पीठ को फाडते है। यूसेवियस (इतिहास) शहीदों की इस प्रकार की पीड़ा के कारण मारे जाने की गवाही देता है'' (W. E. Vine, ***An Expository Dictionary of New Testament Words,*** Fleming H. Revell Company, 1966 reprint, volume III, pp. 327, 328). ''कोडे'' शब्द का प्रयोग यीशु ने उस पर आने वाली पीड़ा के बारे में बताते हुए भविष्यवाणी की, जब उसने कहा,

> ''देखो, हम येरूशलेम को जाते है; और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों को हाथ पकडवाया जाएगा, और वे उसको घात के योग्य ठहराएँगे। और उसको अन्य जातियों के हाथ सौपेंगे कि वे उसे ठट्ठो में उडाएँ, *और कोडे मारें,* और क्रूस पर चढ़ाएँ'' (मती २०:१८–१९)।

मसीह के कोडे के संदर्भ में स्पर्जन ने टिप्पणी दी :

> ठहरो, फिर देखो (यीशु) को रोम के स्तंभ के साथ बांधा गया, निर्दयता से कोडे मारे। भयंकर फटकार (कोडे की) सुनो, बहते हुए घाव देखो, और देखो देह की पीडा में तडपते हुए जबकि देह आशिषित है। फिर देखो उसके प्राण कि किस तरह मारा है। उसकी आत्मा पर पड़ती हुए फटकार सुनो, जब तक कि उसका आंतरित हृदय असहनीय जख्मों से पीडित हुआ, जो उसने हमारे लिए सहे ... बिना ध्यान भटकाए केवल इसी मकसद पर ध्यान लगाओ, और मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप और मैं उसकी अतुलनीय (यीशु की) पीडा के बारे में सोचे जब तक हमारे हृदय उसके आभारी प्रेम के लिए नहीं पिघले। (C. H. Spurgeon, "Christopathy," ***The Metropolitan Tubernacle Pulpit,*** Pilgrim Publications, 1976 reprint, volume XLIII, p. 13).

फिर स्पर्जन ने कहा कि हमारे ही पापों के लिए उसने कोडे खाये और वधस्तंभ पर चढ़ा। आपके और मेरे लिए उसने कोडों की फटकार खायी, और क्रूस पर चढ़ गया। स्पर्जन ने कहा,

> निश्चित हम भी उसके दु:ख के सहभागी थे। ओह! निश्चित रूप से कहते है, ''उसके कोडों से हमें चंगाई मिली''। आपने उसे मारा (फटकारा), प्रिय मित्र, आपने उसे घायल किया; इसलिए अब चुप मत रहो जब तक यह नहीं कहते कि, ''उसके कोडों खाने से मुझे चँगाई मिली।'' *उसकी (यीशु) पीड़ा का व्यक्तिगत (ज्ञान होना) चाहिए। जब हमें उसके कोडे खाने से चंगाई मिलती है (पापों से)।* हमें अवश्य...इस महान बलिदान को अपने हाथों लेना है, ताकि हम स्वीकारे (जो उसने हमारें लिए किया); यह हमारे लिए अभागी (भयंकर) बात है कि हम जाने कि मसीह (मारा गया), किंतु नहीं जानते है कि ''उसके कोडे खाने से चँगाई प्राप्त हुई है''...अगर परमेश्वर ने पाप को रोग के रूप में न देखा होता तो चंगाई की बात करना व्यर्थ है (ibid., p.14)...''उसके कोडों की फटकार से हमें चंगाई मिली''। यह अस्थायी उपाय नहीं है; यह दवाई है जो चंगाई (लाती है) और स्वास्थ्य लाती है जिससे हमारे प्राण संपूर्ण रीति से चंगे हो। जिससे अंत में हम परमेश्वर के सिंहासन के सामने अन्य पवित्र लोगों के साथ खडे हो (स्वर्गलोक में) ताकि मनुष्य (वहाँ के अन्य लोग के साथ) गाएँ ''उसके कोडे खाने से हमें चंगाई मिली है''। घायल मसीह की महिमा हो! सारा आदर, महिमा और अधिराज्य और आराधना सदा के लिए आपकी हो। वे सभी (पापों से चंगाई पाने वाले) कहे, ''आमीन और आमीन'' (ibid., p.21)।

> ''परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया : हमारी ही शान्ति

के लिये उस पर ताड़ना पड़ी; कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चँगे हो जाएँ'' (यशायाह ५३:५)।

मात्र इन बातों को जानने से उद्धार नहीं मिलता! *जब तक मसीह की पीड़ा की सच्चाई की तड़प आपकी हृदय में परिवर्तन न लाएँ!* यह संदेश आपके हृदय को छू ले। ये शब्द आपके हृदय को मसीह के लिए छू ले।

''परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया : हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी; कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चँगे हो जाएँ'' (यशायाह ५३:५)।

*इन शब्दों से आप को मसीह पर भरोसा हो, और हर पापों से चंगाई मिले,* ताकि आप कह सें, ''उसके कोडे खाने से मुझे पापों की पीडा से हमेशा के लिए चँगाई मिली है।'' आमीन।

## रूपरेखा

# यीशु जख्मी, घायल और पीटा गया

(यशायाह ५३ से छठवा संदेश)

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा

''परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया : हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी; कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चँगे हो जाएँ'' (यशायाह ५३:५)।

(रोमियों १:२१, २८)

I. पहला, मसीह हमारे गुनाहों के लिए जख्मी हुआ, हमारे अपराधों के लिए घायल हुआ, यशायाह ५३:५अ; जकर्याह १२:१०; यूहन्ना १९:३४,३६,३७; लूका २२:४४; १ पतरस २:२४।

II. दूसरा, मसीह हमारी जगह दंडित हुआ, यशायाह ५३:५ब, रोमियो ३:२४—२५।

III. तीसरा, मसीह ने उसके कोडों द्वारा हमारे पापों से चंगाई दी, यशायाह ५३:५सी; यूहन्ना १९:१; मत्ती २७:२६; २०:१८—१९।

# सार्वलौकिक पाप, विशेष पाप, और पाप के उपाय

( सातवां धर्मोपदेश यशायाह ५३ से)

**UNIVERSAL SIN, PARTICULAR SIN, AND THE CURE FOR SIN**

**(SERMON NUMBER 7 ON ISAIAH 53)**

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

इस संदेश का प्रचार लोस एंजलिस में बप्तीस टबरनेकल में
मार्च २४, २०१३ की सुबह को किया गया था।
A sermon preached at the Baptist Tabernacle of Los Angeles
Lord's Day Morning, March 24, 2013

''हम तो सबके सब भेंडो के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सबों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया'' (यशायाह ५३:६)।

डॉ. रीचर्ड लेंड जो Southern Baptist Convention's Ethics and Religious Liberty Commission के अध्यक्ष है। डॉ. लेंड जानते है कि हम ऐसी संस्कृति में जी रहे है, जो अद्‌भुत रीति से मसीहत की मूलभूत बातों से अनजान है। उन्होने कहा,

> अमेरिका में धर्म की घटी...के बारे में मैंने Time मासिक पत्र में लेख पढ़ा था। संदेश की समाप्ति पर एक दंपत्ति (सेवक) से मिलने आया और कहा, ''हमारा युवा बेटा जानना चाहता है कि क्रूस पर लटकने वाला व्यक्ति कौन है''। उन्हें नहीं पता था कि वह यीशु था और उन्हें क्रूस की जानकारी नहीं थी। ("The Man on the Plus Sign," ***World*** Magazine, August 1, 2009, page 24).

यह आश्चर्य की बात है कि कई लोगों को यीशु के बारे में और उन्होने क्या किया इस बारे में बहुत कम मालूम है। सबसे ज्यादा गलती हमारी कलेसियाओं में है जहाँ यीशु के बारे में बहुत ही कम बताया जाता है। किंतु हमारी कलीसिया में एक भी इतवार ऐसा नहीं जाता जहां आपको यीशु हमारें पापों के लिए क्रूस पर मरा सुनने को न मिलता हो! जब यीशु क्रूस पर मरा, उन्होने हमारे पाप ढोयें और उसे माफी दी। उन्होने हमारे पाप को धोने के लिए क्रूस पर अपना लहू बहाया। स्पर्जन (Spurgeon) ने कहा है, ''ऐसे कई प्रचारक है, जो यीशु के लहू के बारे में नहीं बोलते; मुझे उनके बारे में चिंतित होकर यही कहना है—*नेवर गो टू हीअर देम! नेवर लीसन टू देम!* (उन्हें कभी सुनने जाना नहीं) वह सेवकाई जिसमें लहू का प्रचार नहीं हो वह निर्जीव है, ऐसी निर्जीव सेवकाई किसी के लिए भी अच्छी नहीं है''। (C. H. Spurgeon, "Freedom Through Christ's Blood," August 2, 1874) यशायाह के ५३ वे अध्याय में मसीह ने हमारे पापों को ढोया यह बात कई बार दोहराई गई है।

''उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया'' (यशायाह ५३:४)।

''परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया''
(यशायाह ५३:५)।

''हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी''
(यशायाह ५३:५)।

''कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चँगे हो जाए''
(यशायाह ५३:५)।

''यहोवा ने हम सबों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया''
(यशायाह ५३:६)।

''मेरे ही अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी''
(यशायाह ५३:८)।

''जब वह अपना प्राण दोषबलि करे'' (यशायाह ५३:१०)।

''उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा''
(यशायाह ५३:११)।

''उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया'' (यशायाह ५३:१२)।

बार बार यशायाह ५३ अध्याय में कहा गया है कि मसीह ने हमारे पापों के लिए, सजा के भुगतान के रूप में अपने आप पर सारे अपराध और पीड़ा लाद ली।

किंतु अब, इस संदेश ने हमें नयी सोच दी है। यहाँ हमें *कारण* बताया गया है कि *मसीह को पीडा क्यों भुगतनी पडी, मसीह क्यों, जब कि वह खुद निर्दोष था, उसे मनुष्य के सारे अपराध ढोने पडे।*

''हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग किया; और यहोवा ने हम सबों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया'' (यशायाह ५३:६)।

पद स्वत: तीन मुद्धों में बाँटा गया है।

**I. पहला, सारे मानवजाति के पाप की सामान्य कबूलात।**

नबी ने कहा है,

''हम तो सबके सब भेडो के समान भटक गए थे...''
(यशायाह ५३:६)।

मनुष्य जाति के सार्वलौकिक पाप के संदर्भ में हमें यहाँ स्पष्टीकरण मिलता है। ''*हम तो सब के सब* भेडों के समान भटक गए थे।'' पौलुस प्रेरित ने स्पष्ट (यह बात) की है, जब उसने कहा,

> ''हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर यह दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप के वश में हैं। जैसा लिखा है : कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं।'' (रोमियों ३:९–११)।

''*हम तो सब के सब* भेडों के समान भटक गए थे,'' हम सभी!

जिस तरह भेडों ने परमेश्वर के नियम के बाड़े को तोडा है, और हम सब भटक गए थे, हम सभी परमेश्वर के मार्ग से भटक गए। पौलुस प्रेरित ने कहा,

> ''क्योंकि तुम पहले भटकी हुई भेडों के समान थे,''
> (१ पतरस २:२५)।

पतरस ने ग्रीक शब्द का प्रयोग किया है, इसका अर्थ है सुरक्षा और सत्य से भटक जाना, धोखा खाना ***(Strong)***। पवित्रशास्त्र में मानवजाति के लिए यही सार्वभौमिक वर्णन किया गया हैं।

> ''हम तो सब के सब भेडो के समान भटक गए थे''
> (यशायाह ५३:६)।

मानव की तुलना पशु से की है क्योंकि पाप ने उसे नीचे गिराया है–और वह पशु–जैसे बना है। परन्तु हमारी तुलना किसी बुद्धिमान प्राणी से नहीं की है। नहीं, मनुष्य की तुलना सरल दिमागी भेड़ से की है।

आप शहर में रहते हैं, तो शायद भेड़ की मूर्खता को नहीं जानते होंगे। किंतु पवित्रशास्त्र के समय में लोग भेड़ की मूर्खता को बिलकुल अच्छी तरह से जानते थे। चरवाहे उन की निगरानी बहुत ध्यान से करते थे, नहीं तो वे भटक जाती थी।

भेड़ों में एक मात्र अच्छी बात है–भटक जाना! अगर बाड़े में एक भी छेद हो तो, भेड़ ढूंढ लेगी और भटक जाएगी। यह भेड़ अगर एक बार बाहर निकल गयी तो वह वापसी का प्रयत्न भी नहीं करेगा। भेड़ सुरक्षित स्थान से दूर और दूर चला जाएगी। और मनुष्य भी ऐसा ही है। वह बुराई करने में होशियार है, और भलाई करने में मूर्ख है। जैसे ग्रीक की पौराणिक कथाओं के आरगस (Argus) के समान, मनुष्य में पाप को ढूँढने के लिए सौ आँखें है; किंतु बरतुल्मै (Bartimaeus) की तरह परमेश्वर को ढूँढने में अंधा है! पौलुस प्रेरित ने सार्वभौमिक पाप के रोग के बारे में कहा है,

> ''तुम लोग उस समय मसीह से अलग, और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे'' (इफिसियों २:१२)।

> ''क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है, और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है और उनके मनकी कठोरता के कारण, वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए है'' (इफिसियों ४:१८)।

ये वचन बताते है कि मनुष्य परमेश्वर से भटक गया है।

> ''हम तो सब के सब भेंडो के समान भटक गए थे...''
> (यशायाह ५३:६)।

फिर हमारे, संदेश में मानव जाति के पाप का सामान्य बयान दिया है। इससे पता चलता है कि मानव जाति परमेश्वर से दूर जाकर हजारों झूठे धर्म और झूठी सीख, मूर्तियों की पूजा, झूठे परमेश्वरों का और झूठे मसीहों में बस गई है। ''क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है, और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए है'' (इफिसियों ४:१८)।

## ।।. दूसरा, प्रत्येक मनुष्य का विशेष पाप का व्यक्तिगत बयान।

संदेश कहता है,

> ''हम तो सब के सब भेंडो के समान भटक गए थे; *हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया...*'' (यशायाह ५३:६)।

मनुष्य जाति के सामान्य पाप का बयान, प्रत्येक मनुष्य के विशेष पाप के व्यक्तिगत बयान से पीछे हट गया। ''हममें से हर एक ने *अपना अपना मार्ग लिया।*'' कोई भी अपने चुनाव से परमेश्वर की और नहीं मुड़ा। हर बात में मनुष्य ने ''अपने मार्ग'' का चुनाव किया। इसी में ही पाप छिपा है — *अपने आपसे मार्ग चुनना, परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध जाकर।* हम हमारे जीवन पर काबू पाना चाहते थे। हमें हमारी योजनाओं से चलना था। हम परमेश्वर के अधीन नहीं जाना चाहते थे। हम मसीह पर भरोसा नहीं करना चाहते थे और उसे परमेश्वर मानकर अधीन होना नहीं चाहते थे।

पद यह बताता है कि हर एक का विशेष पाप है, ''अपने *अपने मार्ग''*। हर पुरूष और स्त्री का मुख्य पाप है जो एक दूसरों से कुछ अलग है। दो बच्चें, जिन्हें एक ही माता पिता ने बड़ा किया हो, वे अलग होते है, उनके पाप अलग है। एक अपने हिसाब से पाप करेगा तो दूसरा अपनी रीति से। ''हम में से हर एक ने *अपना अपना मार्ग लिया।*'' एक दाहिनी ओर मुडता है, तो दूसरा बायीं ओर। परंतु दोनों भी परमेश्वर के मार्ग का अस्वीकार करते है।

मसीह के समय में, कई अधिकारी थे जो परमेश्वर के नियम के सख्त विरूद्ध में थे। ऐसे पापी थे जिन्होने परमेश्वर को अपने जीवन से अलग कर दिया था और शारीरिक पापों के अधीन हो गए थे। कई फरीसी थे, जो घमंडी और स्वधर्मी थे, दूसरों से अधिक अच्छा सोचते थे। कई सदूकी थे, जो स्वर्गदूतों और शैतान को नहीं मानते थे। जिन्होंने कोई शारीरिक पाप नहीं किये थे। वे अन्य अधिकारियों की तरह पाप से भरा जीवन नहीं

जीते थे, न ही फरीसियों की तरह अपने आपको ऊँचा मानते थे, परन्तु वे *अपनी रीति* से परमेश्वर की सच्चाई के विरोध में थे। हर एक के लिए कह सकते है,

> ''हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया''
> (यशायाह ५३:६)।

आप में से कई लोग मसीही घरो में बड़े हुए होंगे, फिर भी सुसमाचार की ज्योति का अस्वीकार करके पाप किया होगा। इसे ही कहते हैं ''अपना अपना मार्ग।'' दूसरे लोग कोई विशेष पाप के बारे में सोचते होंगे। जब आप को यह याद आता है, तब आप बुरी तरह परेशान होते है। फिर भी आपमें से कई लोग उस निरंतर अपराध के साथ जीना चाहते है न कि मसीह में विश्वास रखकर क्षमा और शांति पाना चाहते हैं। कई लोग मसीह में विश्वास करने के लिए बार बार मना करते हैं। ''हम में से हरएक ने अपना अपना मार्ग लिया।''

श्शायद कोई व्यक्ति कहे, ''मैंने हृदय को कठोर किया है। मैं दृढ विश्वास महसूस करता था कि मुझे मसीह की जरूरत है, किंतु अब नहीं। अब मुझे ड़र है कि प्रभु ने अपने प्रकोप में विचार किया है कि मैं उनके विश्राम में प्रवेश नहीं कर पाऊँगा। मुझे ड़र है कि परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया है।'' किंतु आप सभी शेष संदेश को ध्यानपूर्वक सुने, क्योंकि यहाँ पर तीसरा भाग है, जो बताता है कि अब भी आशा है!

## ।।।. तीसरा, स्थानापन्न, मसीह की विजयी मौत अपने लोगों के पापों के लिए।

कृपया खड़े हो जाएँ और पूरा वचन पढ़े, खास तौर पर आखिरी भाग पर ध्यान दे, ''और यहोवा ने हम सबों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।''

> ''हम तो सब के सब भेंडो के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; *और यहोवा ने हम सबों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया*'' (यशायाह ५३:६)।

आप बैठ सकते है। डॉ एडवर्ड जे. यंग ने कहा,

> पहला आधा वचन सेवक की पीडा के कारण बताता है, और शेष भाग बताता है कि परमेश्वर ने खुद हम सबों के अधर्म का बोझ उसी (पर) लाद दिया। क्रिया (लाद दिया) का मतलब *हिंसक रीति से मारना या फटकारना।* अधर्म के कार्य जिसकी वापसी में फटकार हमारे उपर आनी थी, परंतु (मसीह) ने उन अपराधों की फटकार हमारे (स्थान) पर ली। प्रभु (परमेश्वर) ने अपराध की फटकार को उस पर लादा...अपराध जो हमारा था परमेश्वर ने उसे फटकारा (अर्थात) हमारे पापों के अपराधों का दंड अपने आप पर लिया...चरवाहें ने अपनी भेडों के लिए अपनी जान दे दी। (Edward J. Young, Ph.D., ***The Book of Isaiah,*** Eerdmans, 1972, volume 3, pp. 349-350).

> ''हम तो सब के सब भेंडो के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; *और यहोवा ने हम सबों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया*'' (यशायाह ५३:६)।

एक संदेश का शीर्षक ''यीशु पर लादे गए व्यक्तिगत पाप,'' Spurgeon ने कहा है,

> ये है लूत के पाप, निंदनीय पाप। मैं उसे नहीं बता सकता, उसके पाप दाऊद के पापों से अलग थे। काले पाप, लाल पाप ये दाऊद के पाप थे, परन्तु दाऊद के पाप मनश्शे के समान नहीं थे; मनश्शे के पाप पतरस के पाप के समान न थे—पतरस ने कुछ अलग (तरीके) से पाप किए थे और वह स्त्री जो पापिन थी, पतरस की तुलना में वह आपको अच्छी नहीं लगेगी, न तो उसके चरित्र को देखकर लुदिया के साथ बराबरी करेंगे यह भी नहीं कि लुदिया के बारे में सोचते हुए फिलिप्पिन दारोगा को देख सको (दोनों में फर्क जानते हुए)। वे सभी समान है, सभी भटक गए है, किंतु वे सभी अलग है, वे सभी अपने अपने मार्ग पर भटक गए है; परन्तु...प्रभु ने (''अधर्मो का बोझ उसी पर लाद दिया'')..जब आप महान सुसमाचार रूपी दवाई के पास आएंगे, यीशु के अमूल्य लहू के पास, आप को जो मिलेगी...जिसे प्राचीन डॉक्टर कहते थे *केथोलिकॉन,* सर्वभौमिक दवाई जो हर रोग की दवा है...सभी पापों के दोष को दूर कर देती है मानो की वह उसी पाप के लिए बनी हो, सिर्फ उसी पाप के लिए (C. H. Spurgeon, "Individual Sin Laid on Jesus," ***The Metropolitan Tabernacle Pulpit,*** Pilgrim Publications, 1977 reprint, volume XVI, pp. 213-214).

मसीह पर भरोसा रखिए। मसीह के आधीन हो जाइए। उस पर भरोसा करेंगे, तो आपको शर्मिंदा नहीं होना पडेगा, क्योंकि ''परमेश्वर ने उस पर सारें अपराधों का बोझ लाद दिया।''

> गिल्टी, वाइल अेंड हेल्पलेस, वी;
> स्पॉटलेस लेंब ऑफ गॉड वॉज़ ही;
> ''फुल अटोनमेंट,'' केन इट बी?
> हाल्लेलुयाह! वॉट ए सेवियर!
> (''हाल्लेलुयाह! वॉट ए सेवियर!'' by Philip P. Bliss, 1838-1876)।

क्या आप यीशु पर भरोसा करेंगे? क्या आप उसके आधीन होकर, आत्मसमर्पण करेंगे और विश्वास करेंगे? उसके लहू से आपके पाप से शुद्ध हो जाएंगे, और क्रूस पर किये गए बलिदान के कारण न्याय से उद्धार पाएंगे? पिता परमेश्वर आपको सिर्फ मसीह पर भरोसा रखने के अनुग्रह से भर दें कि आप आत्मसमर्पण होकर उद्धार पाएँ!

सब मिलकर खडे हो जाएँ। यीशु मसीह पर विश्वास के बारे में अगर आप हमसे बात करना चाहते हैं, तो आप अपनी कुर्सी तुरंत छोडकर दाहिने से सभागृह के पिछवाडे की ओर जाईए। डॉ.कैगन आपको एकांत कमरे की ओर ले जाएँगे जहाँ हम मसीह को आत्मसमर्पण और उसके पवित्र लहू से आपके पापो को शुद्ध करने के बारे में बता सके! आमीन।

# रूपरेखा

## सार्वलौकिक पाप, विशेष पाप, और पाप के उपाय

( सातवां धर्मोपदेश यशायाह ५३ से)

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा

''हम तो सब के सब भेडों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सबों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया'' (यशायाह ५३:६)।

(यशायाह ५३:४, ५, ६, ८, १०, ११, १२)

I. पहला, मनुष्य जाति के पापों का सामान्य बयान, यशायाह ५३:६अ; रोमियो ३:९–११; १ पतरस २:२५; एफिसियों २:१२; ४:१८।

II. दूसरा, हरएक के विशेष पाप का व्यक्तिगत बयान, यशायाह ५३:६ब।

III. तीसरा, स्थानापन्न, मसीह की विजयी मौत अपने लोगों के पापों के लिए, यशायाह ५३:६क।

# मेम्ने की चुप्पी

(यशायाह ५३ से आठवाँ संदेश )

**THE SILENCE OF THE LAMB**

**(SERMON NUMBER 8 ON ISAIAH 53)**

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

इस संदेश का प्रचार लोस एंजलिस में बप्तीस टबरनेकल में
प्रभु का दिन मार्च २४, २०१३ शाम को किया गया था।
A sermon preached at the Baptist Tabernacle of Los Angeles
Lord's Day Evening, March 24, 2013

''वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरवेके समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला'' (यशायाह ५३:७)।

म्सीही शहीदों के अंतिम शब्द सुनने से प्रोत्साहित होते है। उनके अंतिम समय के श्शब्द सुनकर हमारे हृदय में उत्साह आता है। दूसरी सदी में पोलिकॅर्प नामक एक प्रचारक था। अंग्रेजी में उनका नाम पोलिकॅर्प था, लैटिन में पोलिकॅर्पस। पोलिकॅर्प प्रेरित यूहन्ना के विद्यार्थी थे। कई सालों बाद वे बुतपरस्त न्यायाधीश के सामने खडे थे, जिसने कहा, ''तुम बूढे हो, जरूरी नहीं है कि तुम मरो...श्शपथ खाओं और मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। 'प्रभु सीजर,' कहने में तुम्हें क्या दिक्कत है और धूप चढाने में? तुम्हें सीजर के नाम से शपथ लेनी है फिर मैं खुशी से तुम्हें छोड दूँगा। मसीह का इनकार करो और तुम जी जाओगे।''

पोलिकॅर्पस ने उत्तर दिया, ''छियासी वर्ष तक मैंने (मसीह) की सेवा की है, उसने मेरे साथ कुछ गलत नहीं किया। मैं मेरे राजा, जिसने मुझे बचाया है, उसकी निंदा कैसे करू?'' न्यायाधीश ने कहा, ''मैं तुम्हें आग से जलने की सजा दूँगा।'' पोलिकॅर्पस ने कहा, ''जिस आग की मुझे धमकी दे रहे हो वह मुझे घंटो में जला कर बुझ जाएगी। क्या आप जानते नहीं है कि भटके खोए हुओं पर आने वाले न्याय के अंतर्गत अनंत दंड की आग आने वाली है? किंतु आप क्यों देर कर रहे हो? आइए, जो चाहे कर लीजिए।''

इस पर न्यायाधीश ने संदेशवाहक से कार्यक्षेत्र में लोगो को घोषणा करवाई, ''पोलिकॅर्प ने मसीही होने का दावा किया है!'' ''उसे जिंदा जला दिया जाए!'' लोगों की भीड चिल्लाई। आग जलायी गयी। वधिक पोलिकॅर्प को खंभे से कीलों से ठोकने के लिए बढ़ा।पोलिकॅर्प ने शांतिपूर्वक कहा, ''मैं जिस तरह हूँ, मुझे वैसा ही छोड दो। जो मुझे आग को सहने की ताकत देता है, वही मुझे ज्वाला में तुम्हारी इच्छानुसार बिना हिले बिना कीलों के सहारे खड़े रहने की सामर्थ देगा।''

पोलिकॅर्प ने प्रार्थना के लिए अपनी आवाज़ उठायी, और स्तुति की कि ''वह प्राण देने योग्य था।'' आग जलायी गयी और उसकी चारों ओर ज्वाला प्रकटी। जब ज्वाला से उसका शरीर नहीं मुरझा, तो वधिक ने भाले से घोंपा। इस तरह पोलिकॅर्पस, स्मरना के पासबान और प्रेरित यूहन्ना के विद्यार्थी के जीवन का अंत हुआ (see James C. Hefley, ***Heroes of the Faith,*** Moody Press, 1963, pp. 12-14).

स्पर्जन ने "जेन बॉच्यर, हमारी यशस्वी बाप्टीस्ट शहीद के बारे में बताया...जब उसे क्रॉमनर और रिदली के समक्ष लाया गया था,'' इंग्लैंड की कलीसिया के दो बिशपों ने, इस बाप्टीस्ट को जलाने की सज़ा दी, यह कहकर कि जलाने से आसान मौत आती है। उसने उनको कहा, ''तुम्हारी तरह मैं भी मसीह की सच्ची सेविका हूँ; अगर आप अपनी असहाय बहन को मारेंगे, तो सावधान रहिए (संभलना) क्योंकि परमेश्वर आप पर रोम के भेडिए छोडेगा, और तुम्हें भी परमेश्वर की तरफ से भुगतना पडेगा।'' उसने कितना सही कहा था, ये दोनों व्यक्ति भी कुछ ही दिनों में शहीद हो गए! (see C. H. Spurgeon, "All-Sufficiency Magnified," ***The New Park Street Pulpit,*** volume VI, pp. 481-482).

हालाँकि पोलिकॅर्प और जेन बॉच्यर में कई सदियों का अंतर था अलग, किंतु उन्होंने बहुत ही मजबूत आस्था का बयान दिया था, जब उन्हें जलाया गया था। *तथापि प्रभु यीशु मसीह ने ऐसा नहीं किया जब उसे ताडना और मृत्यु की धमकी दी गई थी!* हाँ, उसने मुख्य याज़क से कहा था। हाँ, उसने रोम के राज्यपाल पोन्टीयस पाईलट से कहा था। किंतु जब उसे क्रूस पर कीलों से ठोक कर अर्ध मृत्युवस्था में छोडा था, नबी यशायाह, ने इस बात की बहुत ही अद्‌भुत रीति से वर्णन किया है कि वह चुप था!

> ''वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला'' (यशायाह ५३:७)।

*उसको पीटने पर भी उसने एक शब्द भी न कहा! क्रूस पर कीलों से ठोकने पर भी उसने एक शब्द न कहा!* चलिए, हम अपने संदेश को देखकर तीन प्रश्न गहराई से पूछकर उसके उत्तर जानते हैं।

## I. पहला, यह यीशु नामक व्यक्ति कौन था?

यह कौन था नबी ने जिसके बारे में बोला, यह कहकर,

> ''वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला..''? (यशायाह ५३:७)।

पवित्रशास्त्र हमें कहता है कि वह महिमा का प्रभु था, पवित्र त्रिएकत्व का दूसरा व्यक्ति था, परमेश्वर का पुत्र मानव रूप में! सिद्धांत कहता है, ''सही में परमेश्वर ही है।'' हमें यह कभी नहीं सोचना है कि यीशु मात्र मनुष्य रूप में शिक्षक या मात्र नबी था! उसने हमें उसके बारे में इसी रूप में सोचने के लिए गुंजाइश ही नहीं छोड़ी, क्योंकि उसने कहा,

> ''मैं और मेरे पिता एक है'' (यूहन्ना १०:३०)।

फिर से, उसने कहा,

> ''पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ : जो भी कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा''
> (यूहन्ना ११:२५)।

अगर कोई अन्य व्यक्ति ने यह कहा होता तो हम उसे शैतानी, ख्यालो में खोया हुआ, भटका हुआ धुनी या फिर पागल कहकर बुलाते! किंतु जब यीशु ने कहा कि वह और पिता परमेश्वर एक हैं, और उसने कहा, ''पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ,'' ऐसे शब्द, सुनकर हम ठिठक जाते हैं और, *हम में से सबसे खराब व्यक्ति भी ताज्जुब करेगा कि शायद वह बिलकुल सही तो नहीं बोल रहें हैं!*

हालाँकि मैं हमेशा C. H. Lewis के मतों पर सहमत नहीं होता हूँ, हम यीशु मसीह के ऊपर उनके प्रसिद्ध बयान से हम कैसे असहमत हो सकते है? C. H. Lewis ने कहा,

> लोग कई बार सच में उसके बारे में मूर्खता भरी बातें करते है, तो मैं उन्हें रोकने की कोशिश करता हूँ : ''मैं यीशु को महान नैतिक शिक्षक स्वीकार करता हूँ, किंतु अपने आपको परमेश्वर कहने की बात अस्वीकार करता हूँ।'' यह बात अवश्य हमें नहीं कहनी चाहिए। एक व्यक्ति मात्र एक आदमी ही है और कई तरह की बातें जो यीशु ने कही वह महान नैतिक शिक्षक नहीं हो सकता। वह या तो पागल हो सकता है—मनुष्य के स्तर से निम्न उतरकर जो कहता है वह पोच्ड अँडे जैसा है—या फिर नरक का शैतान होना चाहिए। चुनाव आपको करना है। या तो यह व्यक्ति था, और है परमेश्वर का पुत्र : या फिर पागल या उससे भी बद्तर। *आप उसे मूर्ख कहकर चुप करा सकते है, उस पर थूक कर, शैतान मान कर मार डाल सकते है; या तो आप उसके चरणों में गिरकर उसे प्रभु परमेश्वर कह सकते हो। किंतु उसे महान मानववादी शिक्षक कहकर उसके बारे में बकवास प्रस्तुत न करें। उसने इसके लिए गुंजाइश नहीं छोड़ी है। उसका यह उद्देश्य नहीं था* (C. S. Lewis, Ph.D., ***Mere Christianity,*** Harper Collins, 2001, p. 52).

''आप उस पर थूक कर, शैतान मान कर मार डाल सकते है; या तो आप उसके चरणों में गिरकर उसे प्रभु परमेश्वर कह सकते हो...आपको अवश्य ही चुनाव करना है,'' क्योंकि यीशु ने कहा है,

> ''मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ : बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता'' (यूहन्ना १४:६)।

यहां आप के लिए ठोस बात है! आप यीशु के साथ बौद्ध धर्म, हिन्दु धर्म या फिर इस्लाम धर्म नहीं मिला सकते क्योंकि यीशु ने ''हमारे लिए विकल्प खुला नहीं छोडा है। उसका यह उद्देश्य नहीं था।'' मसीह ने हमारे लिए कोई विकल्प नहीं छोडा है। उसने कहा, ''बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।'' जैसे सी. एस. लुईस ने कहा, ''तुम उसके ऊपर थूक सकते हो और मार डाल सकते हो...या तो उसके चरणों में गिरकर उसे प्रभु और परमेश्वर बुला सकते है...तुम्हें अवश्य चुनाव करना है।'' यह एक

या तो दूसरा। *वास्तव* में कोई भी इस पर तटस्थ नहीं है। वे शायद दिखावा करे, किंतु वे कभी भी तटस्थ नहीं रह पाए। ''उसने हमारे लिए विकल्प खुला नहीं छोडा है।''

## ।।. दूसरा, जिन्होने यीशु को सताया और मार डाला उनका प्रतिकार करने में वह नाकामयाब क्यों रहा?

ऐसा क्यों,

> ''वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला''? (यशायाह ५३:७)।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक Albert Einstein, मसीही होने पर भी उनने कहा,

> सही में यीशु की उपस्थिति को महसूस किए बिना कोई भी (चार) सुसमाचार को नहीं पढ़ सकता। उसका व्यक्तित्व हर शब्द में दिखाई देता है। ऐसे जीवन के साथ कोई काल्पनिकता नहीं है। (Albert Einstein, Ph.D., ***The Saturday Evening Post,*** October 26, 1929).

फिर भी फटकारे गए और क्रूस पर लटकाए गए यीशु ने कुछ नहीं कहा! जिन्होने उसे पीटा और मार डाला, उनके सामने प्रतिकार करने में मसीह क्यों नाकामयाब रहे? फ्रेंच दार्शनिक Rousseau, नास्तिक होने के बावजूद, अद्‌भुत रीति से उस प्रश्न के उत्तर तक गये जब उसने कहा,

> जब सोक्रेट्स एक दार्शनिक की तरह जिये और मर गए, यीशु जिये और मर गए परमेश्वर की तरह (Jean-Jacques Rousseau, French philosopher, 1712-1778).

*यीशु स्वयं ने प्रतिकार नहीं किया क्योंकि धरती पर आकर पीड़ा सहन करके क्रूस पर मरना उनका मकसद् था।* यीशु ने क्रूस पर चढ़ने के एक वर्ष पहले स्पष्ट किया था।

> ''उसी समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, अवश्य है कि मैं यरूशलेम को जाऊँ और पुरनियों, और प्रधान याजकों, और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दु:ख उठाऊँ, और मार डाला जाऊँ, और तीसरे दिन जी उठूँ'' (मती १६:२१)।

***The Applied New Testament Commentary*** कहता है,

> पतरस ने अभी कबूल किया था कि यीशु मसीह था, मसीह, जीवंत परमेश्वर का पुत्र (मरकुस ८:२९)। फिर भी (पतरस) नहीं समझ पाया कि मसीह धरती पर किस लिए आया था। अन्य यहूदियों की तरह उसने भी सोचा, जैसे कि, मसीह धरती का राजा बनने आया था। इसलिए, जब यीशु ने उससे कहा कि (उसे) बहुत कुछ सहन करना पडेगा और...मरना पडेगा। पतरस

> ने इसे स्वीकार नहीं किया। उसने इस बात को लेकर यीशु को डाँटा। यीशु ने यह भी कहा था तीन दिन के बाद (वह) जी उठेगा। यीशु को पता था, वह मात्र मरेगा ही नहीं किंतु तीसरे दिन मृत्यु से जी उठेगा। चेलों को यह बात बिल्कुल समझ नहीं आयी (Thomas Hale, ***The Applied New Testament Commentary,*** Kingsway Publications, 1996, pp. 260-261).

किंतु हमें समझना है, क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है,

> ''मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया'' (१ तीमुथियुस १:१५)।

उसकी मृत्यु द्वारा हमारे पाप क्रूस पर क्षमा हुए, और उसके पुनरूत्थान से हमें जीवन मिला। क्रूस पर फटकार खाने पर भी यीशु ने प्रतिकार के रूप में कुछ नहीं कहा क्योंकि उसने राज्यपाल पिलातुस को कहा था, ''मैंने इसीलिए जन्म लिया और इसलिए मैं संसार में आया हूँ'' (यूहन्ना १८:३७)।

## ।।।. तीसरा, यीशु के चुपचाप सहने के बारे में संदेश क्या कहता है?

कृपया खडे हो जाइए और यशायाह ५३:७ और एक बार जोर से पढ़े।

> ''वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला'' (यशायाह ५३:७)।

आप बैठ सकतें है।

''वह सताया गया, तो भी वह सहता रहा।'' डॉ. यंग कहते है कि इसका यह भाषांतर किया जा सकता है, '' वह स्वयं (अनुमति दी) पीड़ित हुआ।'' ''पीड़ित होने में स्वयं ने ही स्वेच्छा से कष्ट सहन किया...खुद के बचाव के लिए या विरोध में अपने मुँह से एक बात नहीं निकाली। इस विचार के बिना कि यहां (भविष्यवाणी) पूर्ण हो रही है कोई इसे नहीं पढ़ सकता, जब पीलातुस के न्याय आसन के सामने सच्चे सेवक ने एक शब्द नहीं कहा। 'जब वो निंदित हुआ, फिर से निंदित न होगा' [जब वह पीडित हुआ, वह ड़रा नहीं]'' (Edward J. Young, Ph.D., ***The Book of Isaiah,*** Eerdmans, 1972, volume 3, pp. 348-349).

> ''इस पर पीलातुस ने उसने कहा, क्या तू नहीं सुनता कि ये तेरे विरोध में कितनी गवाहियाँ दे रहे है? *परन्तु उसने उसको एक बात का भी* उत्तर *नहीं दिया;* यहाँ तक कि हाकिम को बड़ा आश्चर्य हुआ'' (मती २७:१३–१४)।

> ''प्रधान याजक उस पर बहुत बातों का दोष लगा रहे थे। *पर उसने कुछ जवाब नहीं दिया।* पिलातुस ने उससे फिर पूछा, क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता देख ये तुझ पर कितनी बातों का दोष

> लगाते है? *यीशु ने फिर कुछ उत्तर नहीं दिया;* यहाँ तक कि पिलातुस को बड़ा आश्चर्य हुआ (मरकुस १५:३–५)।
>
> ''वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला'' (यशायाह ५३:७)।

यशायाह में मसीह की तुलना मेंमने से की है। पुराने नियम में, लोग भेड़ को परमेश्वर के पास बलि चढ़ाने ले आते थे। भेड़ का वध होने से पहले उसका ऊन कतरते थे। कतरने के समय मेंमना चुपचाप शांत खडा रहता था। जैसे वध किया जानेवाला भेड़ कतरने और वध करने पर भी शांत रहता था, ''वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला'' (यशायाह ५३:७)।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यीशु की तुलना वध किये जानेवाले मेम्ने से की तब उसने कहा,

> ''देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (यूहन्ना १:२९)।

जब आप यीशु पर आस्था से भरोसा करते हैं, तब क्रूस पर किया हुआ बलिदान आपके सारे पाप का भुगतान कर देता है, और आप परमेश्वर के सामने निर्दोष खडे रहेंगे। तुम्हारे दोषों का प्रायश्चित उसकी क्रूस पर मृत्यु से हुआ है। वहाँ से बहते हुए उसके खून से तुम तुम्हारे पापों से शुद्ध हों गए हो।

डेविड़ ब्रेन्नर्ड, एक अमेरिकन भारतीय सेवक ने, इस सच्चाई की घोषणा अपनी सेवकाई से की। जैसे उसने अमेरिकन भारतीयों को प्रचार किया, उसने कहा, ''मैं कभी भी यीशु और उसके सूली पर चढ़ने से दूर नहीं गया। मुझे पता चल गया, कि पहले लोग जो इस महान पकड़ ... अर्थात उनके बदले मसीह के बलिदान के अर्थ को समझ जाते हैं फिर अपनी तरफ से मुझे उन्हें अपने बर्ताव को बदलने के लिए निर्देश नहीं देने पड़ते हैं'' (Paul Lee Tan, ThD., ***Encyclopedia of 7,700 Illustrations,*** Assurance Publishers, 1979, p. 238).

मैं जानता हूँ कि आज भी यह सही है। जब आप देखेंगे कि

> ''पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया'' (१ कुरिन्थियों १५:३)।

और एक बार आप सूली पर चढ़कर मरनेवाले और जी उठनेवाले मुक्तिदाता की शरण में आ जाते हैं तो, आप मसीही हो। इसकी तुलना में शेष बातें समझाने और समझने में आसान है। *मसीह पर आस्था से विश्वास कीजिए और आप बच जाएंगे!*

अपनी मृत्यु के समय, स्पर्जन ने कहा, ''मैंने चार छोटे शब्दों में धर्मशास्त्र जाना है – '*यीशु मेरे* लिए मरा।' अगर मुझे फिर से उठना पडे तो मात्र यही प्रचार नहीं करूँगा किंतु इसी बात पर मरना बेहतर रहेगा। *यीशु मेरे* लिए मरा'' (Tan, ibid.) क्या *आप* कह सकते हैं? क्या आप कह सकते हैं, ''यीशु मेरे लिए मरा''? अगर नहीं, तो क्या आज

रात आप जी उठनेवाले मुक्तिदाता की शरण में आकर विश्वास करेंगे? क्या आप कहेंगे, ''यीशु मेरे लिए मरा, मैं पूर्ण उद्धार के लिए भरोसा करते हुए जो उसके लहू और धार्मिकता से मिलता है स्वयं को उसे सौंप देता हूँ ''? यह करने के लिए परमेश्वर आपको सरल विश्वास दे। आमीन।

कृपया खडे हो जाएँ और भजनपत्रिका से छठवां गीत गाईए, ''अेंड केन इट बी?'' चार्ल्स वेस्ली द्वारा।

एँड केन इट बी देट आय शुड गेन
एन इंटरेस्ट इन द सेवियर्स ब्लड?
डाईड ही फॉर मी, हु कोस्ड हीज पेन?
फॉर मी, हु हीम टु डेथ परस्यूड?
अमेजिंग लव! हाऊ केन इट बी,
देट दाऊ, माय गॉड, शुडस्ट डाई फॉर मी?
अमेजिं लव! हाऊ केन इट बी,
देट दाऊ, माय गॉड, शुडस्ट डाई फॉर मी?
(''एँड केन इट बी?'' by Charles Wesley, 1707-1788)।

अगर आपको विश्वास हो गया है कि यीशु आपके पाप को माफ कर सकता है और आपकी आत्मा को बचा सकता है, हम आप से मसीही बनने के बारे में बात करना चाहेंगे। कृपया आप अपने स्थान को छोडकर पीछे स्थित कमरे में जाईए। डॉ. कैगन आपको शांत स्थान की ओर ले जाएँगे जहाँ आप बात कर सकें। अभी सभागृह के पीछे स्थित कमरे में जाईए। आमीन।

## रूपरेखा

# मेम्ने की चुप्पी

(यशायाह ५३ से आठवाँ संदेश )

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा

''वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला'' (यशायाह ५३:७)।

I. पहला, यह यीशु नामक व्यक्ति कौन था? यूहन्ना १०:३०; ११:२५; यूहन्ना १४:६।
II. दूसरा, जिन्होने यीशु को सताया और मार डाला उनका प्रतिकार करने में वह नाकामयाब क्यों रहा? मती १६:२१; १ तीमुथियुस १:१५; यूहन्ना १८:३७।
III. तीसरा, यीशु के चुपचाप सहने के बारे में संदेश क्या कहता है? मती २७:१३—१४; मरकूस १५:३—५; यूहन्ना १:२९; १ कुरिन्थियों १५:३।

# प्रायश्चित का विवरण

(नौवा संदेश यशायाह ५३ से)

# A DESCRIPTION OF THE ATONEMENT

**(SERMON NUMBER 9 ON ISAIAH 53)**

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

इस संदेश का प्रचार लोस एंजलिस में बप्तीस टबरनेकल में
प्रभु का दिन अप्रैल ७, २०१३ सुबह किया गया था।
A sermon preached at the Baptist Tabernacle of Los Angeles
Lord's Day Morning, April 7, 2013

> ''अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए : उस समय के लोगों में से किसने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी'' (यशायाह ५३:८)।

इसके पहले वचन में यशायाह ने मसीह की चुप्पी के संदर्भ में कहा,

> ''वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला, जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला'' (यशायाह ५३:७)।

डॉ. एडवर्ड जे. यंग ने कहा, ''मसीह ने अपनी पीड़ा को शांतिपूर्वक धीरजता से के साथ सहा, अब यशायाह नबी ने उसी पीड़ा का अधिक विवरण किया है'' (Edward J. Young, Ph.D., ***The Book of Isaiah,*** Eerdmans, 1972, volume 3, p. 351).

> ''अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए : उस समय के लोगों में से किसने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवंतो के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी'' (यशायाह ५३:८)।

प्राकृतिक रूप से वचन का तीन हिस्सों में वर्णन किया गया है। (१) मसीह की पीड़ा, (२) मसीह की पीढ़ी, (३) हमारें पापों के लिए मसीह का प्रायश्चित

## I. पहला, यह संदेश मसीह की पीड़ा का वर्णन करता है।

> ''अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए...वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया'' (यशायाह ५३:८)।

मसीह को गेथसेमनी के बाग से कैद कर लिया गया। मंदिर के पहरूए उन्हे प्रधानयाजक के पास ले गए। वे उन्हें महायाजक, काइफा और पुरनियों और यहूदी महासभा के सामने खडे किए गए। झूठी गवाहियों को पेश करके उन्हे दोषी ठहराया। यीशु ने कहा,

> ''अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिनी और बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे''
> (मती २६:६४)।

इस पर महायाजक ने कहा,

> ''तुम क्या सोचते हो? उन्होने (पुरनियों) उत्तर दिया, यह वध होने के योग्य है। तब उन्होने उसके मुँह पर थूका और घूँसे मारे, दूसरों ने थप्पड मार के कहा'' (मती २६:६६–६७)।

> ''जब भोर हुई तो सब प्रधान याजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु को मार डालने की सम्मति की'' (मती २७:१)।

किंतु ऐसा करने के लिए रोमी कानून के अनुसार उन्हें कानूनी अधिकार नहीं था, इसलिए,

> ''ले जाकर पिलातुस हाकिम (रोमियों) के हाथ में सौंप दिया''
> (मती २७:२)।

पिलातुस ने यीशु से प्रश्न पूछा,

> ''और यीशु को कोडे लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए'' (मती २७:२६)।

इस तरह इस भाग का संदेश पूरा हुआ,

> ''अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए (before the high priest, and then before Pilate)... वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया (by his death on the Cross)''
> (यशायाह ५३:८)।

यहूदी पुरनियों और पिलातुस द्वारा दिया हुआ यीशु का कारावास इन शब्दों से पूरा हुआ, ''वह कारावास से ले जाया गया।'' पहले कईफा के सामने और बाद में पिलातुस के सामने परीक्षण किया गया यहां यह वचन पूर्ण हुआ, ''और निर्णय से।'' उसे कारावास से निर्णय देने तक, वहाँ से कलवरी की पहाड़ी पर, जहाँ उसे क्रूस पर चढ़ा कर मार दिया गया, इस प्रकार यह कथन पूरा हुआ, ''वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया।''

डॉ. जॉन गिल (१६९७–१७७१) ने कहा,

> *उसे संकट और निर्णय क्षमता से ले जाया गया;* सही में, हिंसक रीति से उसे जीवन से दूर किया गया, न्याय के बहाने; जहाँ कि (सही में) उसके साथ (सबसे बुरा) अन्याय हुआ था; उसके विरोध में गलत इलजाम लगाया गया, झूठी गवाही (घूस देकर झूठी शपथ लेकर, इस तरह उसके विरोध में झूठी गवाही पेश की गई), और दुष्ट हाथों से उसकी जान ली गई (दिया हुआ है) प्रेरितों ८:३२, (''वह भेड़ के समान वध होने को पहुँचाया गया, और जैसा मेम्ना अपने ऊन कतरनेवालों के सामने (चुपचाप) रहता है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला'')। *उसके निरादर में उसे अपने फैसले से भी दूर कर दिया गया था :* उसे आम न्याय भी (प्राप्त नहीं) हुआ (John Gill, D.D., ***An Exposition of the Old Testament,*** The Baptisit Standard Bearer, 1989 reprint, volume V, p. 314).

और हमारा संदेश कहता है,

> ''अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए...वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया'' (यशायाह ५३:८)।

## ।।. दूसरा, यह संदेश मसीह की पीढ़ी का विवरण करता है।

पद के मध्य का संदेश समझने में थोडा कठिन है,

> ''अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए : *उसकी पीढ़ी को कौन घोषित करेगा?* वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया...'' (यशायाह ५३:८)।

''उसकी पीढ़ी को कौन घोषित करेगा?'' डॉ. गिल ने कहा कि यह वाक्यांश कहता है ''(जिस पीढ़ी में वह जीवित रहा) उस युग में जो लोग उसके साथ रहे, उनकी उसके साथ दुष्टता, उनकी पाशविकता का दोष, यह सब बातें जो मुँह से नहीं कही जा सकती, या पूर्ण रीति से मनुष्य की कलम से नहीं लिखी जा सकती थी'' (Gill, ibid.). जब हम निर्दोष परमेश्वर के पुत्र के साथ हुई दुष्टता और अन्याय की बातें के बारे में पढ़ते है, ये हमारे हृदय को रूला देती है! जैसे जॉसेफ हार्ट (१७१२–१७६८) ने इस बात को दु:खभरे गीत में पेश किया है,

> सी हाउ पेशंट जीसस स्टेंडस्,
> इनसल्टेड इन (दिस ऑवफुल प्लेस)!
> सीनर्स् हेव बाऊन्ड द ऑलमाईटी हेंडस्,
> अेंड स्पीट इन देयर क्रीयेटर्स फेस।
>
> वीथ थोर्नस् हीस टेंपल गोरड् एंड गेशड्,
> सेंड स्ट्रीमस् ऑफ ब्लड टू एवरी पार्ट,
> हीस बेक वीथ क्नोटेढ स्कोरजीस लेशड्,
> बट शार्पर स्कोरजीस टेर हीस हार्ट।

नेइल्ड नेकेड टू द अकरसड् वुड,
एक्सपोस्ड टु अर्थ एंड हेवन अबोव,
अ स्पेक्टेकल ऑफ वूंडस् एंड ब्लड,
अ प्रोडीजी ऑफ इनज्योर्ड लव!
("His Passion" by Joseph Hart, 1712-1768; altered by the Pastor;
to the tune of "'Tis Midnight, and on Olive's Brow").

जॉन ट्रेप (१६०१—१६६९) ने कहा, ''इस पीढ़ी को कौन बतायेगा या कहेगा? (कौन वर्णन करेगा) जिस समय में वह रहा उस समय के लोगों की दुष्टता ?'' (John Trapp, ***A Commentary on the Old and New Testaments,*** Transki Publications, 1997 reprint, volume 3, p. 410).

मनवीय तौर से समझाना कठिन है, कि यहूदी अगुवे यीशु को वधस्तंभ (क्रूस) पर क्यों मारना चाहते थे और रोमी सिपाही, ''वे उसके सिर पर सरकण्डे मारते, और उस पर थूकते...उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए बाहर ले गए'' (मरकूस १५:१९—२०)।

''उन्होने मार डालने के योग्य कोई दोष उसमें न पाया, तौभी पिलातुस ने विनती की कि वह मार डाला जाए''
(प्रेरितों १३:२८)।

जैसे जॉन ट्रेप ने कहा, ''कौन उसकी पीढी को बताएगा या कहेगा?...उस समय के लोगों की दुष्टता को जब वह जीवित था।''

''अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए : *उसकी पीढ़ी को* कौन *घोषित करेगा?* वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया...'' (यशायाह ५३:८)।

डॉ. यंग ने कहा, ''क्रियापद (घोषित) शब्द मनन करने या फिर कुछ गंभीर विचार करने योग्य है...उन्होने इस पर विचार करना (उनकी मृत्यु के अर्थ में) था, किंतु उन्होने नहीं किया'' (Young, ibid., p. 352).

आज भी तो यह किसी भी तरह से कैसे अलग है? लाखों लोंगो ने यीशु की क्रूस पर की मृत्यु के बारे में सुनकर भी गंभीर विचार नहीं किया। ''उन्होनें इस पर सोचना था, किंतु नहीं सोचा।'' मसीह की क्रूस पर की मृत्यु को किसने गहराई से सोचा है? क्या *आपने?* मसीह की मृत्यु के बारे में सोचने के लिए क्या आप थोडा समय निकालोगे? और आपके लिए इसके क्या मायने है?

''कौन कर सकता है...उसकी पीढ़ी का वर्णन?...उस समय में जब वह जीवित था उन लोगों की दुष्टता का वर्णन,'' जॉन ट्रेप ने कहा। और अभी तक लोग जिन्होने यीशु को क्रूस पर चढाया वे सचमुच आज के बहुतायत अपरिवर्तित लोग जैसे ही थे। आज लोग मसीह की मृत्यु के महत्व के बारे में गंभीरता से सोचना नहीं चाहते है। जब फिल्म "The Passion of the Christ" थियेटर में लगी तब समाचार टीकाकारों ने कहा कि जिन्होने इस फिल्म को देखा है उन पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ना चाहिए था। उन्होने कहा कि सुसमाचार के पुनरूद्धार से आत्मिक जाग्रति की लौ फैल जाएगी। उनमें से कई लोगों ने कहा युवा लोगों की भारी भीड़ कलीसियाओं में आने का कारण बनेगी।

यह फिल्म (चलचित्र) २००४ में आई। नौ साल पहले। वे टीकाकार सही थे श्या नहीं जानने के लिए हमें काफी समय मिला था। मसीह की पीड़ा की भयानक सच्चाई जो फिल्म में बताई गई उसका असर मनोवैज्ञानिक रूप से कई पर हुआ जिन्होने पिक्चर देखी थी। किंतु अब हम देख सकते है कि उसका असर उन पर बहुत समय तक नहीं रहा। वे सभी फिर से स्वार्थ से भर गए और पाप से भरा जीवन जीने लगे।

आप देखिए, यही तो पाप का मूल उदेश्य है। अपरिवर्तित लोग मसीह की पीड़ा का मात्र थोडा सा दु:ख अनुभव कर सकते है। किंतु ज्यादा से ज्यादा ये मामूली सा पछतावा है। वे वापस घंटो तक "surfing the net" अधिक पैसे की लालच पर लौट गए, परमेश्वरविहीन जीना, अंतहीन वीडियो गेम्स, रविवार को कलीसिया से गायब रहना, परमेश्वर के बारे में बहुत ही कम सोचना जिसने उन्हें बनाया है और मसीह जो पीडित होकर उन्हे बचाने के लिए मरा। ''कौन उसकी पीढ़ी का वर्णन कर सकता है?'' क्यों, वह पीढ़ी जब यीशु क्रूस पर मारा गया, वास्तव में आज की पीढ़ी के समान ही है! कितने सारे स्वप्रेमी, नास्तिक और ऐसे लोग जिनके लिए पापमय आनंद से बढ़कर कुछ नहीं था। क्या यह चित्र आपकी पीढ़ी से मिलता जुलता नहीं है? और अगर आप अपने में ईमानदार हैं तो क्या यह आप ही का चित्र विवरण नहीं है? आखिर में आप परमेश्वर के बारे में सोचने में कितना समय व्यतित करते हैं? हर रोज आप कितना समय प्रार्थना में बिताते हैं? वध स्तंभ पर मसीह के बहते खून का आप के हर रोज के जीवन पर कितना असर हुआ है? यदि आप अपने आप में ईमानदार है, मैं सोचता हूँ कि सही अर्थ में आप उस पीढ़ी से कुछ अलग नहीं हैं जिन्होने मसीह का अस्वीकार किया, उन्हें क्रूस पर चढ़ाया और अपने स्वार्थी जीवन में रहने लगे। यही है पाप का सार। यही है पाप का स्वभाव। यही साबित करता है कि आप पापी हो, और यह कि आप भी मसीह के समय के लोगों की तरह दोषी हो। अगर आप यहाँ हर रविवार को कलीसिया में आते हैं, आप मात्र ''भक्ति का दिखावा'' करते हैं (२ तीमुथियुस ३:५)। क्या आपके लिए सही नहीं है? इसलिए कि सबने ''पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं''? (रोमियों ३:२३)। जब यह सारी चीजें आपके लिए सही है, तो फिर आप सर्वशक्तिमान परमेश्वर के क्रोध और फैसलें से कैसे बच सकते हो? रीव. ईयान एच. मुरेए, उनकी आज की किताब ओन द लाईफ ऑफ डॉ. मार्टीन लॉयड–जोन्स, में कहा है,

> डॉ. लॉयड–जोन्स के लिए परमेश्वर के सामने मनुष्य के पापी होने के अर्थ का प्रचार अर्थात ईश्वरीय प्रकोप का प्रचार करना, प्रकोप जो अपरिवर्तित लोगों पर है जो पापों की सजा के रूप में नर्क में आनेवाला है...यह ऐसी जगह 'जहाँ उनके कीडे मरते नहीं और आग बुझती नहीं' (Iain H. Murray, ***The Life of Martyn Lloyd-Jones,*** The Banner of Truth Trust, 2013, p. 317).

### ।।।. तीसरा, यह संदेश मसीह की पीड़ा का गहराई में वर्णन करता है।

कृपया खडे हो जाइए और यशायाह ५३:८ जोर से पढिए, अंतिम वाक्यांश को खास ध्यान में रखते हुए, ''मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी।''

> ''अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए : उस समय के लोगों में से किसने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया? *मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी''* (यशायाह ५३:८)।

आप बैठ सकते है।

डॉ. मेरील एफ. उन्गर ने कहा,

> सत्रह सदी तक (मसीह का खुलासा यशायाह ५३ से) *मात्र* यही एक, मसीह का खुलासा मसीही और यहूदी अधिकारीयों के बीच में था। (बाद में यहूदी) जानबूझकर इस अध्याय के अभिप्राय को अस्वीकार किया क्योंकि उसमें मसीह की अद्‌भुत संपूर्णता बताई है। (Unger, ibid., p. 1293).

आज कई यहूदी पंडित कहते है कि यशायाह का तेप्पनवा अध्याय यहूदी लोगों की पीड़ा का वर्णन करता है न कि मसीह की। हालांकि यहूदी लोग झूठे मसीही लोगो के हाथ भयंकर रीति से पीडित हुए थे, यह हमारे संदेश का उद्देश्य नहीं हो सकता, क्योंकि यह साफ कहता है, ''मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पडी'' (यशायाह ५३:८)। यह वाक्यांश, ''मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पडी,'' डॉ. हेन्री एम. मोरीस ने कहा, ''वह *'मेरे लोगों'* के लिए मरा – मतलब है इजरायेल–इस मुद्दे में (मसीह) इज़राईल नहीं, जैसा कि कई लोग आरोप लगाते हैं'' (Henry M. Morris, Ph.D., ***The Defender's Study Bible,*** Word Publishing, 1995, p. 767). इस प्रकार, सही अर्थ में यहूदी लोग जो पीड़ित नहीं हुए थे, लेकिन बजाय मसीह उनके स्थान पर पीड़ित हुआ, उनके अपराधों के लिए, उनके अपराधों की सज़ा भुगतने के लिए *और हमारी भी।* अपने पाप की सज़ा के भुगतान के रूप में उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था।

डॉ. जॉन गिल ने इन शब्दों में कहा, ''मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पडी,'' यह यहूदी लोगों की और चुने हुए मसीही लोगों पर लागू करे – यह बताते हुए कि मसीह दोनों के लिए इज़राईल के अपराधों के लिए और ''उनके लोगों'' के लिए जो मसीही हैं, पीड़ित हुआ (Gill, ibid., p. 314). मेरे खयाल से डॉ. गिल ने उन शब्दों का सही मतलब निकाला है,

> ''मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पडी''
> (यशायाह ५३:८)।

मसीह उनके लोगों के अपराधों के लिए क्रूस पर पीड़ित हुआ, चाहे वे यहूदी या अन्यजातियों के हो। उनकी मृत्यु दूसरों के लिए हुई, मसीह की मृत्यु हमारे अपराधों का जुर्माना है। परमेश्वर के क्रोध को हमारे अपराधों की ओर से मोड़ लाना, यह तसल्ली बख्शने जैसा है।

किन्तु यहाँ एक शर्त है। जैसे मसीह ने सफलता से हमारे अपराधों का जुर्माना भरा है, आपको उन पर आस्था से भरोसा करना ही चाहिए। मसीह के द्वारा भरा हुआ आपके अपराधों का जुर्माना आपको नहीं बचा पाएगा अगर कोई यीशु पर विश्वास करने

में असफल रहे। यह तभी होगा जब आप यीशु की शरण में आएंगे जिससे आपके सारे पाप परमेश्वर के लेखे में से तारनहार के लहू के कारण मिट जाएँगे।

आप इस वचन की सारी बातें जानकर भी भटके हुए रह सकते हैं। शैतान को इस बात की पूरी समझ है, फिर भी वह उन्हें नहीं बचाता। प्रचारक याकूब कहा, ''दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं'' (याकूब २:१९)। मसीह की पीड़ित मृत्यु के बारे में, शैतान को मात्र ''दिमागी ज्ञान'' है। आपको उससे आगे जाना है अगर आप बचना चाहते हैं। सच में आपको मसीह की शरण में आकर उस पर भरोसा करना है। परमेश्वर के अनुग्रह के कार्य से आप को परिवर्तित होना है, नहीं तो उसके क्रूस के विचारों को लिए हुए आप नर्क में जाएंगे।

डॉ. ऐ. डब्लू. टोझर को सुनिए जैसा वे बताते है जब वह ''निश्चयवाद'' के विरोध में और सही रूपांतरण के पक्ष में बोलते हैं। डॉ. टोझर ने कहा,

> धार्मिक रूपांतरण यांत्रिक और आत्महीन लेन देन बन गया है। संघर्षरहित आस्था अदममय अहंकार के लिए शर्मिंदगी का अनुभव किए बिना विश्वास का प्रयोग अब कर सकते है। मसीह को ''अपनाया'' जा सकता है उनको पाने वाले की आत्मा में बिना उनके प्रेम को ग्रहण किए (A. W. Tozer, D.D., ***The Best of A. W. Tozer,*** Baker Book House, 1979, page 14).

''धार्मिक रूपांतरण का पूरा लेन देन यांत्रिक और आत्महीन बनाया गया है'' — *और* मैं इसमें जोड़ सकता हूं कि यह अक्सर मसीहरहित होता है! ''निर्णायक'' बस आपको उनके लिए झट से छोटी प्रार्थना, बाप्तीस्मा, और इस प्रक्रिया से ले जाना चाहते है। कईबार मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान के बारे में बताया नहीं जाता है। कई बार इन बातों को पूरी तरह से छोड़ दिया जाता है! पवित्रशास्त्र ऐसा *नहीं* सिखाता है। पवित्रशास्त्र सिखाता है कि आपके पापों के दोष का एहसास होना चाहिए और अपने पाप के छुटकारे का, और उसके परिणाम का कोई मार्ग सिवाय मसीह के पास असहाय होकर उसकी शरण में आने में, बिलकुल अंत:करण से उस पर भरोसा रखकर आने के अलावा दूसरा नहीं है। तब और तभी आप नबी यशायाह ने जो कहा था उसका अनुभव करेंगे जब उसने कहा,

> ''मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पडी''
> (यशायाह ५३:८)।

जब आप विश्वास से यीशु पर भरोसा करेंगे, उसका लहू आपके सारे पाप धो लेगा और आप में रूपांतरण होगा—उसके पहले नहीं होगा। नहीं यह होने के पहले *कभी नहीं*! अगर आप बचना चाहते है तो आपको यीशु मसीह पर भरोसा रखना ही है!

चलिए, मिलकर खडे हो जाएँ। अगर आप यीशु पर विश्वास के बारे में हमसे बात करना चाहते है तो कृपया करके अभी अपने स्थान को छोडकर दाहिनी ओर सभागृह के पिछवाडे जाईए। डॉ. कैगन आपको एकांत कमरे में ले जाएँगे, जहाँ हम मसीह को समर्पण और उनके पवित्र लहू से पाप से शुद्ध होने की बातें करेंगे! आमीन।

# रूपरेखा

## प्रायश्चित का विवरण

(नौवा संदेश यशायाह ५३ से)

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा

''अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए : उस समय के लोगों में से किसने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी'' (यशायाह ५३:८)।

(यशायाह ५३:७)।

I. पहला, यह भाग मसीह की पीड़ा का वर्णन देती है, यशायाह ५३:८अ; मती २६:६४, ६६–६७; २७:१–२, २६; प्रेरितो ८:३२।

II. दूसरा, यह भाग मसीह की पीढ़ी का वर्णन देती है, यशायाह ५३:८ब; मरकूस १५:१९–२०; प्रेरितो १३:२८; २ तीमुथियुस ३:५; रोमियों ३:२३।

III. तीसरा, यह भाग मसीह की पीड़ा का गहराई में किया हुआ वर्णन, यशायाह ५३:८सी; याकूब २:१९।

# मसीह के दफनाने का विरोधाभास

(यशायाह ५३ से दसवाँ संदेश)

# THE PARADOX OF CHRISTS BURIAL

**(SERMON NUMBER 10 ON ISAIAH 53)**

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

इस संदेश का प्रचार लोस एंजलिस में बप्तीस टबरनेकल में
प्रभु का दिन अप्रैल ७, २०१३ शाम को किया गया था।
A sermon preached at the Baptist Tabernacle of Los Angeles
Lord's Day Evening, April 7, 2013

> ''उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ; यद्यपि उसने किसी प्रचार का उपद्रव न किया था और उसके मुँह से कभी छल की बात नहीं निकली थी'' (यशायाह ५३:९)।

मसीह के दफनाने के विषय में आपने कितने प्रचार सुने होंगे? मैं ने तो *एक भी नहीं* सुना, यद्यपि मैं ५५ सालों से प्रचार करता हूँ और कलीसिया में ५९ सालों से हूँ। मुझे याद नहीं है कि मैं ने मसीह के दफनाने का संदेश पढ़ा हो! हमने बहुत कुछ सुना होगा। उसका दफनाना कम महत्वपूर्ण नहीं है। इतना ही नहीं यह सुसमाचार का दूसरा मुद्धा है!

> ''पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया'' (१ कुरिन्थियों १५:३)।

यही तो सुसमाचार का पहला मुद्धा है।

> ''और वह गाड़ा गया'' (१ कुरिन्थियों १५:४)।

यही सुसमाचार का दूसरा मुद्धा है।

हम यह कैसे कह सकते है कि हमने बिना दूसरे मुद्धे को बताये, सुसमाचार का प्रचार किया? किंतु, फिर, आज तो कई ऐसे संदेश हैं जो पहले या तीसरे मुद्धों पर ध्यान देते है! यही तो आधुनिक प्रचार की सबसे बड़ी कमजोरी है। हमें सुसमाचार पर ही केंद्रित होना है। मसीह के साथ और अधिक सम्मान से पेश आना है, उसे और उनके प्रायश्चित के कार्य को हमारे प्रचार में अधिक महत्व देना है।

बडे दु:ख की बात है कि आज अच्छा प्रचार बहुत कम हो रहा है। मैं इस बात के लिए पूरी तरह से सहमत हूँ। आज बहुत ही कम अच्छा प्रचार किया जाता है, अलबत्ता बहुत ही कम! किन्तु यह सच क्यों है? ज्यादातर इसलिए क्योंकि बहुत ही कम सुसमाचार का प्रचार किया जाता है। पासबानों बजाय भट़के हुए लोगों को प्रचार करने के, ''मसीहियों को सिखाओ'' हांलाकि वे उनकी कलीसियाओं में भटके हुए लोगों के संपर्क

में आते ही है! तथाकथित ''मसीही'' कहलाने वालों को ''नैतिक शिक्षा'' का प्रचार अच्छा प्रचार नहीं माना जाता है! *जब मसीह पर केन्द्रित न हो तो, प्रचार सही अर्थ में कभी भी उम्दा नहीं हो सकता!*

मसीह की बातें जानने के बजाय सुसमाचार का ज्ञान कई गुना अच्छा है। सुसमाचार का सही ज्ञान ही *स्वयं* मसीह का ज्ञान है। यीशु ने कहा,

> ''और अनन्त जीवन यह है, *कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें''*
> (यूहन्ना १७:३)।

जॉर्ज रीकर बैरी ने कहा था कि इस वचन में ''जानों'' का अर्थ है ''जानों...अनुभव से'' ***(Greek-English New Testament Lexicon)***. *सही अर्थ में मसीही होना मसीह को अनुभव से जानना आवश्यक है।* उनकी बातों को जानने से बचाव नहीं होता। अनुभव से हमारे पापों के लिए हुई उसकी मृत्यु को जानना आवश्यक है। उनके पुनरूत्थान को अनुभव से जानना आवश्यक है। यही उद्धार का मार्ग है। यहीं अनंत जीवन का मार्ग है।

> ''और अनन्त जीवन यह है, *कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें''*
> (यूहन्ना १७:३)।

अगर आपने इन बातों का अनुभव न किया हो, तो मेरी आशा है कि मैंने आपको बेचैन किया है। इस बारे में कोई सवाल ही नहीं उठता कि आप सच्चे मसीही हैं, क्यों कि आपने सही अर्थ में परिवर्तन (बदलाव) अनुभव नहीं किया है। जब तक आप अपनी सोच नहीं बदलेंगे, आप दु:खी और निराश होंगे, यीशु की शरण में आइए, और मात्र उसी में ही उद्धार है उसे पाइए।

मसीह को जानने के लिए, क्रूस के पास जाना आवश्यक है, उसे पूरी आस्था से देखो, जो हमारें पापों की सजा के लिए क्रूस पर चढ़े। आप मसीह की कब्र तक अपनी आस्था के साथ जाइए ताकि

> ''उसका मृत्यु का बप्तीस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए''
> (रोमियों ६:४अ),

ताकि मरे हुओं में से जिलाया गया ''वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें'' (रोमियों ६:४बी)।

इस तरह हम अपने पाठ से उनके दफनाने के बारे में सीखें ताकि हम उनके साथ इसका अनुभव कर सके

> ''उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहाराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ; यद्यपि उसने किसी प्रचार का उपद्रव न किया था और उसके मुँह से कभी छल की बात नहीं निकली थी'' (यशायाह ५३:९)।

इस वचन में मसीह को दफनाने की दुविधा दिखाई देती है, मतभेद साफ है, यह पहेली है। और फिर हमें पहेली का हल मिलेगा।

**I. पहला, उनकी कब्रिस्तान का विरोधाभास।**

> ''उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ...'' (यशायाह ५३:९)।

मसीह के समय में, ''दुष्ट'' लोग अपराधी थे। ''धनी'' लोग सम्मानित माने जाते थे। फिर उसकी कब्र दुष्टो के संग थी और मृत्यु के समय धनवान का साथ कैसे''? प्राचीन यहूदी टीकाकार इससे उलझन में पड़ गए। यह विरोधाभास था, उनके दिमागों से दिखनेवाला विरोधाभास।

किन्तु इस पहेली का हल यूहन्ना के सुसमाचार में है। यीशु दो चोरों के बीच क्रूस पर मरा, पहला दाहिने हाथ पर तो दूसरा बायें। उन्हें हमारे संदेश में ''दुष्ट'' बताया गया है। यीशु की मृत्यु पहले हुई, जब कि दोनों चोर देर तक जीवित थे।

> ''इस लिये कि वह तैयारी का दिन था, यहूदियों ने पिलातुस ने विनती की कि उनकी टाँगे तोड दी जाएँ और वे उतारे जाएँ, ताकि सब्त के दिन वे क्रूसों पर न रहें, क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन था'' (यूहन्ना १९:३१)।

सैनिकों ने दोनों चोर के पैर तोडें। ऐसा इसलिए किया गया ताकि वे अपने आप साँस न ले पाएँ और जल्दी से मर जाएँ। किन्तु जब वे यीशु के पास आये, जो बीच वाले क्रूस पर लटके हुए थे, वे तो मर चुके थे। उनमें से एक ने उसकी बाजू को भाले से भोंका यह पता करने के लिए कि वे मर गये हैं। उसमें से पानी और लहू बह गया, जो प्रगट करता है कि हृदय गति रूक जाने से उनकी मृत्यु हुई।

> ही डीड नोट रेइन अपोन अ थ्रोन ऑफ आइवरी,
> ही डाईड अपोन द क्रोस ऑफ कालवरी;
> फोर सीनर्स देर ही काउन्टेड ओल ही ओवड बट लोस,
> एंड ही सर्वेयड हीस कींगडम फ्रोम अ क्रोस।
> अ रगेड क्रोस बीकेम हीस थ्रोन,
> हीस कींगडम वोझ इन हार्टस् अलोन;
> ही रोट हीस लव इन क्रीमसन रेड,
> एंड वोर द थोनस् अपोन हीस हेड।
> ("A Crown of Thorns" by Ira F. Stanphill, 1914-1993).

किन्तु कुछ अनपेक्षित हुआ। दो खास व्यक्ति यीशु के शव को लेने आगे बढ़े। अरिमतिया के यूसुफ, एक धनवान व्यक्ति और एक यहूदी सेन्हेंद्रिन का सदस्य और यहूदियों का अधिकारी नीकुदेमुस, जो पहले यीशु के पास एक रात में आया था (cf. यूहन्ना ३:१—२)। वे दोनों उसके गुप्त चेले थे, किन्तु पहली बार खुलकर सामने आये थे। ऐसा करने के लिए उन्होंने अपनी जान खतरे में डाली थी। डॉ. मेकजी ने कहा था,

> चलिए इन दो व्यक्ति के लिए बहुत आलोचना नहीं करते हैं पहले वे छिपे हुए थे परन्तु अब चूंकि प्रभु के चेले सभी जगह भेड़ की तरह बिखर गए हैं और छिप गए हैं ये दो व्यक्ति खुलकर बाहर आते हैं (J. Vernon McGee, Th.D., ***Thru the Bible,*** Thomas Nelson, 1983, volume IV, p. 494).

अरिमतिया के यूसुफ और नीकुदेमुस ने यीशु के शव को लिया। यूसुफ धनी व्यक्ति था और उसने शव को नयी कब्र में रखा,

> ''जो उसने चट्टान में खुदवाई थी, और कब्र के द्वार पर बडा पत्थर लुढ़काकर चला गया'' (मती २७:६०)।

इस तरह मसीह के दफनाने के विरोधाभास को समझाया। हाँ, उसने अपनी कब्र क्रूस पर दो चोरों के बीच की मृत्यु को लेकर बनवाई। किन्तु दफनाया गया ''मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ'' (यशायाह ५३:९), धनवान की कब्र में। मसीह ने दुष्ट की मृत्यु का अनुभव किया किन्तु धनवान के संगी होकर सन्मान से दफनाने को प्राप्त हुआ। यह बताता है कि हमारे प्रभु के अपमान का अंत हुआ। उनके शव को दो चोरों की तरह कोई साधारण कब्र में नहीं फेंका गया था। उसे तो मान सम्मान के साथ एक धनवान और सम्मानित व्यक्ति की कब्र में रखा गया था। और इससे यह विरोधाभास, जो कई बार प्राचीन शिक्षकों को उलझन में ड़ालता है जो इसका अध्ययन करते हैं, उनके लिए यह संदेश सरल है।

> ''और उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहाराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ'' (यशायाह ५३:९)।

किन्तु और एक कारण भी है कि मसीह ने अपनी कब्र दुष्टों और धनवान के साथ क्यों बनवाई। जैसे मैने कहा था, यहूदी लोगो की सोच थी कि नियम को तोडनेवाले ''दुष्ट'' और ''धनवान'' सम्मानित व्यक्ति होते थे। यीशु ने ''अपनी कब्र'' इन दोनों समूह के संग बनायी थी यह बताता है कि प्राचीन शिक्षक ''दुष्ट'' और ''धनवान'' को अलग करने में गलत थे। वैसे दो समूह थे ही नहीं दोनों समूह पापी थे।

आज भी यह सही है। सम्मानित लोग ''दुष्ट'' लोगों की तरह पापी है। जैसे ही मैं संदेश के इस हिस्से को लिखने बैठा, एक टेलीमार्केटर ने फोन किया, और ''रूढिवादी'' सेवकाई के लिए चंदा मांगा। उसने कहा, ''अमेरिका निम्नलिखित में से कौनसे महत्वपूर्ण मुददे से गुजर रहा है – गर्भपात, इजरायल को साथ देने में नाकामयाब या समान लिंग में शादी?'' मैंने कहा, ''उनमें से कोई भी नहीं। सबसे महत्वपूर्ण बात का सामना जो अमेरिका कर रहा है कि उसके पासबान कलीसियों को लोगों के पाप के बारे में बताते नहीं है।'' ऐसा कहने से मेरा क्या अर्थ था? मेरा मतलब था गर्भपात, एक ही लिंग में शादी या तो इजरायल को साथ देने में नाकामयाब ये सब लक्षण है, सही में बीमारी नहीं है, किंतु बिमारी के लक्षण है। तुम इन लक्षणों का इलाज कर सकते हो, किंतु यह बहुत दिनों तक अच्छा नहीं रहेगा जब तक आप आंतरिक रोग का इलाज नहीं करोगे। और यह रोग है पाप—पाप उदार और रूढिवादी डेमोक्रेट और रिपब्लिकन दोनों को मारता है; पाप ''दुष्ट'' और ''धनवान'' जैसे दोनों के लिए घातक है।

पाप हृदय में रहता है। मनुष्य के बाहरी कार्य ही नही, उसका हृदय भी गलत है। पाप उसके अंदर के विचार और इच्छाओं पर काबू कर लेता है। तुम्हारा पाप से भरा हृदय तुम्हें गलत सोचने के लिए कहता है। फिर आपका पापी स्वभाव परमेश्वर से प्रतिकार करने को प्रेरित करता है और फिर आप जिस पाप के बारे में सोचते है। उसे करते हो। पाप आपके आंतरिक जीवन पर कितना हावी रहता है और अधिकारयों से प्रतिकार करवाता है, परमेश्वर के प्रति का विद्रोह इतना शक्तिशाली होता है कि उसे बदलने के लिए आप कुछ नहीं कर पाते, या आपके ऊपर से उसके नियंत्रण को मिटा नहीं सकते। आपको इस अवस्था में लाया जाये, जहाँ आप प्रेरित के साथ कह उठें, ''मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?'' (रोमियो ७:२४)। तभी आप यीशु की कब्र ''दुष्ट'' और ''धनवान'' के साथ का महत्व समझेंगे – ''उसकी मृत्यु में।'' आपकी जो कुछ भी पृष्ठभूमि हो, मसीह आपके लिए मरा और दफनाया गया ताकि आपके पाप माफ किए जाए और उन्हें जीवन से दूर कर दिया जाए। जैसे डॉ. जे. विलबर चेपमेन ने गाया है, ''बरीड़, ही कॅरीड माय सीन फार अवे'' ("One Day" by Dr. J. Wilbur Chapman, 1859-1918). केवल मसीह ही आपके पाप माफ़ कर सकता है! केवल मसीह ही आपका पापमय विद्रोही दिल बदल सकता है!

> ''उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ'' (यशायाह ५३:९)।

## ।।. दूसरा, विरोधाभास की व्याख्या की है।

संदेश का दूसरा आधा भाग बताता है कि मसीह क्यों, लज्जाजनक चोरों के बीच मरें, और उन्हें मान सम्मान के साथ दफनाया गया था। कृपया खडे होकर, इन शब्दों की श्शुरूआत के साथ वचन का दूसरा आधा भाग पढिए, ''यद्यपि उसने किसी प्रकार का उपद्रव...'' (यशायाह ५३:९)।

> ''उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ; *यद्यपि उसने किसी प्रचार का उपद्रव न किया था और उसके मुँह से कभी छल की बात नहीं निकली थी''* (यशायाह ५३:९)।

आप बैठ सकते है।

यही कारण है मसीह के सम्माननीय दफन का। यह सम्मान उसके लिए आयोजित था *क्योंकि उसने किसी प्रकार का उपद्रव नहीं किया;* न किसी को चोट पहुंचायी। वह उत्पीड़न या चोरी, हत्या या किसी प्रकार की क्रूरता का दोषी नहीं था। उसने कभी किसी भी भीड़ को भडकाया नहीं या यहूदी, या रोमियो की सरकार के खिलाफ दंगा नहीं शुरू किया। *उसके मुँह से कभी छल की बात नहीं निकली थी।* उसने कभी गलत शिक्षा नहीं दी थी। उसने लोगों को कभी फंसाया नहीं था जैसा उस पर इल्जाम लगाया था। वह बात बिलकुल झूठ थी। उसने कभी किसी को सच्चे परमेश्वर की आराधना करने से रोका नहीं था। उसने हमेशा मूसा के नियम और भविष्यवक्ताओं को भी मान दिया। वह उनके धर्म या उनके राज्य का दुश्मन नहीं था। अलबत्ता, वह किसी पाप का दोषी नहीं था। प्रेरित पतरस ने कहा था कि मसीह,

> ''न तो उसने पाप किया और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली'' (१ पतरस २:२२)।

डॉ. यंग ने बताया, ''(मसीह) को उनकी संपूर्ण निर्दोषता के कारण, असम्मानित मृत्यु के बाद सम्मानित दफनाया गया। (चूंकि) उसने अपराधिक दुश्मन जैसा व्यवहार नहीं किया, इसलिए उसे उनके साथ (एक) लज्जाजनक दफन नहीं दिया गया, किन्तु एक सम्मानित दफन धनवान के संग मिला।''

इससे मुझे सर विंस्तन चर्चील की याद आती है, जिसने सम्माननीय दफन का चुनाव किया था उनकी पिता की बगल में गाँव के कलीसिया के आंगन में, बजाय उनके अपने पिता के दुश्मनों के बीच, अपने दुश्मनों के बीच, उन लोगों के बीच जिन्होंने इंग्लैंड को धोखा दिया, फिर भी उन्हें बड़े धूमधाम के साथ वेस्टमिंस्टर अेबे, के समारोह में दफनाया गया, इसके बावजूद कि हिटलर और उसके नाजी शासन के चेहरे में विश्वासघाती तुष्टीकरण के उनके कार्य करते थे। यद्यपि चर्चील पुर्नजीवित मसीही नहीं थे, वे सम्मानीय व्यक्ति थे।

यीशु, जाहिर है, सबसे बडा व्यक्ति है जो कभी हुआ। हाँ, वह था और है, ''मसीह यीशु जो मनुष्य है'' (१ तीमुथियुस २:५)। उनकी महानता इसी हकीकत में है कि उसने स्वेच्छा से हमारे पापों के भुगतान के रूप में और पिता परमेश्वर के नजरिये से अपना जीवन दिया। क्रूस पर मरने के कुछ ही समय पहले, यीशु ने कहा,

> ''इससे बडा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे'' (यूहन्ना १५:१३)।

> अ रगेड क्रोस बीकेम हीस थ्रोन,
> हीस किगडम वोझ इन हार्टस् अलोन;
> ही रोट हीस लव इन क्रीमसन रेड,
> एंड वोर द थोनस् अपोन हीस हेड।

और अब, मेरे मित्रों, यीशु के साथ आप क्या करेंगे जो मसीह कहलाता है? जैसे सी. एस. लेवीस ने बताया कि यहाँ दो संभव उत्तर है – ''उस पर थूक सकते है और शैतान जैसे मार डाल सकते है, या फिर उसकी शरण में जाकर प्रभु और परमेश्वर पुकार सकते हैं।'' आपके लिए कौन चुनाव सा है? तीसरा चुनाव है कि उनकी ओर पूरे तरीके से ध्यान न दे, और जीवन जीते रहे मानों उनका दर्द और पीड़ा कोई मायने नहीं रखता। मुझे उनके लिए दु:ख लगता है जिन्होने तारणहार का ऐसा अनादर किया है। मैं प्रार्थना करता हूँ आप उनमें से एक न हो। वे ऐसे लोग है जिनको टी. एस. ऐल्यीट ने ''द हॉलो मेन'' कहा है – व्यक्ति जो जीवन में मात्र सुख के पल के लिए जीते है। हाँ, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप उनमें से एक न हो, क्योंकि उनके लिए नर्क में बहुत ही गहरा स्थान होगा।

लेस्त आइ फर्गोट गीस्मेन;
लेस्त आइ फर्गोट थाईन एगोनी;
लेस्त आइ फर्गोट धाई लव फोर मी,
लीद मी टु कॅल्वरी।
("Lead Me to Calvary" by Jennie E. Hussey, 1847-1958).

मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप यीशु के पास आये, पूर्ण ह्रदय से विश्वास करें और सच्चे मसीही परिवर्तन में मृत्यु से जीवन की ओर जाएँ।

चलिए, सब साथ मिलकर खडे हो जाइए। अगर आप हमसे यीशु द्वारा पाप से शुद्ध होने की बात करना चाहते हो, तो अभी सभागृह के पीछे स्थित स्थान पर जाईए। डॉ. कैगन आपको एकांत स्थान में ले जायेंगे जहाँ हम बात कर सकें।

## रूपरेखा

# मसीह के दफनाने का विरोधाभास

(यशायाह ५३ से दसवाँ संदेश)

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा

''उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ; यद्यपि उसने किसी प्रचार का उपद्रव न किया था और उसके मुँह से कभी छल की बात नहीं निकली थी'' (यशायाह ५३:९)।

(१ कुरिन्थियों १५:३—४; यूहन्ना १७:३; रोमियों ६:४)

I. पहला, उनके दफनाने का विरोधाभास, यशायाह ५३:९अ; यूहन्ना १९:३१; मती २७:६०; रोमियों ७:२४।

II. दूसरा, विरोधाभास की व्याख्या की है, यशायाह ५३:९ब; १ पतरस २:२२; १ तीमुथियुस २:५; यूहन्ना १५:१३।

# प्रायश्चित!

(यशायाह ५३ से ग्यारहवां संदेश)

**PROPITIATION!**

**(SERMON NUMBER 11 ON ISAIAH 53)**

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

इस संदेश का प्रचार लोस एंजलिस में बप्तीस टबरनेकल में शनिवार की शाम अप्रैल १३, २०१३ को किया गया था।
A sermon preached at the Baptist Tabernacle of Los Angeles Saturday Evening, April 13, 2013

''तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया : जब वह अपना प्राण दोषबलि करे'' (यशायाह ५३:१०)।

आज रात मैं परमेश्वर के बारे में बताने जा रहा हूँ शायद अच्छा न लगे, कई लोग जो उसे सुनेंगे, यहाँ तक की नापसंद करें। आज लोगों के अंदर परमेश्वर के बारे में गलत विचार हैं। जब कोई पवित्रशास्त्र के परमेश्वर के बारे में कुछ कहता है तो खास करके कुछ वर्ग के प्रचारकों में नकारात्मक प्रतिक्रिया होती है।

कई वर्षों पहले मुझे बुजुर्ग पाराबान ने धर्मप्रचार संबंधी संदेश करीब सौ युवा लोगों को बताने को कहा। मैं ने वहाँ कई बार प्रचार किया था, इस लिए मैं ने सोचा कलीसिया क्या चाहती है, मैं जानता था। किन्तु इस बार दो युवा पासबान प्रभारी थे। मैं ने उद्धार का संदेश प्रचार किया, खास तौर से परमेश्वर के निर्णय पर जोर देते हुए और अंत में मसीह के सुसमाचार का स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया। सत्ताईस युवाओं ने आमंत्रण को स्वीकारा। ये सभी पहली बार के व्यवसायी थे, कॉलेज विद्यार्थी की उम्र से थोड़े बड़े एक चौथाई युवा हाजिर थे।

कोई सोचेगा कि ये दो युवा पासबान इतनी बडी संख्या में उत्तर देखकर खुश हुए होंगे। किन्तु संदेश के बाद उनके चेहरे पर क्रोध के भाव दिखाई दिए। उन्होंने मुझे धन्यवाद का पत्र नहीं लिखा, न तो कभी मानदेय भेजा जो इस कलीसिया की प्रथा थी। मैं इनके रूखेपन से बहुत आश्चर्यचकित हुआ। बाद में मुझे पता चला कि वे सोचे कि मैं बहुत ही नकारात्मक था, कि मैंने उन युवा लोगों को यह नहीं बताना था कि परमेश्वर पाप के लिए निर्णय लेता है और यह बताये बिना युवाओं को आमंत्रित करना था। तब से मैंने यह पता किया कि कई आधुनिक पासबान का दृष्टिकोण क्या है। ''मात्र उनको सुसमाचार सुनाओ। मात्र परमेश्वर के प्रेम के बारे में बोलो। लोगों को पाप के बारे में विचलित मत करो और उन्हें बेचैन मत होने दो।'' मैंने कई बार देखा है कि आज के प्रचारक इस तरह महसूस करते है। लेकिन मेरा यह दावा (मानना) है इस तरह की सोच में भयानक रीति से कुछ कमी है, कुछ तो अपर्याप्त है और इस प्रकार के सुसमाचार के धर्मोपदेश के दृष्टिकोण में कुछ कमी है।

डॉ. ए. डबल्यू. टोजर ने कहा था, ''कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के भय को जाने बिना परमेश्वर के सच्चे अनुग्रह को नहीं पहचान पाएगा'' (***The Root of Righteousness,*** Christian Publications, 1955, p. 38). मैं मानता हूँ कि वे पूरी तरह

से सही थे, ''कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के भय को जाने बिना परमेश्वर के सच्चे अनुग्रह को नहीं पहचान पाएगा।'' इस बात पर डॉ. मार्टिन लोईड–जोन्स का मानना बिलकुल उसी तरह डॉ. टोजर के जैसा था। Iain H. Murray ने कहा, ''डॉ. लोईड–जोन्स के लिए परमेश्वर के सामने मनुष्य के दोषी ठहरने और ईश्वरीय क्रोध...नरक में पाप की सजा...इसकी चेतावनी पवित्रशास्त्र के प्रचार का जरूरी हिस्सा है। निश्चित रूप से नर्क एक परिकल्पना नहीं है...'' (Rev. Iain H. Murray, ***The Life of Martyn Lloyd-Jones,*** The Banner of Truth Trust, 2013, p. 317).

फिर से, डॉ. लोईड–जोन्स ने कहा,''परमेश्वर के बारे में गलत सोच जिसका प्राकृतिक मनुष्य भयंकर रीति से दोषी है, ये सबसे खतरनाक पाप है'' (ibid., p. 316). फिर से, ये मुझे ज्ञानवर्धक मालूम पड़ता है कि जाने माने बप्तीस प्रचारक डॉ. जॉन. आर. राईस, ने लगभग वही बात कही जो डॉ. टोजर और डॉ. लोईड–जोन्स ने कही। डॉ. राईस ने कहा,

> पवित्रशास्त्र का परमेश्वर भयानक और विकट परमेश्वर है, बदला लेनेवाला परमेश्वर है, साथ साथ में वह कृपालु परमेश्वर है। (John R. Rice, D.D., ***The Great and Terrible God,*** Sword of the Lord Publishers, 1977, p. 12).

डॉ. राईस ने कहा,

> आजकल के आधुनिक प्रचार में बिना नियम का अनुग्रह, बिना प्रायश्चित की आस्था, बिना परमेश्वर के क्रोध की परमेश्वर की कृपा, नर्क को बताए बिना स्वर्ग का प्रचार...इससे परमेश्वर को गलत रीति से प्रस्तुत किया है। यह परमेश्वर के संदेश का गलत प्रस्तुतीकरण है। परमेश्वर भयंकर परमेश्वर है, भयानक परमेश्वर है, पाप के विरूद्ध में क्रोधित होनेवाला परमेश्वर है, ऐसा परमेश्वर जो बदला लेता है, परमेश्वर जिसका भय रखा जाता है, परमेश्वर जिसके सामने पापी को कांप उठना चाहिए। (ibid., pp. 13, 14).

आमीन! कई सालों से उनके संदेश को पढ कर जानता हूँ, कि डॉ. टोजर और डॉ. लोईड–जोन्स, जॉन. आर. राईस से इस बात पर पूरी तरह से सहमत हुए है। परमेश्वर जो ''पाप के विरोध में क्रोधित परमेश्वर है।''

जब हम इस तरह से परमेश्वर को देखते है, जैसे पवित्रशास्त्र में उसे बताया है, हमें यशायाह ५३:१० के संदेश के लिए कोई दिक्कत न होगी। यह संदेश पिता परमेश्वर और परमेश्वर ने यीशु के साथ उद्धार के लिए क्या किया, इस पर केन्द्रीत है,

> ''तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया: जब वह अपना प्राण दोषबलि करे''
> (यशायाह ५३:१०)।

> ''उसे परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया'' (रोमियों ३:२५)।

डॉ. डबल्यू. ए. क्रिसवेल ने कहा कि ''प्रायश्चित मसीह का क्रूस पर का ऐसा कार्य है जिस में उसने पाप के विरोध में, परमेश्वर की धार्मिकता की माँगे दोनों जरूरतें पूरी की परमेश्वर का न्याय और मनुष्य के पाप का दोष नष्ट करना'' (W. A. Criswell, Ph.D., ***The Criswell Study Bible,*** Thomas Nelson Publishers, 1979, p. 1327, note on Romans 3:25).

> ''उसे परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया'' (रोमियों ३:२५)।

***The Reformation Study Bible*** इस वचन के बारे में कहता है, ''मसीह दोषबलि के रूप में मरा, जिससे पापियों के विरोध में परमेश्वर की क्षमा और न्याय मिलता है। किंतु पौलुस पूरी सावधानी से दर्शाता है कि बलिदान (परमेश्वर के पुत्र का) पिता परमेश्वर के हमसे प्रेम करने का कारण नहीं है। बल्कि इसका विपरीत सही है – परमेश्वर के *प्रेम* के कारण उसने अपने बेटे को दे दिया'' (***The Reformation Study Bible,*** Ligonier Ministries, 2005, p. 1618, note on Romans 3:25).

> ''जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोडा, परन्तु उसे हम सबके लिए *दे दिया*'' (रोमियों ८:३२)।

यही हमारा पद कहता है,

> ''तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया : जब वह अपना प्राण दोषबलि करे'' (यशायाह ५३:१०)।

इस संदेश में हम देखते है कि परमेश्वर ही मसीह की पीड़ा का सच्चा लेखक है। मसीह ने पीडा सहन की और मृत्यु पायी ''जो परमेश्वर की ठहराई हुई (द सेट पर्पस) योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकडवाया गया'' (प्रेरितों २:२३)। धर्मशास्त्र का महान और भयंकर परमेश्वर मसीह की पीडा और मृत्यु का सच्चा कारण था। यूहन्ना ३:१६ कहता है, ''उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया'' (यूहन्ना ३:१६)। रोमियों ८:३२ कहता है, ''उसने...स्पेर्ड नॉट अपने निज पुत्र को न छोडा, परन्तु उसे हम सबके लिए दे दिया'' (रोमियों ८:३२)। पाप के विरोध में परमेश्वर के क्रोध को संतुष्ट करने के लिए प्रायश्चित हुआ क्योंकि यह उसके पुत्र यीशु पर आया। जैसे अपना पद कहता है,

> ''यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया: जब वह अपना प्राण दोषबलि करे'' (यशायाह ५३:१०)।

यहाँ यशायाह हमें ''दृश्य के पीछे'' ले जाता है यही बताने के लिए कि पिता परमेश्वर ने अपने पुत्र को क्रूस की भयानक पीड़ाओं से होकर जाने दिया जिससे परमेश्वर प्रायश्चित पूर्ण हुआ, और उसका क्रोध पापियों के बजाय यीशु पर पड़ा। अपने पद में हम देखते है कि (१) परमेश्वर ने उसे घायल किया; (२) परमेश्वर ने उसे पीड़ित किया; (३) परमेश्वर ने उसके प्राण की बलि चढा दी।

**I. पहला, यीशु को घायल किया।**

> ''यहोवा को यही भाया कि उसे *कुचलें*'' (यशायाह ५३:१०)।

''घायल'' इस शब्द का भाषांतर है ''कुचलना''। ''यहोवा को यही भाया कि उसे *कुचले* ।'' डॉ. एडवर्ड जे. यंग ने कहा, ''(मसीह की) निर्दोषता के बावजूद भी, परमेश्वर को यही भाया कि उसे घायल करे (कुचले) उसकी मृत्यु दुष्ट लोगों के हाथ में नहीं थी परन्तु परमेश्वर के हाथ में थी। इससे जिन्हों ने उसे मारा, वे जिम्मेदारी से बरी नहीं होते, किन्तु वे परिस्थिति के काबू में नहीं थे। वे मात्र उतना ही कर रहे थे जितना परमेश्वर उनसे करवाना चाहता था'' (Edward J. Young, ***The Book of Isaiah,*** William B. Eerdmans Publishing Company, 1972, volume 3, pp. 353-354).

जैसे मैंने कहा, मसीह के बारे इसे बहुत स्पष्ट रीति से रोमियों ३:२५ में बताया है,

> ''उसे परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा *प्रायश्चित* ठहराया'' (रोमियों ३:२५),

और यूहन्ना ३:१६ में कहा है,

> ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र *दे दिया*'' (यूहन्ना ३:१६)

उसके पाप के विरूद्ध क्रोध के प्रायश्चित के रूप में, और पापी मनुष्य का उद्धार संभव करने के लिए।

> ''तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले (घायल करे)'' (यशायाह ५३:१०)।

शशुरूआत में गेतसमनी के बाग में, पिता परमेश्वर ने अपने पुत्र को घायल किया और कुचला। मत्ती में हमसे कहा है, गेतसमनी के बाग में, परमेश्वर ने कहा, *''मैं चरवाहे को मारूँगा''* (मत्ती २६:३१)। मरकुस का सुसमाचार भी हमें कहता है कि गेतसमनी के बाग में, ''मैं रखवाले को मारूँगा'' (मरकुस १४:२७)। गेतसमनी के अंधकार में इस तरह परमेश्वर ने यीशु को मारा, घायल किया, और प्रायश्चित के स्थानापन्न के रूप में हमारे पाप के लिए उसे कुचला। स्पर्जन ने इस बारे में कहा,

> अब यह है कि प्रभु को *पिता परमेश्वर के हाथों* से कुछ प्याला लेना था। यहूदियों से नहीं, गद्दार यहूदा से नहीं, सोनेवाले चेलों से नहीं, परीक्षा लेनेवाले शैतान (गेतसमनी में) से नहीं, अब, मात्र उसके पिता...जिन्हें वह जानता था जिसने प्याला भरा था...उस प्याले से वह संकुचित (पीछे होना) हो गया जिसने उसके प्राण को अचंभे में डाला और अंतकरण को दु:खी किया। वह उससे पीछे हट गया, इसलिए यह निश्चित जानो

> कि यह तैयार (प्याला) शारीरिक पीड़ा से ज्यादा पीड़ादायक था, जिससे वह पीछे नहीं हटा...यह कुछ समझने के बाहर भयानक, आश्चर्यजनक भय से भरा, जो पिता परमेश्वर की ओर से (उसे) मिला था। इससे हमारी सारी शंकाए वो क्या है, इस बारे में दूर हो जाती है, ''यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले...'' प्रभु ने हमारे समस्त अधर्म को उसके उपर लाद दिया (रख दिया) उसे हमारे लिए पापी ठहराया जो पाप को जानता तक नहीं था। यही, कारण है कि तारणहार को असाधारण अवसाद... उसे पापी के (स्थान) पर भुगतना था। यही तो उसके दर्द की गुप्त बात है (गेतसमनी में) जो मेरे लिए (पूरी तरह) बताना संभव नहीं है, यही सच है कि–
>
> 'इट इज टू गॉड, अेंड गॉड अलोन,
> देट हीस ग्रीफ्स आर फुल्ली नोन।'
>
> (C. H. Spurgeon, "The Agony in Gethsemane," ***The Metropolitan Tabernacle Pulpit,*** Pilgrim Publications, 1971 reprint, volume XX, pp. 592-593).
>
> ''तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले''
> (यशायाह ५३:१०)।

मनुष्य के पाप के बोझ के नीचे, जो गेतसमनी में उस पर डाला गया, मसीह को कुचला गया, उसे हमारे पाप के बोझ तले घायल किया गया, ताकि

> ''वह अत्यन्त संकट में व्याकुल होकर और भी हार्दिक वेदना से प्रार्थना करने लगा : और उसका पसीना मानो लहू की बड़ी बड़ी बूँदो के समान भूमि पर गिर रहा था'' (लूका २२:४४)।

कोई भी मनुष्य के हाथ ने उसे छुआ नहीं था। उसे अभी गिरफ्तार नहीं किया था, न तो उसको मार पडी थी, न तो कोडे लगे थे, न तो क्रूस पर चढ़ाया था। नहीं, यह तो पिता परमेश्वर ने उसे गेतसमनी में घायल किया था और कुचला था। यह तो पिता परमेश्वर जिसने कहा था, *''मैं चरवाहे को मारूँगा''* (मती २६:३१)। यही तो परमेश्वर ने यशायाह के द्वारा भविष्यवाणी की,

> ''तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले''
> (यशायाह ५३:१०)।
>
> नो टंग केन टेल द रोथ ही बोर,
> द रोथ सो डयु टू मी :
> सीन्स जस्ट डीईट; ही बोर इट ओल,
> टू सेट द सीनर फ्री!
> ("The Cup of Wrath" by Albert Midlane, 1825-1909;
> to the tune of "O Set Ye Open Unto Me").

## ।।. दूसरा, परमेश्वर ने यीशु की दु:खी किया।

> ''तौ भी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया...'' (यशायाह ५३:१०)।

फिर से, परमेश्वर ने ही अपने एकलौते पुत्र को अथाह पीड़ा और मृत्यु का अनुभव करवाया। डॉ. जॉन गिल ने कहा,

> *उसने उसे दु:खी किया* (उसे पीड़ित किया)...जब उसने उसे नहीं रख छोडा, किन्तु दुष्ट लोगों के हाथों में छोडा और फिर मृत्यु के लिए : बगीचे में उसे पीड़ित किया गया, जब उसके प्राण अति दु:खी हो गए; और क्रूस पर जब उसे कीलों से ठोका गया, (और) उसके लोगों के पापों का बोझ उस पर डाला गया था, उसके पिता के क्रोध को उस पर उड़ेला गया; और जब उसने उससे मुँह फेर दिया था, जिससे वह पुकार उठा, *मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, मुझे क्यों छोड दिया?*...(होने दिया) उसको दर्द में डाला, दोनों देह और ह्रदय से (John Gill, D.D., ***An Exposition of the Old Testament,*** The Baptist Standard Bearer, 1989 reprint, vol. V, page 315).

यीशु स्वेच्छा से पीड़ित हुआ, और दर्द से कुचला गया, शारीरिक पीड़ा और क्रूस पर वध, हमारे पापों के लिए स्वेच्छा से पीड़ित हुआ, क्यों कि उसने कहा,

> ''क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूँ'' (यूहन्ना ६:३८)।

> ''उसी यीशु को, जो परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया'' (प्रेरितों २:२३)।

> ''जो हमारे लिए शापित बना'' (गलातियों ३:१३)।

> ''और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है'' (१ यूहन्ना २:२)।

> ''उसे परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है''
> (रोमियों ३:२५)।

> नो टंग केन टेल द रोथ ही बोर,
> द रोथ सो डयु टु मी :
> सीन्स जस्ट डीईट; ही बोर इट ओल,
> टू सेट द सीनर फ्री!
> ("The Cup of Wrath" by Albert Midlane, 1825-1909).

> ''तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया...'' (यशायाह ५३:१०)।

## ।।।. तीसरा, परमेश्वर ने यीशु का प्राण पाप के लिए भेंट कर दिया।

कृपया आप सभी खडे होकर पढे और अंत में ''पाप के लिए भेंट कर दिया'' जोर से पढे।

> ''*तौभी* यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया : *जब वह अपना प्राण दोषबलि करे*''
> (यशायाह ५३:१०)।

आप बैठ सकते है।

पद के शुरू में ''तौभी'' शब्द पर ध्यान दें। यह नौवें वचन को बताता है, ''उसने किसी प्रकार का उपद्रव न किया था, और उसके मुँह से कभी छल की बात नहीं निकली थी। तौभी...'' (यशायाह ५३:९–१०अ)। यद्यपि यीशु ने कभी पाप नहीं किया था, ''*तौ भी* यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया...'' डॉ. गैबलीयंस की टिप्पणी कहती है, ''वचन १०अ में (मसीह) की व्यक्तिगत धार्मिकता के लिए, मनमाने ढंग से उपेक्षा की लेकिन पाठक जब उनकी स्थानापन्न पीड़ा का स्मरण करते है ...फिर परमेश्वर उन्हें कठोर नहीं किन्तु अचरज से भर देने वाला अनुग्रही परमेश्वर लगता है'' (Frank E. Gaebelein, D.D., General Editor, ***The Expositor's Bible Commentary,*** Zondervan, 1986, volume 6, p. 304).

> ''*तौभी* यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया : *जब वह अपना प्राण दोषबलि करे*''
> (यशायाह ५३:१०)।

> ''जिसने...अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परंतु दो हम सबके लिये दे दिया'' (रोमियों ८:३२)।

> ''वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया...उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए''
> (१ पतरस २:२४)।

> ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ'' (२ कुरिन्थियों ५:२१)।

> *''जब वह* अपना *प्राण दोषबलि करे''* (यशायाह ५३:१०)।

> नो टंग केन टेल द रोथ ही बोर,
> द रोथ सो डयु टू मी :
> सीन्स जस्ट डीईट; ही बोर इट ओल,
> टू सेट द सीनर फ्री!
> ("The Cup of Wrath" by Albert Midlane, 1825-1909).

> ''तौ भी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया : जब वह अपना प्राण दोषबलि करे''
> (यशायाह ५३:१०)।

मसीह पाप के लिए परमेश्वर की भेंट थी। आपके स्थान पर मसीह मरा, आपके बदले। मसीह हमारे पाप का जुर्माना भरने के लिए ताकि परमेश्वर का क्रोध हमसे दूर हो जाए, आपका प्रतिनिधिरूप बनकर पश्चातापी के रूप में पीड़ित हुआ, हमारे पापों को उसने अपने उपर पर ले लिया। जब आप उसके हाथ और पैर में कीलें ठोके जाने के बारे में सोचते हो, तो ये उसने आपके लिए किया। न्यायी, अन्याय के लिए मरा, ताकि तुम्हें परमेश्वर के पास धार्मिकता की और क्षमादान वाली स्थिति में ला सके। स्पर्जन ने कहा है,

> मनुष्य पाप के लिए अनंत काल की ज्वाला का दोषी था; जब परमेश्वर ने मसीह की आपके स्थान पर लिया जो सच है, उसने मसीह को अनंतकाल की ज्वाला में नहीं भेजा, किन्तु उस पर दु:ख डाला, इतना व्याकुल कि उसका जुर्माना अनंत काल की ज्वाला तक के लिए मान्य हो गया ..उस समय मसीह ने हमारे सारे कल के, आज के, और आनेवाले समय के पाप ढ़ोये कि हमें दण्डित न होना पड़े क्योंकि वह हमारे (स्थान) पर पीड़ित हुआ। आप देख सकते है परमेश्वर ने उसे कैसे कुचला? अगर ऐसा न होता तो मसीह का दर्द (डीर्ज़ीव) हमारे पीड़ा भोगने के लिए न होता (नरक में) (C. H. Spurgeon, "The Death of Christ," ***The New Park Street Pulpit,*** Pilgrim Publications, 1981 reprint, volume IV, pp. 69-70).

*तौभी मसीह की मृत्यु <u>सभी</u> लोगों को नर्क से नहीं बचाती। केवल जो मसीह पर भरोसा करते हैं वे बचाये जाते है।* वो पापियों के लिए मरा, जो अपने आपको पापी महसूस करते है उनके लिए मरा और मसीह की क्षमा को ढूंढते है।

आपके पाप की समझ और मसीह की जरूरत यह दोनों लक्षण बताते है कि उसकी मृत्यु आपके पाप से चंगाई के लिए थी। जो एक पल के लिए रूककर उसकी मृत्यु के बारे में सोचते है। और फिर उसके बारे में भूल जाते है, उन्हें अनंतकाल की सजा मिलती रहेगी क्योंकि उन्हों ने मसीह के क्रूस पर किए भुगतान को अस्वीकार किया है।

इसके बारे में गंभीरता से देर तक सोचे। आज के गीत का शब्द ''प्रायश्चित'' के बारे में देर तक सोचिए।

फोर मी वॉझ गिवन स्पोटलेस लेम्ब
हीज फादर्स रोथ टु बेर;
आई सी हीज ब्लडी वुण्डस् एन्ड नो
माय नेम इस रीटन देर।

फोर्थ फ्रोम द लोर्ड ही गशींग ब्लड,
इन परपल करन्टस् रेन;
एन्ड एवरी वुन्ड प्रोक्लेइमड् अलाउड
हीज वन्डरस् लव टु मेन।

फोर मी, सेवियर्स ब्लड अवेइलस्,
ऑलमाईटी टु अटोन;
द हेन्डस् ही गेव टु पीयरसींग नेइल्स
श्शेल लीड मी टू हीज थ्रोन।
("Propitation" by Augustus Toplady, 1740-1778;
to the tune of "At the Cross").

तो, अभी, तक आपने यीशु पर विश्वास क्यों नहीं किया है? ऐसा क्या है जो आपको उस पर विश्वास करने पर रोकता है? कौन सा ऐसा गुप्त पाप है जो आपको उस पर विश्वास करने से रोकता है? कौन सी गलत और मूर्खता भरी इच्छा है जो आपको तारणहार से दूर रखती है? कौन सी ऐसी महत्वपूर्ण बात जिसके गुम होने के डर से आप रूक गए हैं? कौन सा गुप्त कारण है जो आपको मसीह पर विश्वास करने से रोकता है जिसने हमें परमेश्वर के अतिरेक क्रोध से बचाने के लिए सहा? उन सभी विचारों को फेंक दीजिए—और विश्वास कीजिए ''परमेश्वर, का मेम्ना जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (यूहन्ना १:२९)। वह आपकी राह देख रहा है। और विलंब मत कीजिए। आज की रात, अभी उसी पर विश्वास करें। जो उसे जानना चाहते है, उनके लिए पूछताछ कमरा खुला है और उस पर भरोसा कीजिए, तो आप पाप से बच जाएंगे।

## रूपरेखा

# प्रायश्चित!

(यशायाह ५३ से ग्यारहवां संदेश)

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा

''तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको
रोगी कर दिया : जब वह अपना प्राण दोषबलि करे''
(यशायाह ५३:१०)।

(लूका १६:२३; रोमियों ३:२५; ८:३२; प्रेरितों २:२३; यूहन्ना ३:१६)

I. पहला, यीशु को घायल किया, यशायाह ५३:१०अ; मत्ती २६:३१; मरकुस १४:२७; लूका २२:४४।
II. दूसरा, परमेश्वर ने यीशु को दु:खी किया, यशायाह ५३:१०ब; यूहन्ना ६:३८।
III. तिसरा, परमेश्वर ने यीशु का प्राण पाप के लिए भेंट कर दिया, यशायाह ५३:१०क; यशायाह ५३:९—१०अ, रोमियों ८:३२; १ पतरस २:२४; २ कुरिन्थियों ५:२१; यूहन्ना १:२९।

# उद्धारक की जीत!

(यशायाह ५३ से बारहवां संदेश)

**THE SAVIOUR'S TRIUMPH!**

**(SERMON NUMBER 12 ON ISAIAH 53)**

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

इस संदेश का प्रचार लोस एंजलिस में बप्तीस टबरनेकल में
प्रभु का दिन अप्रैल १४, २०१३ सुबह को किया गया था।
A sermon preached at the Baptist Tabernacle of Los Angeles
Lord's Day Morning, April 14, 2013

''तब वह अपना वंश देखने पाएगा, बहुत दिन जीवित रहेगा, उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी'' (यशायाह ५३:१०)।

यशायाह ५३:१० का प्रथम भाग मसीह की प्रायश्चित्तिक मृत्यु के बारे में बताता है। कल शाम को मैं ने इसका प्रचार किया था। पहला आधा हिस्सा बताता है कि उसके पुत्र की पीड़ा का माध्यम पिता परमेश्वर है, सही में वे ही कारणभूत थे। डॉ. मेरील्ल अेफ. उंगर ने कहा, ''परमेश्वर ने उसे पीड़ित करने के लिए कुचल डाला'' (Merrill F. Unger, Ph.D., ***Unger's Commentary on the Old Testament,*** Moody Press, 1981, volume II, p. 1299). यशायाह ५३:१० का पहला हिस्सा कहता है,

> ''तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया : जब वह अपना प्राण दोषबलि करे...''
> (यशायाह ५३:१०अ)।

The Keil and Delitzsch ***Commentary on the Old Testament*** says,

> मनुष्यों ने ही उस पर (मसीह) ऐसी कुचल देनेवाली पीड़ा अधिरोपित की थी, ऐसा गहरा दु:ख; *किन्तु सबसे महत्तवपूर्ण वजह है पिता परमेश्वर,* जिन्होने मनुष्यों के पाप मिटाने (का मोल चुकाने) को अपने आनंद, स्वेच्छा, और पूर्वनिश्चित इच्छा के लिए ऐसा होने दिया (Eerdmans, 1973 reprint, vol. VII, part II, p. 330).

किन्तु अब हम, यशायाह ५३:१० का दूसरा हिस्सा देखेंगे, मसीह की पीड़ा का परिणाम क्या हुआ, उसका क्या फल निकला। उनके दुख उठाने और मृत्यु ने उनके पुनरूत्थान की जीत को इस पृथ्वी पर उनके लोगों की जीत का आधार बना डाला है!

कृपया करके फिर से खड़े हो जाइए और वचन का दूसरा हिस्सा पढ़े, ''तब वह देखने पाएगा'' की शुरूआत से पढ़िए।

> ''...तब वह अपना वंश देखने पाएगा, बहुत दिन जीवित रहेगा, उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी''
> (यशायाह ५३:१०ब)।

आप बैठ जाइए। पद के तीन आश्चर्यजनक (अद्‌भुत) परिणाम पर ध्यान दें जो मसीह की पीड़ा से आये!

**I. पहला, वह अपना वंश देखने पाएगा!**

> ''वह अपना वंश देखने पाएगा'' (यशायाह ५३:१०)।

यीशु की मृत्यु का वह पहला परिणाम है। ''वह अपना वंश देखने पाएगा।'' यह मसीह की आध्यात्मिक वंश के संदर्भ में है। लाखों लोग मसीह में आए और ''उनके वंश'' बने। यीशु ने भविष्यवाणी की थी जब उन्होंने कहा,

> ''और पूर्व, और पश्चिम; उत्तर और दक्खिन से लोग आकर परमेश्वर के राज्य के भोज में भागी होंगे'' (लूका १३:२९)।

पिन्तेकुस्त के दिन के बाद सारे संसार के लोग मसीह में आये। और अंत में, जब यीशु इस संसार में वापस स्वर्गलोक से आएगा,

> ''उसका वंश पृथ्वी का अधिकारी होगा'' (भजनसंहिता २५:१३)।

किन्तु मसीह के दूसरी बार फिर से आने तक उसके वंश को देखने के लिए रूकना नहीं पड़ा। उसकी मृत्यु से पुनरूत्थान के बाद, तुरन्त ही, उसने उन्हें देखा, और उन्होंने उसे देखा! प्रेरित पौलुस ने कहा,

> ''(पतरस) कैफा को, तब बारहों को दिखाई दिया: फिर वह पाँच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया...उसके बाद वह...सब प्रेरितों को दिखाई दिया। सबके बाद मुझको भी दिखाई दिया'' (१ कुरिन्थियों १५:५–८)।

उसके वंश ने उसे देखा। जैसे प्रेरित यूहन्ना ने इस तरह रखा,

> ''उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था, जिसे हमने सुना, और जिसे अपनी आँखो से देखा'' (१ यूहन्ना १:१)।

और उसने अपने वंश को देखा, जब वह मृत्यु से जी उठा,

> ''तब...यीशु आया और उनके बीच में, खड़ा होकर उनसे कहा, तुम्हें शान्ति मिले। और यह कहकर, उसने अपना हाथ और अपना पंजर उनको दिखाए। तब चेले प्रभु को देखकर, आनंदित हुए'' (यूहन्ना २०:१९–२०)।
>
> ''वह अपना वंश देखने पाएगा।''

उन्होंने *उसे* देखा और उसने *उनको* देखा – और वे उसके वंश थे, उनके आध्यात्मिक वंश! जब वह मृत्यु से जी उठा, उसने अपना वंश देखा!

यीशु के स्वर्गारोहण के बाद, पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से तीन हजार लोग परिवर्तित हुए। फिर से यशायाह में किया गया वादा परिपूर्ण हुआ। स्वर्ग से देखते हुए, यीशु ने अपने वंश को देखा। जैसे प्रेरितों की संपूर्ण किताब में दिया हुआ है। पुनरूत्थान पाये हुए मसीह ने महिमा के सिंहासन से नीचे देखा और जिन बहुसंख्या में लोगो ने उस पर भरोसा किया वे सभी उसके वंश बने।

और वर्षों से यही होता आ रहा है। यीशु ने स्वर्ग से नीचे देखा और देखा कि पूरे संसार में उनके वंश बढ रहे है; इस तरह यशायाह की भविष्यवाणी पूरी हुई, कि ''वे पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्खिन से, और...परमेश्वर के राज्य के भोज में भागी होंगे'' (लूका १३:२९)।

हाँ, यह वायदा पूरे इतिहास में लाखों बार पूरा किया गया है, और संसार के हर कोने में।

''वह अपना वंश देखने पाएगा।''

और आप जब आस्था से यीशु के पास आएंगे, तब आप भी देखेंगे! आप भी अधिक संख्या में जो उसके वंश है उसके साथ शामिल होंगे – धरती पर और स्वर्ग में भी।

''वह अपना वंश देखने पाएगा।''

हम सभी कितने आनंदित होंगे जब मसीह ने धन्य और गौरवशाली दृश्य देखा है – जब हर जाति के पुरूष और स्त्री और देश के लोग उस पर विश्वास करेंगे, और हमेशा के लिए उसके संग शामिल हो जाएँगे! हाँ,

''वह अपना वंश देखने पाएगा।''

मेरी पत्नी और मैंने एक अद्‌भुत डी.वी.डी. एक रात को देखी थी। उसमें बताया था कि इरान देश में एक के बाद एक मुसलमान, मसीही बन रहे थे। इरान में एक मुसलमान स्त्री ने कहा था, ''मैंने सभी आशा छोड़ दी थी।'' फिर उसने यीशु में आस्था रखी। एक जवान आदमी ने कहा, ''मैं मुसलमान रहना नहीं चाहता हूँ।'' उसने भी, यीशु पर विश्वास किया और मसीही बना। पिछले १५०० वर्षों से इरान में अधिक लोग यीशु पर विश्वास करने लगे हैं! मुसलमान देशों में हजारों लोग मसीही बनने के लिए अपनी जान को खतरे में ड़ाल रहे है! आज यीशु सारे मुसलमान देशों में ''अपने वंश'' को बढ़ता देख रहे है! और अरेबिक (Arabic) भाषा में संदेश पढ़ने के लिए अपनी वेबसाईट पर जाएँ!

और इसी अंतिम जीत में, जब मसीह अपनी महिमा में अपना राज्य स्थापित करने धरती पर आएगा, जब वह फिर से आएगा राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु बनकर,

''उसका वंश पृथ्वी का अधिकारी होगा'' (भजनसंहिता २५:१३)।

और *''वह अपना वंश देखने पाएगा,''* प्रभु ने अपने मुँह से कहा है! ''जीसस शेल रेंइन'' गाईए!

जीसस शेल रेंइन वेरएवर द सन
डझ हीज सक्सेसीव जरनीज रन;
हीस किंगड़म स्प्रेड फ्रोम शोर टू शोर,
टील मूंस शेल वेक्स एंड वेन नो मोर।
("Jesus Shall Reign" by Isaac Watts, D.D., 1674-1748).

## ।।. दूसरा, बहुत दिन तक जीवित रहेगा!

यशायाह ५३:१० के पद को फिर से देखेंगे, क्योंकि यहाँ ही यीशु की पीड़ा और मृत्यु का दूसरा परिणाम है।

''तब वह अपना वंश देखने पाएगा, *बहुत दिन जीवित रहेगा*''
(यशायाह ५३:१०)।

मसीह की मृत्यु का दूसरा प्रभाव, ''बहुत दिन तक जीवित रहेगा,'' क्योंकि वह क्रूस पर मरा लेकिन उसके जीवन का अंत नहीं हुआ। कब्र उसके शव को लंबें समय तक रख नहीं सकी। तीसरा दिन आया और विजयी मसीह पुर्नज्जीवित हुए। उसने मौत की लोहे की जंजीरे तोड़ दी और कब्र से बाहर निकल आया, और फिर कभी नहीं मरा! ''क्योंकि वह जो, मर गया तो पाप के लिए एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है तो परमेश्वर के लिए जीवित है।'' (रोमियों ६:१०)।

''क्योंकि वह जानते हैं कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं; उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने का''
(रोमियों ६:९)।

''द थ्री सेड डेयस्,'' गाईए!

छ थ्री सेड डेज हेव क्वीकली स्पेड;
ही राईसीस ग्लोरीयस फ्रोम द डेड़:
ओल ग्लोरी टू अवर लीवींग हेड़! हल्लेलुया!
हल्लेलुया! हल्लेलुया! हल्लेलुया!
("The Strife is O'er," translated by Francis Pott, 1832-1909).

''बहुत दिन जीवित रहेगा,''

''पर यह युगानुयुग रहता है...क्योंकि वह उनके लिए विनती करते है की *सर्वदा* जीवित है'' (इब्रानियों ७:२४, २५)।

स्पर्जन ने कहा, ''स्वर्ग की ऊँचाई से उसने (नीचे) देखा कि पृथ्वी के कई लोग उसके वंश है...स्वर्ग में जिसने अनगिनत तारें है उतने, धरती की धूल के कण जितने, हमारे प्रभु यीशु के वंश है'' (C. H. Spurgeaon, ***The Metropolitan Tabernacle Pulpit***, Pilgrim Publications, 1978 reprint, volume 51, p. 565).

> ''वह अपना वंश देखने पाएगा, *बहुत दिन जीवित रहेगा...*''
> (यशायाह ५३:१०)।

## ।।।. तिसरा, उसके कार्य से समृद्ध होगा!

खडे होकर *पूरा* वचन जोर से पढें, खास कर के अंतिम खंड को ध्यान में रखते हुए, ''और आनंद'' शब्द से आरंभ करते हुए।

> ''तब वह अपना वंश देखने पाएगा, बहुत दिन जीवित रहेगा,
> *उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी''*
> (यशायाह ५३:१०)।

यही तीसरा कारण है यीशु की 'मृत्यु' का, ''और उसके हाथ यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी।'' स्पर्जन ने कहा,

> (उन्नीस) सौं वर्ष गुजर गए है उसको मृत्यु से जीवित होकर नये जीवन में आने के बाद और फिर भी वह जीवित है; और हम जानते है, जब तक ये पृथ्वी स्थित है, उसके दिन जारी रहेंगे। हाँ और अंत में, जब वह परमेश्वर, पिता के राज्य का आरंभ करेगा तौभी वह उसके दिनों को बढ़ाएगा। ''थाइ थ्रोण, ओ गॉड, इस फोर अेवर एंड अेवर,''*दाउ* शैल एंड्युर, दौ द माऊँटन्स पेरीश, एंड दो द स्काईस् आर रोल्ड अप लाईक अ वेसच्यर थाट इस वोंन आऊट (स्पर्जन, ibid.)।
>
> ''और उसके हाथ से यहोवा की *इच्छा पूरी* हो जाएगी''
> (यशायाह ५३:१०)।

भला आनंद, इच्छा, प्रभु का मकसद, ''उसके हाथों समृद्ध होगा।'' पिता परमेश्वर ने यीशु से कहा,

> ''मैं तुझे जाति के लिए ज्योति ठहराऊँगा कि मेरा उद्धार पृथ्वी की एक और से दूसरी ओर तक फैल जाए''
> (यशायाह ४९:६)।
>
> ''जाति—जाति तेरे पास प्रकाश के लिए...जाति जाति की धन सम्पति तुझको मिलेगी'' (यशायाह ६०:३, ५)।
>
> ''देखो, ये दूसरे आएँगे: और, ये, उत्तर और पश्चिम से, और सीनियों के देश से आएँगे'' (यशायाह ४९:१२)।
>
> ''और उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी''
> (यशायाह ५३:१०)।

कुछ महीनों पहले हमने चीन के बारे में एक वीडियो की प्रस्तुति देखी जिन्होंने श्व्हाईस ऑफ मार्टियर्स ने बाँटी थी। उसमें चीन के बूढे आदमी जिनका नाम मोसस शे (क्षे) ने गवाही दी थी। ''सांस्कृतिक क्रांति,'' के समय उसको हथकडी पहनाकर बीस वर्ष से ज्यादा समय कम्युनिस्टों ने कैद कर रखा था क्योंकि उसने मसीह के सुसमाचार का प्रकार किया था। निराशा की गहराई में, वह बहुत ही निराश था। फिर प्रभु ने उससे कहा, ''मेरे पुत्र, मेरा अनुग्रह तेरे लिए काफी है।'' भाई शे ने कहा कि उसने हृदय में तीन बार यह आवाज़ सुनी। वह रो पड़ा जब तीसरी बार उसने बोला। ''मेरे पुत्र, मेरा अनुग्रह तेरे लिए काफी है।'' कृतज्ञता से उसकी आँखे भर आयीं जैसे उसने मसीह के दिए उद्धार की सामर्थ्य को कम्युनिस्ट जेल में दोहराया।

फिर वीडियो स्थानांतरित कर दिया और हजारों चीनी कम्युनिस्टों को दिखाया गया जिसमें वे माओ त्से तंग, की पूजा करते रहे थे जो क्रूर तानाशाह था, जिसने हिटलर से भी अधिक लोगों को मारा था। जैसे वे माओ से तंग, की प्रशंसा करते हुए गाने लगे, मैंने सोचा, ''हम मसीही वहाँ होंगे तब तुम कम्युनिस्ट वहां नहीं रहोगे।'' जब चीनी कम्युनिस्ट पार्टी इतिहास की राख की ढेर पर होगी, मसीही धर्म तौभी वहाँ होगा, पहले से अधिक ताकतवर, क्योंकि आज यह बहुत ही अद्‌भुत रीति से बढ़ रहा है। ''हम लोग वहाँ होंगे जब तुम वहां जा चुके होंगे।'' और ऐसा ही सारी पृथ्वी पर होगा। मसीह के शत्रु, जहाँ भी होंगे, हम पूरे विश्वास से कह सकते है, ''हम मसीही वहाँ होंगे जब तुम कम्युनिस्ट जा चुके होंगे!'' क्योंकि ''उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी *हो* जाएगी''!

आज लोगों की नजरों में मसीही लोग नीच और तुच्छ दिखाई देते होंगे। शायद हमारी ठट्ठा और तुच्छता उड़ती होगी, जैसे उद्धारक की इस धरती पर हुई थी। किन्तु मसीह मृत्यु से जी उठा, और ''उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी।'' इसलिए, सच्चे मसीही चाहे कितने भी तुच्छ और धिक्कारे जाते होंगे, वे ''उसके हाथ से समृद्ध होंगे।'' और अंत में,

> ''जगत का राज्य हमारे प्रभु *का* और उसके मसीह का हो गया,
> और वह युगानुयुग राज्य करेगा'' (प्रकाशितवाक्य ११:१५)।

तो मेरे भाइयों, हम देख पाएँगे कि यीशु की मृत्यु से क्या पूरा हुआ, क्योंकि ''उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी।'' यीशु सारी धरती पर राज करने वापस आ रहा है!

जीसस शेल रेंइन वेरएवर द सन
डझ हीस सक्सेसीव जरनीज रन;
हीस किंगड़म स्प्रेड फ्रोम शोर टू शोर,
टील मूंस शेल वेक्स अेंड वेन नो मोर।
("Jesus Shall Reign" by Isaac Watts, D.D., 1674-1748).

ही इज़ कमींग अगेइन, ही इज़ कमींग अगेइन,
द वेरी सेम जीसस, रीजेक्टेड ऑफ मेन;
ही इज़ कमींग अगेइन, ही इज़ कमींग अगेइन,
वीथ पावर एन्ड ग्रेट ग्लोरी, ही इज़ कमींग अगेइन!
("He Is Coming Again" by Mabel Johnston Camp, 1871-1937).

अब, मैं जानता हूँ कि आप में से कई लोग आज की सुबह आश्चर्यचकित होंगे कि हम इतने उत्साहित क्यों है। आप सोचते होंगे, ''ये लोग इतने जुनूनी किस लिए है? इन बातों को क्यों आप सराहते है?'' मुझे निश्चित ही पता है कि आपमें से कई लोग लम्बे समय से इसे महसूस करते हुए कलसिया में जाते होंगे। आप सोचेंगे, ''क्या हमें इन सब से वापस गुजरना होगा? हमने पहले इसे सुना है। तो इतने उत्साहित क्यों है? इतने खुश क्यों है? बस इसे पूरा करने के लिए आप मात्र आमंत्रण क्यों नहीं देते?'' मुझे पता है आप में से कई लोगों को ऐसे लगता है। ''इतने उत्साहित क्यों?'' यह आपके लिए रहस्य है। आप इस उत्तेजना में प्रवेश नहीं कर सकते!

मैं जानता हूँ आप क्या महसूस करते हैं। देखो, मैं कोई बास्केट बॉल का प्रशंसक नहीं हूँ। मेरे लिए बास्केट बॉल गेम कोई उत्तेजनात्मक बात नहीं है! मेरे लिए संसार में सबसे कंटालाजनक खेल है। किन्तु आपमें से कई लोग इससे बहुत उत्साहित होंगे। यह फर्क क्यों? यह फर्क बहुत ही सरल बात है। आप उत्साहित होते हो, और मैं प्रशंसक नहीं हूँ! यह बहुत ही सरल बात है। जब आप लेकर्स को खेलते देखकर कुछ तो आपको उत्साहित करता है। मैं उस उत्साह में आपके साथ प्रवेश नहीं कर सकता। उसके लिए मुझे अपने स्वभाव में सिर्फ बदलाव की जरूरत है या तो मैं वो महसूस नहीं कर पाता जो आप कर पाते हैं।

यही बात मसीह की जीत में है। हम मसीह के पुनरूथ्थान और वापसी आने की बात को लेकर उत्साहित हो सकते है। आप उसके लिए उत्साहित नहीं हो सकते। हम मसीह के प्रशंसक है, और आप मसीह के प्रशंसक नहीं हो! आपके स्वभाव में बदलाव लाना जरूरी है तभी हमारी तरह आप भी मसीह की जीत के बारे में सोचने लगेंगे। पवित्र शधर्मशास्त्र इसके बारे में कहता है, ''परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी निगाह में मूर्खता की बातें है'' (१ कुरिन्थियों २:१४)। जबकि आप ''दैहिक मनुष्य'' हैं मसीह की जीत की बातें आपके लिए महत्वहीन है। उसके लिए आप उत्साहित नहीं हो सकते। *आपके स्वभाव में बदलाव लाना आवश्यक है मसीह की जीत के उत्साहित होने के लिए!* जो हम महसूस करते है उसे महसूस करने के लिए आपका परिवर्तन आवश्यक है!

टापको पता है कि हमारी तरह आपको भी महसूस करना चाहिए, किन्तु आप खुद से ऐसा महसूस नहीं कर सकते! चाहे कितनी भी कोशिश करें, आप अपने आप से ऐसा महसूस नहीं कर सके मसीह की जीत को लेकर! आप महसूस करना चाहते हैं, किन्तु आप कितनी भी कोशिशों के बावजूद नहीं कर पाते: आप को जिस तरह के व्यक्ति होना चाहिए हो नहीं हो पाते। *यही इसका मतलब है कि पाप से परिवर्तन होना चाहिए!*

आपको यीशु के पास आकर कहना है, ''प्रभु, जैसे तू चाहता है वैसा मैं नहीं हूँ! मैं भटक गया हूँ! मैं अधूरा हूँ। मैं खुद में बदलाव नहीं ला सकता! यीशु, मुझे बचा!'' और जब आप इस तरह महसूस करेंगे, आप उद्धार पाने के नजदीक हो। पाप की कबूलात से मसीह में परिवर्तन आयेगा!

और अब आप में से जो परिवर्तित नहीं हुए है, हम विनती करते हैं कि जी उठे हुए मसीह पर विश्वास करें। हम आपको प्रोत्साहित करते है कि अपने पापों को उसके कीमती लहू से धों ले। हम विनती करते है कि आप हमारे साथ आए और किसी भी कीमत पर उद्धारक के साथ मार्ग पर चले! हम जिनकी भुजा पर हैं, क्योंकि ''उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी।'' इसलिए मैं विनती करता हूँ कि यीशु पर विश्वास करें, परिवर्तन हो, और जीत की ओर अग्रसर हों!

कम, देन, एंड जोइन धीस हॉली बेंड,
एंड आन टु ग्लोरी गो,
टु डवेल इन देट सेलेस्टीयल लेंड,
व्हेर जोयस् इम्मोरटल फ्लो।
ओनली ट्रस्ट हीम, ओनली ट्रस्ट हीम,
ओनली ट्रस्ट हीम नाऊ।
ही वील सेव यु, ही वील सेव यु,
(क्राइस्ट) वील सेव यु नाऊ।
("Only Trust Him" by John H. Stockton, 1813-1877).

कोरस फिर से गाईए। जब हम ''ओनली ट्रस्ट हीम'' गायेंगे, अगर आप का पाप से बचाव नहीं हुआ है, मैं चाहता हूँ कि आप अपने स्थान से उठकर सभागृह के पीछे जायें। डॉ. कैगन आपको दूसरे कमरे में ले जायेंगे, जहाँ हम बात कर सके और प्रार्थना करेंगे। जब हम गा रहे है तब आप भी गाईए।

ओनली ट्रस्ट हीम, ओनली ट्रस्ट हीम,
ओनली ट्रस्ट हीम नाऊ।
ही वील सेव यु, ही वील सेव यु,
ही वील सेव यु नाऊ।

## रूपरेखा

# उद्धारक की जीत!

(यशायाह ५३ से बारहवां संदेश)

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा

''तब वह अपना वंश देखने पाएगा, बहुत दिन जीवित रहेगा,
उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी''
(यशायाह ५३:१०)।

I. पहला, अपना वंश देखने पाएगा! यशायाह ५३:१०अ; लूका १३:२९; भजनसंहिता २५:१३; १ कुरिन्थियों १५:५—८; १ यूहन्ना १:१; यूहन्ना २०:१९—२०।

II. दूसरा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा! यशायाह ५३:१०ब; रोमियों ६:१०, ९; इब्रानियों ७:२४, २५।

III. तिसरा, उसके कार्य से समृद्ध होगा! यशायाह ५३:१०क; ४९:६; ६०:३, ५; ४९:१२; प्रकाशितवाक्य ११:१५; १ कुरिन्थियों २:१४।

# मसीह से मिली हुई – तृप्ति और धर्मी ठहराना

(यशायाह ५३ से तेरहवां संदेश)

**SATISFACTION AND JUSTIFICATION – OBTAINED BY CHRIST**

**(SERMON NUMBER 13 ON ISAIAH 53)**

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

इस संदेश का प्रचार लोस एंजलिस में बप्तीस टबरनेकल में
प्रभु का दिन अप्रैल १४, २०१३ की शाम को किया गया था।
A sermon preached at the Baptist Tabernacle of Los Angeles
Lord's Day Evening, April 14, 2013

> ''वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर देखेगा, और तृप्त होगा: अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा'' (यशायाह ५३:११)।

यह वचन इतना अर्थपूर्ण है कि हर शब्द की और आपका ध्यान खींचना जरूरी है। इसलिए मैं इस पद से दूर नहीं जाऊँगा, न तो बहुत सारे उदाहरण दूँगा। इस वचन की अद्‌भुत सच्चाई पद में बताने के लिए काफी है; इसे इतने सरल और सादे शब्द में पेश किया है ताकि हर मुलाकाती इस शाम कलीसिया से इस सरल किंतु महत्वपूर्ण संदेश को जानते हुए घर जा सके, इन शब्दों का अर्थ है,

> ''वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर देखेगा, और तृप्त होगा: अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा'' (यशायाह ५३:११)।

इस वचन की सच्चाई को पाने के लिए परमेश्वर आपके हृदय के द्वार खोल दें। क्योंकि, हम आपसे कहते है कि जब इस पद का प्रचार किया जायेगा, तब ''आपके कान इस पर लगे रहे और तुम मेरे पास आओ। सुनो, और तुम्हारे प्राण जी उठेंगे।''

यह वचन तीन बातें बताता है। पहला, परमेश्वर के न्याय को मसीह ने तृप्त किया है। दूसरा, मसीह के ज्ञान से कई लोग सही ठहरे हैं। तीसरा, पाप ढोने वाला मसीह जो विश्वासी पापी में पूर्ण प्रायश्चित लाता है।

> ''वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर देखेगा, और तृप्त होगा: अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा'' (यशायाह ५३:११)।

## I. पहला, परमेश्वर के न्याय को मसीह ने तृप्त किया है।

> ''वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर देखेगा, *और तृप्त होगा...*''
> (यशायाह ५३:११)।

डॉ. जरजेन मोल्टमेन (१९२६—) जो जर्मन है, दूसरे विश्वयुद्ध में उन्हें ब्रिटीश की जेल में तीन साल के लिए कैदी बनाकर रखा था तब उन्होंने पवित्रशास्त्र की पढ़ाई शुरू की। कारावास के उस अनुभव से और पवित्रशास्त्र की, पढ़ाई कर उन्होंने ***History and the Triune God: Contributions to Trinitarian Theology*** (Crossroad, 1992) किताब लिखी। डॉ. मोल्टमन उदार धर्मशास्त्री है, और मैं अवश्य उन्होंने क्या लिखा था मानो सब *नहीं* बता सकता। किंतु, उनकी कुछ अंतदृष्टि है। जैसे कि, मोल्टमन क्रूस की घटना को इस तरह देखते है जिसमें परमेश्वर ने ''परमेश्वर को त्यागने वाली'' मानवजाति के लिए एकजुटता घोषित की। परमेश्वर ने पापियों के लिए प्रेम प्रकट किया है, और परमेश्वर पुत्र पिता से अलगाव सहते हैं, स्वयं ने परमेश्वर को ''अंदर से बाहर'' तक के दु:ख दर्द जानने की अनुमति दी। मोल्टमन कई बातों में सही नहीं रहे, किन्तु, उन्होंने त्रिएकत्व के व्यक्ति की क्रूस पर वध की पीड़ा और दु:ख को व्यक्त किया है। और मैं सोचता हूँ, यह महत्वपूर्ण मुद्धा है। मेरे विचार से, यह कुछ सोचनेवाली बात है — त्रिएकत्व के व्यक्ति का दर्द जो वधस्तंभ पर हुआ था।

> ''वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर देखेगा, और तृप्त होगा''
> (यशायाह ५३:११)।

स्पर्जन ने कहा,

> इन शब्दों में पिता परमेश्वर अपने पुत्र के बारे में चिंतित होकर कहते हुए नजर आते है, घोषणा करते हुए कि, उसने अपने प्राणो का दु:ख उठाया, वह निश्चित रूपसे संतुष्टकारक इनाम देगा। उद्धार के मामले में पवित्र त्रिएकत्व के अलग व्यक्तियों का साथ मिलकर कार्य करना कितनी रमणीय बात है! (C. H. Spurgeon, ***The Metropolitan Tabernacle Pulpit,*** Pilgrim Publications, 1980 reprint, volume 61, p. 301).

''वह'' माने, पिता परमेश्वर; ''अपने प्राणों का दु:ख उठाकर देखेगा,'' अर्थात, अपने पुत्र के प्राणों का दु:ख; ''और तृप्त होगा।'' जैसे स्पर्जन ने बताया है, ''इन शब्दों से हमें पिता परमेश्वर अपने पुत्र के बारे में चिंतित दिखते है।''

> ''वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर देखेगा, और तृप्त होगा''
> (यशायाह ५३:११)।

''प्राणों का दु:ख'' यह मसीह की आंतरिक पीड़ा और दु:ख के संदर्भ में है, जो उन्होंने हमारे पापों के लिए पीड़ा को अनुभव किया था। और निश्चित ही हमें मसीह की श्शारीरिक पीड़ा को कम नहीं आंकना चाहिए। मसीह के अधमुंए होने की दशा को कदापि हलका नहीं सोचना चाहिए जो पुन्तुस पीलातुस के कारण आधी हुई थी। मसीह पर थूकने

की और काँटो का ताज़ पहनाने की महत्वपूर्ण बात को कदापि कम नहीं समझना चाहिए। और उसके हाथ और पैरों को छेदने की महत्वपूर्ण बात को कम नहीं आंकना चाहिए, और जो पीड़ा और प्यास उसने क्रूस पर अनुभव की थी। ''फिर भी,'' स्पर्जन ने कहा, ''उसके प्राणों का दु:ख प्रमुख बात है और यही हमारा संदेश बताता है...यीशु मसीह ने (अत्यंत) इतना सहन किया कि, मैं उसकी पीड़ा की सोच को लेकर निराश होता हूँ या तो उसे तुम्हें किसी भी प्रकार के शब्दों से व्यक्त करता हूँ'' (Spurgeon, ibid., pp. 302-303). यह कहा गया है कि ''मसीह के प्राण की पीड़ा उसके प्राणों का दु:ख था'' (ibid., p. 302), उसकी दु:ख का केंद्र, उसके दर्द का मुख्य भाग।

''पीड़ा'' शब्द अर्थात उसकी पीड़ा, दु:ख और ''उसके प्राणों का'' दर्द जो मसीह ने अनुभव किया था जब मनुष्य के पाप का बोझ, और पिता परमेश्वर का न्याय, उसके ऊपर नीचे उतर आया था। इसका मसीह ने स्पष्ट रूपसे गेतसमनी के बाग में अनुभव किया था, उसके पकड़े जाने के पहले कोडे लगवाने के पहले, उसके क्रूस पर चढाने के पहले। और इसमें प्राणों के दर्द और पीड़ा भी शामिल है जो उन्होंने अनुभव क्रूस पर जारी रखा था। जैसे डॉ. गिल ने इस तरह पेश किया,

> *उसके प्राणों की पीड़ा* जो उसने परिश्रम और श्रम उसने सहा, अपने लोगों के उद्धार के कार्य के लिए; उसकी आज्ञाकारिता और मृत्यु; उसके दु:ख और पीड़ा; खास करके जो प्राणों की वेदना, ईश्वरीय क्रोध को सामने रखते हुए, जैसे कि स्त्री की वेदना का संकेत (जन्म देते समय की पीड़ा); और मृत्यु की सारी पीड़ा और दर्द जिससे होकर गुजरना पड़ा (John Gill., D.D., ***An Exposition of the Old Testament,*** The Baptist Standard Bearer, 1989 reprint, volume 5, p. 315).

> ''वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर देखेगा, *और तृप्त होगा...*''
> (यशायाह ५३:११)।

''और तृप्त होगा'' यह बात परमेश्वर के क्रोध का प्रायश्चित बताता है कि अब पिता परमेश्वर ''तृप्त'' है या, तो हम कह सकते है प्रायश्चित पूर्ण हुआ,

> ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया'' (२ कुरिन्थियों ५:२१)।

> ''और वही हमारें पापों का प्रायश्चित है'' (१ यूहन्ना २:२)।

> ''उसे परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया'' (रोमियो ३:२५)।

डॉ. जॉन मेकआर्थर, हालांकि मसीह के लहू पर गलत विचार रखते हैं, किंतु यह बात सही कही,

> (प्रायश्चित) शब्द का अर्थ है ''तुष्टीकरण'' या ''संतोष।'' यीशु के क्रूस पर के बलिदान ने परमेश्वर की पवित्रता की माँग को तृप्त किया हमारे पाप की सजा के लिए...इस तरह यीशु ने

> प्रायश्चित कर या तो परमेश्वर को तृप्त किया (John MacArthur, D.D., ***The MacArthur Study Bible,*** Word Publishing, 1997, note on १ यूहन्ना २:२).

मुझे बहुत ही अजीब लगता है कि मसीह के लहू पर इनके गलत विचार होना, किन्तु प्रायश्चित को सही ठहराना! इस प्रकार, हम प्रायश्चित का संदर्भ देखते है परमेश्वर का पाप के प्रति उपजे क्रोध का समाधान, जिस प्रायश्चित को यीशु ने अपनी पीड़ा में अनुभव किया। यीशु की पीड़ा ने परमेश्वर के न्याय को, प्रायश्चित, तुष्टिकरण, पाप के लिए उनके क्रोध को ''तृप्त किया''

> ''जो पाप से अज्ञात था, (गॉड फार्दर) उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें (क्राईस्ट द सन) होकर परमेश्वर की धामिकता बन जाएँ'' (२ कुरिन्थियों ५:२१)।

> ''वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर देखेगा, और तृप्त होगा...'' (यशायाह ५३:११)।

मसीह की पीड़ा ने परमेश्वर के न्याय को तृप्त किया, ताकि हमारा बचना संभव हो सके।

## ।।. दूसरा, मसीह के ज्ञान से कई लोग उचित ठहरे है।

हम सब खड़े हो जाए और वचन जोर से पढ़ेंगे, अंत के शब्द ''उचित ठहरे'' के साथ।

> ''वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर देखेगा, और तृप्त होगा: *अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा..*'' (यशायाह ५३:११)।

आप बैठ सकते है।

नबी यशायाह ने यशायाह ५३:१३ में मसीह को परमेश्वर के ''दास'' के संदर्भ में बताया है। और यहाँ, हमारे वचन में, मसीह को परमेश्वर का ''धर्मी दास,'' बताया है। मसीह धर्मी है क्योंकि वह ''पाप से अज्ञात था'' (२ कुरिन्थियों ५:२१)। वह परमेश्वर का निष्कलंक पापी पुत्र है, पिता परमेश्वर का ''धर्मी दास'' है।

मसीह कई ''लोगों को उचित ठहराएगा'' (v. ११) यही तो सुसमाचार का दिल है। परमेश्वर के नियम का पालन करके हम अपने आप को उचित नहीं ठहरा सकते, क्योंकि

> ''क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा'' (रोमियो ३:२०)।

हम अपने आपको उचित नहीं ठहरा पाते क्योंकि प्राकृतिक रूप से हम पापी है। केवल मसीह की धार्मिकता का हमारे ऊपर आरोपण करने से हमारी गिनती धर्मी में होती है ''आरोपण'' कानूनी है। हम कानूनी तौर से धर्मी गिने जाते है केवल मसीह की धार्मिकता

हमारे ऊपर डालने से। परमेश्वर का ''धर्मी दास कई लोगों को उचित (ठहराएगा)'' (यशायाह ५३:११) उन पर उसकी धार्मिकता को डालने से!

> ''वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर देखेगा, और तृप्त होगा: अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा..'' (यशायाह ५३:११)।

जॉन ट्रेप ने हमें याद दिलाया है कि कार्डिनल कोन्टेरीनस को दूसरे कॅथोलिक कार्डिनल पीघीयस के द्वारा मार डाला गया था क्योंकि कोन्टेरीनस का मानना था यह वचन बिलकुल सही है, उसे ''प्रोटेस्टन्ट'' कहा गया और वह उसके इस विश्वास के लिए कि ''मनुष्य का उचित ठहराना मुफ्त (में) दी गई परमेश्वर की करूणा और मनुष्य की योग्यता'' के कारण है, मारा गया (John Trapp, ***A Commentary on the Old and New Testaments,*** 1997 reprint, volume III, pp. 410-411, note on यशायाह ५३:११). परन्तु कार्डीनल कोन्टेरीनस सही था! और दूसरे अन्य कार्डीनल गलत थे!

''मेरा धर्मी दास बहुतेरों (को) धर्मी ठहराएगा,'' क्या यह शब्द मरने के काबिल नहीं हैं? वास्तव, में वे थे! यही हमारे बाप्तीस्त और प्रोटेस्टन्ट लोगों के विश्वास का केंद्र है! हम अपने आपको धर्मी नहीं ठहरा सकते, जैसे फीने के निर्णयकार पंथी और कॅथोलिक्स सिखाते है! ओह नहीं!

> ''तौ भी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, *पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहराता है''* (गलातियों २:१६)।

> ''इस लिए व्यवस्था मसीह तक पहुँचाने के लिए हमारी शिक्षक हुई है कि हम *विश्वास से धर्मी ठहरें''* (गलातियों ३:२४)।

यही मसीह, जो परमेश्वर का ''धर्मी दास,'' है बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा!

किंतु यह कैसे हुआ? मसीह में कैसे बहुतेरे ''धर्मी ठहरे'' है? क्या कई पापों के कार्य को छोडने से उन्हें धर्मी ठहराया है? नहीं! ये तो कॅथोलिक्सीझम और डीशिसनीझम है! क्या वह उनको केवल ''पापियों की प्रार्थना'' कहने से या संदेश के अंत में ''आगे आने से'' धर्मी ठहराएगा? नहीं! ये तो कॅथोलिक्सीझम और डीशिसनीझम है! क्या वे धर्मी ठहराएँगे केवल ''उद्धार की योजना'' सीखने से और यूहन्ना ३:१६ याद करने से और ''पापियों की प्रार्थना'' करने से? नहीं! वो भी कॅथोलिक्सीझम और डीशिसनीझम है!

फिर, तुम कैसे, धर्मी ठहराओगे? परमेश्वर की नजर में आप निर्मल और धर्मी कैसे बनोगे? यह अनन्त प्रश्न है! अय्यूब की किताब में से बिलदद ने हुआ बड़ा प्रश्न रखा है! उसने कहा,

> ''फिर मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी कैसे ठहर सकमा है? और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ है वह कैसे निर्मल हो सकता है?'' (अय्यूब २५:४)।

और फिर इस वचन से हमें उत्तर मिलता है,

> ''अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा''
> (यशायाह ५३:११)।

या, तो जैसे स्पर्जन ने भाषांतर किया है, ''अपने ज्ञान के द्वारा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा'' (C. H. Spurgeon, ***The Metropolitan Tabernacle Pulpit,*** Pilgrim Publications, 1980 reprint, volume 63, p. 117). और स्पर्जीयन ने कहा,

> मेरी समझ में मसीह के बलिदान को पूरी तरह समझने के लिए उसको जानना और मानना (विश्वास करना) जरूरी है – कार्य करने से नहीं...''व्यवस्था के कार्य से मनुष्य धर्मी नहीं ठहराया जाता।'' ''अनुग्रह और शांति यीशु मसीह से आती है,'' ''वो अपने पास तब आती है,'' जब हम उसे मानते हैं या तो उसकी जानकारी द्वारा – या उसे जानने से... उसके द्वारा...हम धर्मी ठहराए जाते है'' (ibid.).

> ''परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्तिहीन के धर्मी ठहराने वाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है'' (रोमियों ४:५)।

> ''प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा'' (प्रेरितों १६:३१)।

> ''अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा''
> (यशायाह ५३:११)।

मसीह की पीड़ा परमेश्वर के न्याय को तृप्त करती है। मसीह के ज्ञान द्वारा बहुतेरों को धर्मी ठहराया जाएगा। और –

## ।।।. तीसरा, पाप को ढोने वाला मसीह अपराधियों को प्रायश्चित लाता है।

कृपया करके खड़े होकर वचन फिर से पढिये, अंतिम छः शब्दों को ध्यान में रखते हुए।

> ''वह अपने प्राणों का दुःख उठाकर देखेगा, और तृप्त होगा: अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; *और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा''*
> (यशायाह ५३:११)।

आप बैठ सकते हैं।

मसीह ''बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा, *क्योंकि उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा।''* इसका अर्थ है, वह उनके पापों का बोझ उठाएगा। हमारे धर्मी ठहराने का पूरा आधार हमारे प्रायश्चित और उद्धार की नींव पर है, यह इन शब्दों में बताया गया है, ''उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा।'' यशायाह ५३:५ कहता है,

> ''परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया: हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ'' (यशायाह ५३:५)।

यशायाह ५३:६ कहता है,

> ''और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया'' (यशायाह ५३:६)।

यशायाह ५३:८ कहता है,

> ''मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी'' (यशायाह ५३:८)।

और १ पतरस २:२४ कहता है,

> ''वह आप हो हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ गया'' (१ पतरस २:२४)।

जैसे स्पर्जन ने अपने वचन का भाषांतर किया है, ''...उसके ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा।''

यहाँ हमारे लिए मसीह के सुसमाचार की प्रथम टिप्पणी है – सीधी और सरल। मसीह की पीड़ा ने परमेश्वर के न्याय को तृप्त किया है। जानते हुए कि मसीह ने अपने आप में हमें धर्मी ठहराया है। पाप ढोने वाला मसीह उन पापियों के लिए संपूर्ण उद्धार लाता है जो विश्वास से मसीह को जानते है। अद्‌भुत सुसमाचार! चमत्कारिक मौचक! इसके पहले और बाद में पूरे इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ है!

> ''वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर देखेगा, और तृप्त होगा: अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा'' (यशायाह ५३:११)।

एक रात जब मैं वेस्ली और कलाकर जॉन काराडाईन के बारे में इंटरनेट पर पढ़ रहे थे। उसने ३०० से ज्यादा चलचित्र में काम किया, किसी अन्य कलाकार से भी अधिक। जब उसकी मिलान इटली में मृत्यु हुई, तब उसका देह शवपेटी में रखकर उसके पुत्रों में से एक पुत्र के घर भेजा गया। बेटा बहुत पीता था। उसने शवपेटी खोली और मृत पिता के मुँह में दारू डाली।

अब, मैं आपसे पूछूंगा, क्या मृत व्यक्ति दारू का स्वाद जानेगा? बिलकुल नहीं! और जब मैं आपसे मसीह के चमत्कारिक कार्य के बारे में जो उसने हमें बचाने के लिए की है उसे बताऊँगा, तो आप परख नहीं पाएंगे। ऐसा क्यों? क्योंकि आप आध्यात्मिक रूप से मृत हैं। जैसे पवित्र शास्त्र में बताया है, तुम ''अपराधों के कारण मरे हुए थे'' (एफिसियों २:५) यही तो पाप का प्राकृतिक स्वभाव है। आप महसूस ही नहीं कर पाते। परमेश्वर की बातों के बारे में, तुम शवपेटी के जॉन कारडाईन जैसे मृत हो। मसीह ही

आपको जीवन देने वाला है नहीं तो आप अनंतकाल में खो जाएंगे! आपको पुकार निकलनी चाहिए, ''मैं कैसे अभाग मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुडाएगा?'' (रोमियों ७:२४)।

जब स्त्री या पुरूष व्यक्ति इस तरह से पूरे हृदय की गहराई से, रो पडेगा, तब वे उद्धार पाने के नज़दीक है। क्या तुम तरह से रो पड़े हैं? क्या आप महसूस करते हैं कि आप परमेश्वर की ओर से मृत हैं? और मसीह ही आपको बचा सकता है? क्या आप मसीह में परिवर्तित हो? अगर नहीं हो, तो क्या आप मसीह की ओर देखोगे, परमेश्वर का मेम्ना जिसने जगत के पाप को ढोया है? क्या आप उसकी ओर देखेंगे और अब विश्वास करेंगे?

इफ यू फ्रोम सिन आर लोंगींग टु बी फ्री,
लुक टु ध लेम्ब ऑफ गॉड;
ही, टु रीडीम यु, डाईड ऑन कालवरी,
लुक टु ध लेम्ब ऑफ गॉड।
लुक टु ध लेम्ब ऑफ गॉड, लुक टु ध लेम्ब ऑफ गॉड,
फोर ही अलोन इज अेबल टु सेव यु,
लुक टु ध लेम्ब ऑफ गॉड।
("Look to the Lamb of God" by H. G. Jackson, 1838-1914).

## रूपरेखा

# मसीह से मिली हुई – तृप्ति और धर्मी ठहराना

(यशायाह ५३ से तेरहवा संदेश)

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा

''वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर देखेगा, और तृप्त होगा: अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा'' (यशायाह ५३:११)।

I. पहला, मसीह की पीड़ा से परमेश्वर के न्याय की तृप्त, यशायाह ५३:११अ; २ कुरिन्थियों ५:२१; १ यूहन्ना २:२; रोमियों ३:२५।

II. दूसरा, मसीह के ज्ञान से बहुतेरों को उचित ठहराएगा, यशायाह ५३:११ब; ५२:१३; २ कुरिन्थियों ५:२१; रोमियों ३:२०; गलातियों २:१६; ३:२४; अय्यूब २५:४; रोमियों ४:५; प्रेरितों १६:३१।

III. तीसरा, पाप को ढोने वाला मसीह अपराधियों को प्रायश्चित लाता है, यशायाह ५३:११क; यशायाह ५३:५, ६, ८; १ पतरस २:२४; एफिसियों २:५; रोमियों ७:२४।

# मसीह की महिमा का स्तोत्र

(यशायाह ५३ से चौदहवा संदेश)

# THE SOURCE OF CHRIST'S GLORY

**(SERMON NUMBER 14 ON ISAIAH 53)**

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

इस संदेश का प्रचार लोस एंजलिस में बप्तीस टबरनेकल में
प्रभु का दिन अप्रैल २१, २०१३ की सुबह को किया गया था।
A sermon preached at the Baptist Tabernacle of Los Angeles
Lord's Day Morning, April 21, 2013

> ''इस कारण मैं उसे महान् लोगों के संग भाग दूँगा, और वह सामर्थियों के संग लूट बाँट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिए उण्डेल दिया: वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और अपराधियों के लिये विनती करता है'' (यशायाह ५३:१२)।

जॉन ट्रेप एक शुद्धिवादी सत्रहवी सदी के प्रचारक थे (१६०१–१६६९) कहा गया है कि वे ''मेहनती और उत्कृष्ट प्रचारक थे, (उनकी) प्रसिद्धि संपूर्ण पवित्रशास्त्र पर उनकी ***टिप्पणी*** पर टिकी हुई है, जो (हमें उदाहरण देती है) शुद्धिवादी पवित्रशास्त्र की उत्तम पढ़ाई देते हैं;विचित्र हास्य और गहरी विद्धता उनकी विशेषता हैं'' (Elgin S. Moyer, Ph.D., ***Who Was Who in Church History,*** Keats Publishing, 1974, p. 410). ट्रेप्स की टिप्पणी की स्पर्जन ने अत्यधिक सिफारिश की थी। यशायाह त्रेपन कि संदर्भ में, जॉन ट्रेप ने कहा है,

> इसमें हर शब्द पर वजन दिया गया है, और वह निश्चित है कि प्रेरितों और धर्मप्रचारक, अपने उद्धार के रहस्य का वर्णन करते हुए, यशायाह के इस अध्याय पर महान सम्मान देते है...और इस भविष्यद्पक्ता को जरूरी बनाता है, जब उसने यह बातें लिखी, वह एक बहुत ही महान आत्मा के साथ जुडा था, क्योंकि यहाँ पर स्पष्ट रूप से प्रभु यीशु मसीह का दोहरे राज्य के बारे में दुख उठाना और उमंग को बताया है, जब कि दूसरे (लेखक) पुराने नियम के नये (नियम) से प्रकाश लेते हैं, यह अध्याय नये नियम में प्रकाश डालने की ओर अग्रसर है (John Trapp, ***A Commentary on the Old and New Testaments,*** Transki Publications, 1997, volume III, page 410).

वास्तव में, आज की सुबह का संदेश ''प्रकाश देता है'' है और नये नियम में जो पढ़ते है उसके बारे में गहराई से समझ देता है। यशायाह त्रेपन में नये नियम को समझाने के बजाय, दूसरी तरह से व्यक्त किया है। यशायाह ५३ हमें नया नियम समझने में सहायक है! जो बहुत ही असामान्य बात है डॉ. जेक वॉरेन ने कहा था, ''इस अध्याय (यशायाह

५३) की समाप्ति बहुत ही दिलचस्प बात से है: इसमें उद्धारकर्ता ने अपना प्राण अपराधियों के लिए उण्डेल दिया और सम्मानित हुआ'' (Jack Warren, D.D., ***Redemption in Isaiah 53,*** Baptist Evangel Publications, 2004, p. 31).

> ''इस कारण मैं उसे महान् लोगों के संग भाग दूँगा, और वह सामर्थियों के संग लूट बाँट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिए उण्डेल दिया: वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और अपराधियों के लिये विनती करता है'' (यशायाह ५३:१२)।

अभी, आज की सुबह, मसीह उनके पिता द्वारा दिया हुए ईनाम का आनंद ले रहे है – ''इस लिए मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूँगा।'' स्वर्ग में कोई भी यीशु को तुच्छ नहीं जानता न अस्वीकर करता है। स्वर्ग का संपूर्ण मेजबान उसे प्यार करता है! सारी महिमा उसके सिंहासन के इर्द गिर्द प्रदर्शित की गयी है, पिता के दाहिने हाथ पर। मसीह ने ऐसा क्या किया है जो उसे इतना सम्मान और महिमा दी गई है? क्यों वो महान लोगों के ''संग के भाग का, और...सामर्थियों के संग लूँट बाँट लेगा इसका हकदार है''? इसका उत्तर यही ही है कि उसने चार चीजें की है।

## I. पहला, उसने अपना प्राण मृत्यु के लिए उण्डेल दिया।

> ''उसने अपना प्राण मृत्यु के लिए उण्डेल दिया...''
> (यशायाह ५३:१२)।

मसीह ने यह जानबूझकर किया। उन्होंने यह सोचकर और संभलकर किया था, न कि भावावेश में। धीमे धीमे वह अपनी आत्मा उड़ेलते गए जब तक कि स्वयं को पूर्ण खाली न कर दिया, और रोए,

> ''पूरा हुआ: ओर सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए''
> (यूहन्ना १९:३०)।

याद रहें कि मसीह ने यह स्वेच्छा से किया। उन्होंने कहा,

> ''मैं अपना प्राण देता हूँ... ताकि मैं उसे फिर वापस ले सकुँए इससे मुझे कोई लेता नहीं है'' (यूहन्ना १०:१७)।

ये एक महत्वपूर्ण बात है। हमें यह समझना आवश्यक है कि यीशु किसी आकस्मिक रीति से नहीं मरा। वह जानबूझकर मृत्यु के पास गया; उसने जानबूझकर हमारे पापों की सजा के रूप में अपना प्राण दे दिया। ''उसने अपना प्राण मृत्यु के लिए उण्डेल दिया'' क्रूस पर, इसलिए नहीं कि उसे करना आवश्यक था, किंतु तुम्हारे लिए और मेरे लिए – जिन्होंने उस पर विश्वास किया उनके उद्धार के लिए। फिर, तुम उस पर विश्वास करो, और पीछे मत हटो। उस पर पूरा भरोसा करने के लिए अपने प्राण उण्डेल दो, फिर आप

देख पाएंगे कि क्यों उसे सम्मान और महिमा का ताज़ पहनाया गया है। उसे सम्मानित स्थान प्राप्त हुआ है क्योंकि वह

> ''अधर्मियों के लिए धर्मी, पापों के कारण एक बार दु:ख उठाया,
> ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुँचाए'' (१ पतरस ३:१८)।

क्रूस पर की मृत्यु, उसे शर्मिंदगी लायी, अब उसे इतना ही सम्मान और महिमा भी लायी कि उसने ''महान लोगों के संग भाग लिया,'' और ''सामर्थियों के संग लूट बाँट लेगा।'' इस तरह, परमेश्वर ने ''जाति जाति के लोगों को (तेरी) सम्पति होने के लिए दिया'' (भजनसंहिता २:८)। इस प्रकार, परमेश्वर ने कहा, ''मैं उसे दुष्ट आत्मा पर विजय, और लुटा, दूँगा...और इसमें उसकी शर्मजनक मृत्यु का इनाम होगा'' (Trapp, ibid.).

> ''उसने प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर, से उतारकर उनका
> खुल्लमखुल्ला की ध्वनि सुनाई'' (कुलुस्सियों २:१५)।

''द पावर्स ऑफ डेथ।'' गाईए!

> छ पावर्स ऑफ डेथ हेव डन धेयर वर्स्ट,
> बट क्राइस्ट धेयर लीजनस् हेथ डीसपर्सड:
> लेट शाऊटस् ऑफ हॉली जोय आउटबर्स्ट। हालेल्लुया!
> हालेल्लुया! हालेल्लुया! हालेल्लुया!
> ("The Strife is O'er" translated by Francis Pott, 1832-1909).

उनको सम्मान और महिमा मिली है क्योंकि पापियों को बचाने के लिए अपने प्राण मृत्यु में उण्डेल दिये है। आइए, उन पर विश्वास करें! आओ, उन पर पूर्ण रीति से भरोसा करें! आइए, और अभी उन पर विश्वास करें!

## ।।. दूसरा, वह अपराधियों के संग गिना गया।

> ''इस कारण मैं उसे महान् लोगों के संग भाग दूँगा, और वह
> सामर्थियों के संग लूट बाँट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण
> मृत्यु के लिए उण्डेल दिया: वह अपराधियों के संग गिना गया..
> .'' (यशायाह ५३:१२)।

मसीह ने अपराधियों के बीच जगह ली। पूरी सांसरिक सेवकाई की अवधि में, वह पापियों के संग था। यही तो फरिसियों की शिकायत थी। मज़ाक, में उसे पुकारते थे,

> ''चुंगी लेनेवालों का और पापियों का मित्र'' (लूका ७:३४)।

और, क्रूस पर की मृत्यु में भी, उसे दो अपराधियों के बीच वध किया गया।

> ''वह अपराधियों के संग गिना गया'' (यशायाह ५३:१२)।

अर्थात, उनके साथ ''गिनती'' *(Strong)* की गयी। ''नहीं कि वह अपराधी था, किंतु चोरों के साथ *जैसा क्रूस पर व्यवहार* किया गया'' (***Jamieson, Fausset and Brown,*** volume 2, p. 733). मरकुस की किताब कहती है,

> ''उन्होंने उसके साथ दो डाकू; एक उसकी दाहिनी, और एक उसकी बाई ओर क्रूस पर चढ़ाए। तब पवित्रशास्त्र का, वह वचन कि वह अपराधियों के संग गिना गया, पूरा हुआ'' (मरकूस १५:२७–२८)।

डॉ. यंग ने कहा था, ''ये दो डाकू सिर्फ पापी ही नहीं थे, वे सही में अपराधी थे'' (Edward J. Young, Ph.D., ***The Book of Isaiah,*** 1972, volume 3, p. 359). वे ''अपराधी'' थे। ग्रीक शब्द ''एनोमॉस,'' का अर्थ है जिस व्यक्ति ने *व्यवस्था का उल्लंघन* किया हो (वाइन)। इस प्रकार, मसीह को *सबसे बदतर* अपराधियों के संग गिना गया था; एना वोटरमन्स का खूबसूरत गाना कहता है,

> फोर ही सेवड ध वर्स्ट अमंग यु, व्हेन ही सेवड अ रेच लाइक मी।
> अेंड आय क्नो, यस्, आय क्नो, जीसस्' ब्लड केन मेक ध वाइलेस्ट सीनर क्लीन;
> अेंड आय क्नो, यस्, आय क्नो, जीसस्' ब्लड केन मेक ध वाइलेस्ट सीनर क्लीन;
> (''यस्, आय नो!'' बाई एना डबल्यु. वोटरमन्स, १९२०)।

लूका का सुसमाचार कहता है कि दो अपराधियों में से एक ने यीशु पर विश्वास किया और उद्धार पाया (लूका २३:३९–४३)। डॉ. जॉन आर. राईस ने कहा था, ''एक चोर जिसने उद्धार पाया कि सबसे घिनौना अपराधी निराश न हो जाए...'' (John R. Rice, D.D., ***The King of the Jews,*** Sword of the Lord, 1980 reprint, p. 475). डॉ. मेकजी ने कहा था,

> (दो अपराधियों) में क्या फर्क था? कुछ भी नहीं – दोनों ही चोर थे। फर्क यही बात का था कि एक चोर ने यीशु पर विश्वास किया था और दूसरे ने नहीं किया था। (J. Vernon McGee, Th.D., ***Thru the Bible,*** Thomas Nelson, 1983, volume IV, p. 354).

''वह अपराधियों के संग गिना गया।'' यह बताता है कि यीशु ने स्वेच्छा से अपने आपको *बदतर* अपराधियों के संग गिने जाने दिया। पापी बच सकते हैं क्योंकि उसे उनके संग गिना गया था। किन्तु बचने के लिए यीशु पर विश्वास करना आवश्यक है।

अब मसीह सम्मानित है क्योंकि उसने अपराधियों के साथ झुककर जगह बनायी थी, और उनके पाप ढोकर उनके लिए उद्धार संभव किया। इस प्रकार, उसे सम्मानित किया गया क्योंकि ''वह अपराधियों के संग गिना गया।'' ''यस, आय नो!'' मुखडा गाईए!

> एंड आय नो, यस् आय नो, जीसस ब्लड केन मेक ध वाइलेस्ट सीनर क्लीन;
> अेंड आय नो, यस आय नो, जीसस्' ब्लड केन मेक ध वाइलेस्ट सीनर क्लीन;
> (''यस, आय नो!'' बाई एना डबल्यु. वोटरमन, १९२०)।

## III. तीसरा, बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया।

खडे हो जायें और अंतिम शब्द ''बहुतों के पाप'' के साथ वचन को जोर से पढ़े ।

> ''इस कारण मैं उसे महान् लोगों के संग भाग दूँगा, और वह सामर्थियों के संग लूट बाँट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिए उण्डेल दिया: वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी *उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया...*'' (यशायाह ५३:१२)।

आप बैठ सकते है।

जैसे प्रेरित पौलुस ने बताया है, ''उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया।''

> ''वह आप ही हमारें पापों को अपनी देह पर लिये क्रूस पर चढ़ गया'' (१ पतरस २:२४)।

यही है उद्धार का स्थानापन्न। मसीह ने आपके पाप ''अपनी देह पर लिये'' क्रूस पर चढ़कर। आपके पाप की सज़ा उसने स्वयं ढोयी और आपकी जगह मृत्यु पायी। यीशु की स्थानापन्न मृत्यु के बिना पाप से छुटकारे का कोई सुसमाचार नहीं होता। अपराधियों के लिए स्थानापन्न की मृत्यु ही सुसमाचार का केंद्र और सार है। स्पर्जन ने कहा था,

> अब, इन तीन बातें – कि अपना प्राण मृत्यु के लिए उण्डेल दिया, अपराधियों के संग सजा भुगती; ताकि अपराधियों के संग गिना जाय, जैसे कि वह अगलबगल में अपराधियों के संग खड़ा रहा; और दूसरा, कि सहीं में उनके पाप ढोये...जो उसे अशुद्ध नहीं कर पाये परन्तु उससे लोगों के पाप धोने में सहायता मिली – ये तीन बातें ही प्रभु यीशु की महिमा का कारण है। परमेश्वर, इन तीन बातों के लिए और एक और बात, कि वह सामर्थियों के संग लूट बाँट लेगा, और उसे महान् लोगों के संग भाग दूँगा (C. H. Spurgeon, ***The Metropolitan Tabernacle Pulpit,*** Pilgrim Publications, 1975 reprint, volume XXXV, page 93).

''यस, आय नो!'' मुखडा गाईए!

> एंड आय नो, यस्, आय नो, जीसस्' ब्लड केन मेक ध वाइलेस्ट सीनर क्लीन;
> एंड आय नो, यस्, आय नो, जीसस्' ब्लड केन मेक ध वाइलेस्ट सीनर क्लीन;

## IV. चौथा, वह अपराधियों के लिए विनती करता है।

वचन इन शब्दों से पूरा होता है,

> ''और अपराधियों के लिये विनती करता है'' (यशायाह ५३:१२)।

क्रूस पर, मसीह ने अपराधियों के लिए प्रार्थना की, ''अपराधियों के लिए विनती करता है,'' जब वह रोया,

> ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर; क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे है'' (लूका २३:३४)।

इस प्रकार उसने अपराधियों के लिए क्रूस पर चढकर प्रार्थना की।

हालाकि, आज भी स्वर्ग में, यीशु अपराधियों के लिए प्रार्थना करता है,

> ''वह उनके (हमारे) लिए विनती करने के लिए सर्वदा जीवित है'' (इब्रानियों ७:२५)।

क्रूस पर मरते समय जैसे उसने अपराधियों के लिए विनती की। आज भी पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठकर अपराधियों के लिए प्रार्थना जारी है।

इन चारों बातों का ध्यान रहे कि यही कारण है कि अब पिता के दाहिने हाथ पर बैठकर, यीशु को महिमा में उठाया गया है। आज की मसीह की जो महिमा है उसके चारों कारण अपराधियों के उद्धार से जुड़े है!

> ''और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु सह ली। *इस लिए परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है:* ये सब यीशु के नाम वर घुटना टेकें...कि और परमेश्वर पिता कि महिमा के लिये, हर एक जीभ अंगीकर कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है'' (फिलिप्पियों २:८–११)।

परन्तु यह भी ध्यान रहे, कि यीशु के बचाव के सामर्थ्य के साथ साथ, वह उनका उद्धार नहीं करेगा जो सोचते है कि उन्हें उद्धार की आवश्यकता नहीं है। जैसे स्पर्जन ने कहा है,

> अगर (तुम्हारा) कोई अपराध नहीं जिससे वह (तुम्हें) शुद्ध न कर सकें। तो क्या वह करेगा?...तुम बहुत अच्छे हो, माननीय लोग हो, कि जिसने जीवन में कुछ गलत कार्य न किया हो; आपके लिये यीशु क्या है? सही है, आप अपने मार्ग पर जाओ और, अपने आप को संभालो...काश! किंतु ऐसे विचार मूर्खता हैं...अगर तुम अपने में झाँककर देखो, (तुम्हारे) हृदय गंदगी के कुएँ है। ओह, कि आप देख सको, और आपकी झूठी धार्मिकता को छोड़ दे! (किन्तु) आप नहीं कर पातें, तो आपके लिए यीशु के पास कुछ नहीं है वह अपनी महिमा अपराधियों से लेता है, न कि आप जैसे घमण्डी लोगों से। किन्तु आप दोषी हो, तो अपने दोष कबूल करिए, खुश होकर वे चार बातें याद करें जिसे यीशु ने की और वे सभी अपराधियों से जुडी हुई हैं, और इसलिए यह सभी अपराधियों से जुडी हुई हैं ताकि वह आज के दिन भी महिमा सम्मान और गरिमा का ताज़ पहनें

> है...(इसलिए) कितने दिल से (मैं तुम्हारे लिए विनती करता हूँ) कि तुम परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करो, जो देह में आया, खून बहाया और दोषी मनुष्यों के लिए मरा। अगर आप उस पर विश्वास करेंगे, तो वह आपको कभी धोखा नहीं देगा, परन्तु आपका बचना जरूरी है, और तुरंत बचना हमेशा के लिए (Spurgeon, ibid., page 95).

आमीन! ''यस्, आय नो!'' इस गीत को एक बार फिर गाएँ!

> एंड आय नो, यस्, आय नो, जीसस्' ब्लड केन मेक ध वाइलेस्ट सीनर क्लीन;
> एंड आय नो, यस्, आय नो, जीसस्' ब्लड केन मेक ध वाइलेस्ट सीनर क्लीन;
> (''यस्, आय नो!'' बाई एना डबल्यू. वोटरमन, १९२०)।

अगर आप यीशु द्वारा पाप की शुद्धि के बारे में कहना चाहते है तो कृपया सभागृह के पीछे स्थित जगह में जाईए। डॉ. कैगन आपको एकांत जगह में ले जायेंगे ताकि आप बात कर सकें। जल्दी जाइए, जब तक हम यह कोरस गाते हैं।

> एंड आय नो, यस्, आय नो, जीसस्' ब्लड केन मेक ध वाइलेस्ट सीनर्स क्लीन;
> एंड आय नो, यस्, आय नो, जीसस्' ब्लड केन मेक ध वाइलेस्ट सीनर्स क्लीन;

## रूपरेखा

# मसीह की महिमा का स्तोत्र

(यशायाह ५३ से चौदहवां संदेश)

डॉ. आर. एल. हायमर्स, जूनि. द्वारा

> ''इस कारण मैं उसे महान् लोगों के संग भाग दूँगा, और वह सामर्थियों के संग लूट बाँट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिए उण्डेल दिया: वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और अपराधियों के लिये विनती करता है'' (यशायाह ५३:१२)।

I. पहला, उसने अपना प्राण मृत्यु के लिए उण्डेल दिया, यशायाह ५३:१२अ; यूहन्ना १९:३०, १०:१७; १ पतरस ३:१८; भजनसंहिता २:८; कुलुस्सियों २:१५।

II. दूसरा, वह अपराधियों के संग गिना गया, यशायाह ५३:१२ब; लूका ७:३४; मरकूस १५:२७—२८; लूका २३:३९—४३।

III. तीसरा, बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, यशायाह ५३:१२क; १ पतरस २:२४।

IV. चौथा, वह अपराधियों के लिए विनती करता है, यशायाह ५३:१२ड; लूका २३:३४; इब्रानियों ७:२५; फिलिप्पियों २:८—११)।

# प्रभु यीशु में साधारण विश्वास रखना

**(यशायाह ५३ पर संदेश संख्या १५)**

# SIMPLE FAITH IN JESUS

**(SERMON NUMBER15 ON ISAIAH 53)**

द्वारा डॉ.आर.एल.हिमर्स
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

रविवार की सुबह, २१जुलाई, २०१३को लॉस ऐंजीलिस के दि बैपटिस्टटैबरनेकल में दिया गया संदेश
A sermon preached at the Baptist Tabernacle of Los Angeles
Lord's Day Morning, July 21, 2013

"और लोग उस से मुख फेर लेते थे।" (यशायाह ५३:३)

"हमने उससे अपना मुख फेर लिया था।" एक आधुनिक व्याख्याकार ने कहा था कि ये शब्द इजरायल के "उपेक्षित व्यवहार के लिये कहे गये हैं जिसने क्रूसित मसीह के साथ ऐसा सलूक किया और परमेश्वर के पुत्र के प्रति अपना आदर सम्मान व्यक्त किया।" उसने इस पद में दर्शाये गये व्यवहार के लिये केवल मसीह के समय के यहूदी लोगों को उत्तरदायी ठहराया। किंतु मुझे मूडी का लिखा यह कथन बहुत पसंद है, "बाईबल इन व्याख्याओं पर भी बहुत प्रकार डालती है।" नहीं, यह पद मसीह की केवल इजरायल द्वारा "उपेक्षा" किये जाने के संदर्भ में नहीं सोच सकता। इस पद के प्रारंभ से ही यह स्पष्ट कर दिया गया है। यह लिखा है, "वह तुच्छ जाना जाता और <u>मनुष्यों का</u> त्यागा हुआ था।" न केवल यहूदियों का त्यागा हुआ, किंतु सभी "मनुष्यों" द्वारा त्यागा हुआ था! "मनुष्यों का त्यागा हुआ" - यह केवल यहूदियों के लिये नहीं लिखा गया है। "बाईबल इन व्याख्याओं पर बहुत प्रकाश डालती है।"

लूथर ने "धर्मशास्त्र की समानांतर बातों" के उपर बोला है। इस महान सुधारक का कहना था कि हमें धर्मशास्त्र की धर्मशास्त्र से तुलना करनी चाहिये, ताकि यह पता चल सके कि बाईबल के अन्य हिस्सों में परमेश्वर ने इस विषय पर क्या कहा है। यशायाह ४९:७ में हम पढते हैं,

> "इस्राएल का छुड़ाने वाला और उसका पवित्र अर्थात यहावो यों कहता है, जो मनुष्यों से <u>तुच्छ जाना</u> जाता....." (यशायाह ४९:७)

इसलिये, यहां भी, हमें पढने को मिलता है कि यीशु को "मनुष्यों" ने त्यागा हुआ जाना, जो "एकमात्र पवित्र जन" था। नये नियम में स्वयं प्रभु यीशु बोले,

> "यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो, कि उस ने तुम से पहिले मुझ से भी बैर रखा।" (यूहन्ना १५:१८)

इन पदों से मालूम पडता है कि इस संसार के भटके हुये लोग मसीह से बहुत कटुता रखते थे और या तो नफरत करते थे, या उससे अपना मुख फेर लेते थे और उसके बारे में सोचते भी नहीं थे।

"और लोग उस से मुख फेर लेते थे।" (यशायाह५३:३)

लोग यीशु की ओर से कई  मायनों में मुख फेर लेते थे। यहां उनमें से तीन इस प्रकार है।

**१. प्रथम, यहां ऐसे लोग हैं जो मसीह का पूर्ण बहिष्कार करते हुये मुख फेर लेते हैं।**

मैं पास्टर वर्मब्रांड की पुस्तक, *टार्चर फॉर क्राईस्ट* पढ रहा हूं। मैं हर साल इस पुस्तक को पढता हूं। पास्टर वर्मब्रांड ने उन प्रताडनाओं का वर्णन किया है जो उन्हें मसीह से नफरत करने वाले कम्यूनिस्टों से मिली। उन्होंने कहा,

> मुझ पर लगातार बर्बरता से अत्याचार करना उन्होंने जारी रखा। जब मैं बेहोश हो जाता या इतना शिथिल हो जाता कि उनके अत्याचारों के बाद भी उनके अनुसार कुछ स्वीकारता नहीं, तो वे मुझे वापस अपनी कोठरी में भेज देते। जहां मैं अधमरा, बिना देखभाल के, जमीन पर गिरा रहता ताकि फिर मुझमें अगर थोडी ताकत आये तो वे मुझे फिर से ले जा सके। कई इस अवस्था में आकर दम तोड देते थे.....कई सालों तक, कई जेलों में रखकर,  उन्होंने मेरी पीठ की रीढ की हडडी की चार हडिडयां तोड डाली,  अन्य दूसरी हडिडयां भी तोडी। उन्होंने मुझे कई स्थानों पर गोद दिया। उन्होंने मेरे शरीर को कई जगह से जलाया और उसमें अठारह छेद किये.....
>
> हमें एक दिन में सत्रह घंटे बैठना होता था – कई सप्ताह तक, महिनों, सालों तक – सुनना पडता था
>
> कम्यूनिज्म अच्छा है!
> कम्यूनिज्म अच्छा है!
> कम्यूनिज्म अच्छा है!
> मसीहत मूर्खता है!
> मसीहत मूर्खता है!
> मसीहत मूर्खता है!
> इसे त्याग दो!
> इसे त्याग दो!
> इसे त्याग दो!
>
> (रिचर्ड वर्मब्रांड, टी एच डी,  *टॉर्चर फॉर क्राईस्ट*, लिविंग सेक्रीफाईज बुक्स, १९९८,  संस्करण, पेज ३८, ३९)

यह व्यक्ति ने कुछ बढा चढा कर नहीं कहा है। मैं उसे अच्छी तरह से जानता हूं।

कम्यूनिस्टों और दूसरे समाजवादियों ने मसीह के प्रति बहुत नफरत रखी। आज भी समाजवादी अमेरिका के अंदर यीशु और उसके अनुयायियों के उपर प्रहार करते रहते हैं – वाईट हाउस से लेकर स्कूल हाउस तक। मनुष्य ने उंचे पदों पर आसीन होकर उनका मुख मसीहा की ओर से फेर लिया और उसका पूर्ण बहिष्कार कर दिया। जो मसीह को छोटा बनाते और उसके अनुयायियों को भी तुच्छ समझते हैं वे इस पद में वर्णित लोगों के समान हैं,

"और लोग उस से मुख फेर लेते थे।" ( यशायाह५३:३)

**२. दूसरा, ऐसे भी लोग हैं जो मसीह से भिन्न होने के कारण अपना मुख फेर लेते हैं।**

निश्चत आज सुबह आप में से कुछ लोग इस तरह के होंगे! आप भले ही किसी मसीही जन को चोट पहुंचाने की नहीं सोचते होंगे, या ऐसा नहीं चिल्लाते होंगे कि "मसीहत मूर्खता है।'' जब मैंने आपको पास्टर वर्मब्रांड पर बीती यातनाओ की कहानी सुनाई तो आप के रोंगटे खडे हो गये होंगे। आप कह उठेंगे, "मैं तो कभी ऐसा करने की सोच भी नहीं सकता!" मैं बिल्कुल मानता हूं कि आप उन जानवरों के तुल्य कम्यूनिस्टों के व्यवहार करने जैसी कोई तकलीफ कभी इस्तेमान भी नहीं कर सकते। किंतु फिर भी.....! फिर भी.....! किंतु तौभी इस पद में वर्णित लोगों में आपका भी नाम आता है जब आप प्रभु यीशु के *प्रति अपना ठंडा रवैया रखते हैं।*

"और लोग उस से मुख फेर लेते थे।" (यशायाह५३:३)

आप केवल चर्च आते हैं और यहा बैठ जाते हैं। जब मैं आपको यीशु के बारे में बताता हूं तो आपकी आंखों में कोई चमक नहीं दिखाई देती। आपमें से कुछ तो आंखे बंद कर लेते हैं। आपमें से कितने तो अपने दिल भी बंद कर लेते हैं। कितना ठंडा रवैया है, आपका कि आप प्रभु यीशु से मुख फेर लेते हैं।

क्या आप जानते हैं कि एक प्रचारक भी ऐसा कर सकता है? जब मैं उत्तरी सेन फ्रांसिस्कों की सदर्न बैपटिस्ट सेमनरी में था, वहां टॉम फ्रेडरिक नाम का एक छात्र था। वह मेरा मित्र बन गया था। टॉम एक प्रचारक था। किंतु एक सुबह उसके संदेश ने मेरे मन को छेद दिया! वह इतना अधिक रोने लगा कि वह और अधिक प्रचार ही नहीं कर पाया। वह पुलपिट पर से उतर आया और आँल्टर पर झुक गया। वहां उसने मसीह के प्रति अपने प्रेम की कमी के लिये प्रायश्चित किया। तब, उसने स्तब्ध रह गई भीड के सामने, मसीह से अपने मुख फेरने की गलती करना बंद कर दिया। उसने मसीह पर विश्वास किया, और वास्तविक मसीही बन गया। वह एक बहुत दयालू पादरी बन गया। वह अन्य मित्रों को लेकर प्रत्येक गुरूवार की शाम को मेरे कमरे में प्रार्थना के लिये आने लगा। उसने मेरा बहुत साथ दिया जब बाईबल पर प्रहार करने वाले प्राध्यापकों का मैंने विरोध किया। जब सेमनरी के अध्यक्ष का हमने दरवाजे पर सामना किया तब भी वह मेरे साथ गया। उसने सदैव मेरा सहयोग किया भले ही लोग उसे "हिमर्स का दीवाना" कहकर चिढाने लगे। वह भटके हुये दक्षिणी बैपटिस्ट प्रचारक के स्थान पर, एक सच्चा प्रचारक बन गया। जब उसने ट्रेनिंग के दौरान ही यीशु से मुख फेरना छोड दिया तब ही उसका नया जन्म हो गया।

अभी कुछ समय पहले ही टॉम मर गया। मैंने उसकी पत्नी को कुछ पैसा भेज दिया था। मेरे पास उसके प्रति सदभावना दिखाने का यही एक तरीका था जो उसने वर्ष १९७० के प्रारंभ में गोल्डन गेट बैपटिस्ट थियोलॉजीकल सेमिनरी की लडाई में मेरा साथ दिया ताकि मैं बाईबल के समर्थन की लडाई जीत सकूं। और मैं परमेश्वर का बहुत धन्यवादी हूं कि उन्होंने टॉम का मन यीशु के लिये खोला, जब वह एक रविवार की सुबह ट्रेनिंग के दौरान प्रचार कर रहा था।

किसी ने कहा था, "डॉ हिमर्स! क्या आप नहीं चाहते कि मैं टॉम फ्रेडरिक के समान नया जन्म पाउं, क्या आप चाहते हैं?" परमेश्वर मेरी सहायता करे! मैं तो स्वर्गदूतों की उपस्थिति में सदैव आनंद बनाउंगा अगर आपमें से कुछ लोग टॉम के समान उसके आधे भी हो जायें! आप में से कुछ जवान लोग जो हर हफते आ आकर बिना कोई मतलब रखे, प्रसुप्त दशा में, यीशु से कोई लेना देना ही न हो ऐसे बैठे रहते हैं – मैं परमेश्वर से मांगता हूं कि आप टॉम का थोडा सा भी अंश हो जाये! सोचिये जरा!

अब सोच कर देखिये – अगर आप १९७१ या १९७२ में गोल्डन गेट सेमनरी में होते? कि आप दूसरे चर्च से होते और मैं आपका पास्टर नहीं होता? अब सोच कर देखिये! क्या आपने मेरा साथ दिया होता जब बाईबल पर प्रहार करने वाले प्राफेसर्स का मैं विरोध करता? अब सोच कर देखिये! क्या आपने मेरा साथ दिया होता? या आप ऐसे ही "ठंडे" रवैये के लोग बने रहते और विवाद से परे रहते? सोच कर देखिये!

अब, अगर आप अपने प्रति जरा से भी ईमानदार है, तो आप को यह मानना होगा कि आप यीशु से मुख फेरते हैं। उसके प्रति आपका रवैया ठंडा है। आप तो अपनी डिग्री लेकर यहां से निकलना चाहते हैं ताकि आप पर "हिमर्स के दीवाने," होने का ठप्पा न लगे? आप एकाएक मसीह के लिये परिवर्तित नहीं हो सकते, और मसीह के लिये अति उत्साही नहीं बन सकते, क्या आप बनेंगे?सोच कर देखिये! मैं तो यह मानता हूं कि आप जो पूछताछ कमरे में से आगे पीछे होते रहते हैं तो आप तो मेरे साथ उस उदारवादी सेमनरी में कतई साथ नहीं होते। आप ऐसे ही ठंडे रवैये के लोग बने रहते जैसे आप आज हैं! आप की गिनती उन्हीं लोगों में होती जिनके लिये कहा गया था,

"और लोग उस से मुख फेर लेते थे।" (यशायाह५३:३)

### ३. तीसरा, ऐसे भी लोग हैं जो मसीह की उपेक्षा करने के द्वारा उससे मुख फेर लेते हैं।

आपने लंबे समय तक यीशु से मुख फेरे रखा। आपको परवाह नहीं है कि मैं यीशु का प्रचार करूं या न करूं। अगर मैं राजनीति पर प्रचार करूंगा तो आप कुर्सी पर आगे झुककर एक एक शब्द सुनेंगे। जिस दिन मैं बाईबल से भविष्यवाणी का प्रचार करता हूं आप मेरे संदेश पर पूरा ध्यान देंगे। कुछ सप्ताह पहले जब मैंने स्वर्ग पर बोला था तो आपने पूरी तन्मयता से, ध्यान दे देकर सुना था, क्योंकि यह आपके लिये एक नया विषय था। किंतु जब मैं फिर से सुसमाचार सुनाने लगा, तो आपकी आंखों की चमक गायब हो गई। आपने यीशु में रूचि ही खो दी! बोलिये क्या ऐसा नहीं हुआ? बोलिये आपने ऐसा किया या नहीं?

आप युवा लोग कॉलेज की पढाई में खूब समय और उर्जा खर्च करते हैं। आप घंटो तक अध्ययन करते हैं और अंत में अपनी कक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। आप जल्दी उठते हैं और पढते हैं आप देर तक जागते हैं और पढते हैं। मैं खुश हूं कि आप अपनी कार्य कुशलता में पक्का होना चाहते हैं ताकि आप का भविष्य अच्छा हो। मैं स्कूल में आपके द्वारा खूब मेहनत करने के लिये बधाई देता हूं। किंतु आप कभी बाईबल अध्ययन के लिये एक घंटे से भी ज्यादा नहीं रूके, या संदेश पढने के लिये, जो आपको प्रति रविवार छपे हुये पन्ने आपके हाथ में सौंपे जाते हैं। आप मसीह के बारे में पढने के लिये कभी जल्दी उठने की सोची भी नहीं होगी, जो आपकी पापी आत्मा को बचाने के लिये मरा। इस दुनियां में मसीह को छोडकर आप सब पा लेना चाहते हो अच्छा पैसा, मंहगा सामान और हर वह बाजार की चीज जो प्रतिदिन दुनिया में नई उतरती हैं, किंतु जो आपके लिये स्वर्ग में परमेश्वर से बिनती करता है वह आपके लिये इतना महत्व नहीं रखता।

यहां तक कि, चर्च में भी जब मैं संदेश देता हूं यीशु के बारे में बताता हूं, तो आपको दिमाग भटकने लगता है आप और दूसरी बातों में मन लगाने लगते हैं। जब आप पूछताछ कक्ष में आते हैं तब भी आप अपनी बात ज्यादा करते हैं, यीशु की बात करते हुये मैंने आपको नहीं पाया। आप अपनी हांकते हैं, यीशु के लिये कुछ नहीं कहते हैं। मैं देखता हूं कि आप अपने सिद्धांत और बाईबल के पदों को लेकर आते हैं, किंतु कभी आपके मुख से मैंने यीशु नाम व्यक्ति की बातें नहीं सुनी! वह आपके विचारों में ही नहीं है। ज्यादातर वक्त आप केवल यह बताते हो कि आपको कैसा महसूस होता है – या नहीं होता! आप ऐसी किसी भावना से आश्वस्त होना चाहते हैं, किंतु मसीहा की बात तौभी नहीं करते; जबकि वही एकमात्र जन है जो आपका उद्धार पाना सुनिश्चत करता है! आपमें से कुछ तो कहेंगे, "मेरा तो दिल टूटा हुआ नहीं है।" मैं आपको कहता हूं, "टूटे हुए दिल को मत देखो, यीशु की ओर देखो!" किंतु जब मैं यीशु का नाम लेता हूं तो आपकी आंखों में पानी आ जाता है, आप सोचते हैं, "मुझे कोई सहारा देने वाला चाहिये। आप भावुकतावश <u>बचाये जाने</u> को महसूस करते हैं!" मैं कहता हूं, "देखिये, आपको केवल यीशु चाहिये।" किंतु जैसे ही मैं यीशु का नाम लेता हूं आप उसमें रूचि खो देते हैं। मैं कहता हूं, "यीशु की ओर ताकिये, क्योंकि क्रूस पर उसका रक्त आपके लिये बहा।" किंतु आप घूम फिर कर अपने आप और अपनी समस्या पर केंदित हो जाते हैं। आप स्वयं को राहत देने वाली <u>भावना</u> को तलाश रहे हैं! आप अपना ध्यान स्वयं से हटाकर <u>यीशु</u> की तरफ करना ही नहीं चाहते! मैं भविष्यवक्ता के कथन को यहां लिख रहा हूं, "जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो" (यशायाह ५५:६) आप मसीह को ढूंढने के स्थान पर आपको आराम देने वाली किसी भावना को अपने अंदर महसूस करना चाहते हैं, मसीह जो आपको प्यार करता है, आपके अंदर उसके लिये स्थान नहीं है!

"और लोग उस से मुख फेर लेते थे।" (यशायाह५३:३)

मैं आपसे निवेदन करता हूं मसीह से मुख मत फेरिये। जिस क्षण यीशु की ओर मुडेंगे, आपको बचा लेगा। आपको शायद वैसा "महसूस" न हो कि आप बचा लिये गये हैं। जिस दिन मुझे यीशु ने बचाया था, मुझे ऐसा "लगा" ही नहीं कि मैं बचाया गया। कितने महिनों तक मैं समझ ही नहीं पाया कि मैं बचा लिया गया हूं। बस जो मैं जानता हूं कि मैंने यीशु को पाया! मैं

पहले भी यीशु पर विश्वास करता था, किंतु उस दिन – मैं सिर्फ इतना कह सकता हूं – यीशु वहां था! यह बहुत ही पुरानी आस्था लगती है, किंतु यह बहुत साधारण सी, बहुत ही पुरानी बात है – किंतु यीशु से मेरी मुलाकात हो गई!

पास्टर वर्मब्रांड ने कम्यूनिस्टों द्वारा कई मसीहियों को यातना देते हुये देखा है जब वह प्रचार करने के लिये जेल में बंद थे। उन्होंने कई कैदियों को यीशु पर भरोसा रखते हुये देखा, और यहां तक कि गार्डस ने भी, यीशु पर विश्वास किया। पास्टर वर्मब्रांड ने कहा था,

> एक बार एक व्यक्ति विश्वास करने के स्तर स्तर तक पहुंच जाता है *...भले ही वह बहुत पुरानी सी आस्था लगे* – किंतु यह आस्था बढने लगती है। हम निश्चत जानते हैं कि यह जीतेगी क्योंकि हमने भूमिगत चर्च के रूप में इसे बार बार जीतते देखा है। मसीह कम्यूनिस्टों को और "विश्वास के शत्रुओं" से भी प्रेम रखता है। उन्हे भी मसीह के लिये जीता जा सकता है और जीता जाना आवश्यक है। (वर्मब्रांड, उक्त संदर्भित, पेज ११५)

वह चोर जो यीशु के बाजू क्रूस पर लटका था यह जमीन छोडने के कुछ मिनटों पूर्व ही बचाया गया था। वह तो कुछ भी नहीं जानता था। उसका विश्वास तो बहुत "पुराना" था, अगर हम पास्टर वर्मब्रांड के शब्द का प्रयोग करें। किंतु वह उसी क्षण बचाया गया जब उसके दिल ने यीशु पर विश्वास किया। और प्यारे मसीहा ने उससे कहा, "तू आज ही मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा" (लूका २३:४३) ऐसा लगता है आज सुबह कोई तो होगा जो यीशु पर उसी ईमानदारी से विश्वास करे जैसा उस चोर ने किया था। यह बहुत ही "प्राचीन" विश्वास दिखता है, किंतु अगर आपका जरा सा भी भरोसा यीशु पर हो, आप अपने पर से ध्यान हटा लें, केवल यह माने कि यीशु ही मेरे लिये अंतिम हल है, बिना किसी जांच के, यीशु आपको बचा लेगा। बहुत ही सादा, कमजोर सा, "पुराना सा," बच्चों जैसा विश्वास आपको यीशु में होना चाहिये – एक इंसान को बस इतना ही करना है। आप अपनी तरफ भी मत देखो कि, आप क्या हो आपका कोई व्यक्तित्व है। ऐसी किसी भावना को मत खोजो। केवल यीशु की ओर देखो और उस पर निर्भर हो जाओ। उसके साथ उलझो मत। प्रश्न मत करो। विश्लेषण मत करो। केवल यीशु पर विश्वास करो और उसे वैसा ही बने रहने दो। बाकि का सारा काम यीशु करेगा। यहां तक कि जब आप सोते भी रहेंगे, यह विश्वास का बीज जो यीशु के उपर आपके मन में बैठ गया है बढने लगेगा। किंतु स्वयं यीशु पर विश्वास लाना होगा – भले ही यह सादा सा दिखे, हल्की बात लगे, इसमें कोई भव्यता, शान ओ शौकत न दिखे। केवल इतना सा विश्वास यीशु पर करना है। आपको उस तक पहुंचना है, और वहीं पर स्वयं को छोड देना है, अपनी भावनायें संतुष्ट हुयी की नहीं यह नहीं सोचना है। यीशु पर छोड दीजिये। तब, भले ही आप रात में सोते भी रहेंगे, यह विश्वास का बीज, जैसा पास्टर वर्मब्रांड ने कहा, "पल्लवित हो बढता रहेगा।" यीशु पर एक बहुत कमजोर, पुरानी, कांपती हुई आस्था रखना है यही एक इंसान को चाहिये! देखिये मि गिफिथ ने कौनसा गीत गाया था। यह गीत बिना भावुक हुये बस एक सादी सी, कांपती सी आस्था यीशु पर रखने के लिये कहता है!

मेरी आत्मा रात है, मेरा दिल कडा है –
मैं देख नहीं पाता, मैं महसूस नहीं कर पाता;
कहीं रोशनी, कहां जीवन, मुझे तो जाना होगा
यीशु पर साधारण सा भरोसा करना होगा।
("इन जीजस" द्वारा जेम्स प्राक्टर, १९१३)

अगर आप चाहेंगे तो हम आपके लिये प्रार्थना करेंगे। आप आपको सच्चे मसीही बनने में सहायता करेंगे अपना स्थान छोडकर ऑडिटोरियम के पीछे आ जाइये। डॉ कैगन आप को शांत स्थान पर प्रार्थना के लिये ले जायेंगे। आप जाइये जब तक मैं फिर यह गीत गाता हूं।

मेरे हजारो प्रयास विफल हुये
मेरे भय को मैं दबाता हूं, मेरी आशा को मै उभारता हूं;
किंतु मुझे क्या चाहिये, बाईबल यह बताती है,
हमेशा ही, केवल यीशु।

मेरी आत्मा रात है, मेरा दिल कडा है –
मैं देख नहीं पाता, मैं महसूस नहीं कर पाता;
कहीं रोशनी, कहां जीवन, मुझे तो जाना होगा
यीशु पर साधारण सा भरोसा करना होगा।
("इन जीजस" द्वारा जेम्स प्राक्टर, १९१३)

डॉ चान, निवेदन है कि आइये और जिन्होंने अपने मन को खोला है, उनके लिये प्रार्थना कीजिए।

# रूपरेखा

## प्रभु यीशु में साधारण विश्वास रखना

**(यशायाह ५३ पर संदेश संख्या १५)**

द्वारा डॉ.आर.एल.हिमर्स
by Dr. R. L. Hymers, Jr.

"और लोग उस से मुख फेर लेते थे।" (यशायाह ५३:३)

(यशायाह४९:७; यूहन्ना१५:१८)

१. प्रथम, यहां ऐसे लोग हैं जो मसीह का पूर्ण बहिष्कार करते हुये
मुख फेर लेते हैं, यशायाह ५३:३
२. दूसरा, ऐसे भी लोग हैं जो मसीह से भिन्न होने के कारण अपना
मुख फेर लेते हैं, यशायाह ५३:३
३. तीसरा, ऐसे भी लोग हैं जो मसीह की उपेक्षा करने के द्वारा उससे
मुख फेर लेते हैं, यशायाह ५५:६; ५३:३; लूका २३:४३